मार्तण्ड

इतिहास और मिथक



प्रकाशक

मार्तण्ड तीर्थ ट्रस्ट

मार्तण्ड (मट्टन) कश्मीर

मार्तण्ड सूर्य भवन, पलौड़ा, जम्मू

मार्तण्ड़
इतिहास और मिथक

लेखक:-

हरि कृष्ण सिद्धा

प्रकाशक:-

मार्तण्ड़ तीर्थ ट्रस्ट,
मार्तण्ड़ मट्टन कश्मीर।

संपर्क :-

हरि कृष्ण सिद्धा मकान नं0:-122 वासुकी
विहार पलौड़ा, जम्मू ।
जम्मू-कश्मीर राज्य।
दूरभाष : 0191-2596767, 9469050583

प्रकाशक :- मार्तण्ड़ तीर्थ ट्रस्ट
मट्टन कश्मीर।

कार्यालय (जम्मू) :- मार्तण्ड़ सूर्य भवन
पलौड़ा जम्मू।

प्रथम संस्करण - मई 2005 ईस्वी ,
द्वितीय संस्करण - जून 2009 ईस्वी।

जय मार्तण्ड

ॐ जय मार्तण्ड़ देवा ,स्वामी जय मार्तण्ड़ देवा
उन के कष्ट मिटावे , जो भक्त करे सेवा
ॐ जय मार्तण्ड़ देवा ।।

श्याम वर्ण के तन पर , पीताम्बर सोहे
स्वामी पीताम्बर सोहे
ऋषिश्वर,मुनीश्वर-ध्यावे योगने करे सेवा
ॐ जय मार्तण्ड़ देवा ।।

मृत अण्ड़कार को विष्णु ने जीवनदान दिया
स्वामी जीवनदान दिया
विमल कमल दो कुण्ड़ ही मार्तण्ड़ कहलाया
ॐ जय मार्तण्ड़ देवा ।।

तेरहवां सूर्य कहलाये , भोग भरे न्यारे
स्वामी भोग भरे न्यारे
अपने सेवक जन को सुख सम्पति वारे
ॐ जय मार्तण्ड़ देवा ।।

तुम हो तीन स्वरूपा , चार भुजाधारी
स्वामी चार भुजाधारी
साठ हैं अंग तुम्हारे , शेष कमलधारी
ॐ जय मार्तण्ड़ देवा ।।

भूचर , जलचर ,खेचर ,सब जीवों के प्राणपति
स्वामी जीवों के प्राणपति

तुम बिन मोक्ष मिले ना,न तुम बिन सद्गति
ॐ जय मार्तण्ड देवा ।।

प्रत्यक्ष देव तुम्ही हो , तुम हो देव महान
स्वामी तुम हो देव महान
नाम असंख्य तुम्हारे , परि तव तुम गुणवान
ॐ जय मार्तण्ड देवा ।।

तीर्थ राज तुम्ही हो , तुम हो जगत पिता
स्वामी तुम हो जगत पिता
अपने भक्त जनों का सुख सम्पति दाता
ॐ जय मार्तण्ड देवा ।।

सप्त अश्व के रथ पर , घूमे अष्ट दिशा
स्वामी घूमे अष्ट दिशा
सारथी अरूण तुम्हारा, दासी तेरी निशा
ॐ जय मार्तण्ड देवा ।।

आरती देव तुम्हारी ,जो निस दिन गाता
स्वामी जो निस दिन गाता
कहे जयकृष्ण हरिधर ,सहज मुक्ति पाता
ॐ जय मार्तण्ड देवा ।।

मार्तण्ड़ इतिहास और मिथक की यह पुस्तक रूपी–कुसुम पुज्यणीय दादा जी स्व० दीना नाथ सिद्धा के चरणों में सभक्ति श्रद्धापूर्वक समर्पित है। जिन की स्नेहधारा का यह प्रसाद है।



स्वर्गीय दीना नाथ सिद्धा

1-बलिदान

मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ,
येम सिरी क्षेत्रस छेपि दयुत पान ।
कअति मशि कंअसि अमसुंद बलिदान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

सफेद सोरूय पोशाक सफेद दस्तार
सफेद दअर सफेद फेरन ओस शूभदार
ऋषि पुत्र हयू सु ओस बासान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

धअनि सेद्धि धअनि काक दीना नाथ
प्रथ रिचि़ कामि सु दिवान ओस साथ
धर्मिच कामि सु ब्रोंठ ओस दवान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

अदालतन मंज़ छा गछ़ान केस हल
स्योद - सादि ओसुय सु ज़ानिहे नि छ़ल
होलि महाराज़ि अअसिस बनावान मार्तण्ड़
तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

अअकि लअटि होलि दोह गोव नाराज़
वोनुन बि नः बनहोव वअज़ होलि महाराज़
हूल ना गिन्दव छुस बि मुस्लमान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

अगर वुछहे कंअसि तअमीर करान
खेन चेन कअम कार आसुस मशान
दअसलन पअति पअति ओसुय पकान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

राज़सी खेन चेन राज़सी पौशाक
चोखतस लोर ओस खेयहे नि हाख
पोज़ वननस ओस नि ज़ाह मन्दछान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

मटन नागिच अअसिस सेठा माय
प्रथ जायि प्रथ कंअसि दिवान ओस राय
जय कृष्ण 'बब' ओस ख्यअली जवान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

नागिबल फसाद वोथ ब्रोंठ सुय द्राव
थानि वाल्यव ल्यूख तअमसुन्द नाव
मा लड़तव ओसुख समझावान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

दुकानस पैठ पुलीस हेथ आव समन
कागज़स नज़रा दिथ अअम 'बबन'
दस्तखत करिथ अअसस दित्युन ठान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।
वहकि घअटि पक्ष त्रेय त्रअविन प्राण
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।
कअति मशि कंअसि अमसुंद बलिदान
मार्तण्ड़ तीर्थुक सु टोठ संतान ।।

दो शब्द

मार्तण्ड़ इतिहास मार्तण्ड़ क्षेत्र तथा इस के आसपास के सारे इलाके की प्राचीन कथाएं हैं। जो जनमानस के मस्तिष्क में क्षत-विक्षत अवस्था में विद्यमान हैं। अत: उस प्राचीन निधि को युवावर्ग के समक्ष रख कर उन्हें उस से अवगत कराने का प्रयास मैंने "मार्तण्ड़ इतिहास" द्वारा किया है। इस प्रयास में मैं कितना सफल हुआ इस का फैसला पाठक इस पुस्तक को पढ़ने के बाद ही कर सकते है।

बाल्यावस्था से ही मार्तण्ड़ के हर स्थान ने मुझे बहुत आकर्षित करके नई नई प्रेरणाएं दी हैं। "मार्तण्ड़ इतिहास और मिथक" उन्हीं प्रेरणाओं का प्रतिफल है। सदियों सें चले आ रहे मार्तण्ड़ तीर्थ, भंगशिखा, गंगानन्द, भीमाभगवती, गौतमनाग, कन्निगेंश्वर(क्रंगुस),मार्तण्ड़ मन्दिर, अनन्तनाग इत्यादि कितने ही पवित्र स्थान इस क्षेत्र में विद्यमान है। यहां के कण

कण में इतिहास रचा हुआ है परन्तु बड़े बड़े

धुरन्धर विद्वानों का इस क्षेत्र में अस्तित्व होते हुए भी केवल दो तीन विद्वानों को छोड़ कर किसी मान्यवर विद्वान ने लोगों को इस तीर्थराज की महिमा से अवगत कराने में लेखनी उठाने का साहस नहीं किया। अत: अधिकांश लोग मार्तण्ड तीर्थ की महिमा का बखान करते समय इतना सत्य से दूर पहुंच जाते है कई लोग बे सिर पांव की कथाएं जोड़कर दूसरों को प्रभावित करने का असफल प्रयास करते हैं । इस क्षेत्र में प्रौढ़ विद्वानों की कमी नहीं हैं परन्तु वे अपना ज्ञान बांटने में कंजूसी दिखाते हैं । अत: ऐसे प्रोढ़ विद्वानों के सताकाल में मेरा यह प्रयास उपहासपद ही होगा। अल्पज्ञ होते हुए भी मैंने यथामति मां भगशिखा की कृपा से प्रेरित होकर "मार्तण्ड" के विषय में लिखने का साहस किया है। परन्तु यह भाव मन में बार बार उठ रहा है कि इतने महान पंड़ितों के सामने मेरा यह प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने जैसा ही होगा। अत: पाठकगण से निवेदन है कि वे त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर मेरे

सेवारूप परिश्रम को ध्यान में रख कर मेरी साधना को सफल कर देने में ज़रा भी संकोच न करे। मुझे प्रसन्नता होगी यदि वे महानुभाव अपने सुझावों से मुझे अवगत करे। क्योंकि:

'गच्छत: स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादत: ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जना: ।।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हर दौर में मार्तण्ड़ क्षेत्र सूर्य की भांति चमकता रहा है। यही क्षेत्र कश्मीर को भारत के अन्य क्षेत्रों से धार्मिक सूत्र में बान्धे हुए है। हिन्दू-मुस्लिम एकता का सबसे बड़ा उदाहरण मार्तण्ड़ क्षेत्र ही है। जिस का प्रत्यक्षरूप श्री अमर नाथजी की यात्रा के दौरान देखा जा सकता है। एम. ए. स्टेन तथा लारेन्स ने अपनी यात्राओं के दौरान 1890 ई0 के आसपास इस तीर्थ के दर्शन करके अपनी पुस्तकों में इस तीर्थ की बड़ी प्रशंसा की हैं। और इसे कश्मीर के सभी धार्मिक स्थलों का सूत्रधार माना है। इस में कोई संदेह नहीं कि इस देव भूमि कश्मीर में केवल मार्तण्ड़ को ही तीर्थराज की उपाधि प्राप्त है।

इस पुस्तक के प्रकाशित करने तथा समय समय पर मुझे उत्साहित करने में कई महानुभावों ने योगदान दिया हैं। उन सभी महानुभावों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं । जिन के सहयोग से मैं अपने अल्पज्ञान को पुस्तक का रुप दे सका।

इन के अतिरिक्त श्री एम.के. संतोषी तथा श्री अशोक कुमार सिद्धा का मैं कृतज्ञ हॅू जिन के अमूल्य सुझावों ने समय समय पर प्रोत्साहित किया। आशा है, कि 'मार्तण्ड़ इतिहास' यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी । मेरी प्रकाशित पुस्तकें 'चन्दनहार' चन्दनमाल, चन्दनकुल, वाख त् वचन, कबीरदास के दोहो का कश्मीरी अनुवाद, तथा मार्तण्ड़ इतिहास (हिन्दी एवं अग्रेजी में) पाठकों ने पसन्द की हैं उन के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं। मुझे विश्वास है कि आप लोग सदा मेरा प्रोहत्साहन करते रहेगें।

हरि कृष्ण सिद्धा
122-वासुकी विहार
पलौड़ा जम्मू ।

अनुक्रम

कश्मीर

कश्मीर का इतिहास बहुत ही प्राचीन है जिस का अनुमान यहां पर पाये गये प्राचीन भवनों, खण्डहरों, स्तूपों, विहारों तथा मन्दिरों सें लगाया जा सकता हैं। यद्यापि कश्मीर के प्राचीन इतिहास का लिखित वृतान्त बहुत ही कम है ; फिर भी नीलमत पुराण, कल्हण की राजतरंगणी, चीनी यात्री फाइयान और ह्येवनसांग के सफरनामों तथा स्टेन जैसे कई विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें इस प्रदेश के विषय में जानने के लिए पर्याप्त हैं। कल्हण द्वारा लिखित ग्रन्थ राजतरंगणी तीन हज़ार वर्ष से भी पुराना इतिहास दर्शाता है । इस लम्बे समय के दौरान कश्मीर बहुत सारे राजाओं के आधीन रहा परन्तु उनमें से अधिकतर राजे कमज़ोर, स्वार्थी, सत्ता के लोभी तथा इस धरती पर बोझ ही थे। जिन के कारण यहां के निवासियों को समय समय पर अनगिनत

कष्ट झेलने पड़े। कश्मीर को ऋषि भूमि तथा तपो भूमि माना जाता है । इस में कोई संदेह नहीं कि यह भूमि आज भी संसार के श्रेष्टतम स्थानों में श्रेष्ट है । एक बार इस भूमि के दर्शन करने के पश्चात कोई भी मनुष्य यह कहे बिना नहीं रह सकता कि यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है वह यहीं है फिर भी समय समय पर कई राजाओं ने स्थान स्थान पर समय के अनुसार मन्दिरों, बागों, भवनों, जलाशयों का निर्माण करा कर इस की सुन्दरता में चार चाँद लगवाये।

यह सर्वविदित है कि कश्मीर को कश्यप ऋषि ने बसाया है । यह देश 'सतीदेश' के नाम से जाना जाता था । नीलमत पुराण में इस का उल्लेख है यहां एक बहुत बड़ी झील थी जिस को सतीसर के नाम से जाना जाता था इसी झील के ऊपरी भूभाग में यहां के मूल निवासी ऋषि, मुनि, नाग जप तप साधना में लीन रहते थे । कुछ समय के पश्चात एक राक्षस पुत्र

'जलोद्भव' का जन्म यहां हुआ । बाल्यकाल में ही उसने ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त किया कि जल में कोई भी उसे किसी प्रकार की क्षति नहीं पँहुचा सके गा । वर प्राप्त होने के पश्चात वह क्रूर तथा घमण्डी बन गया । अतः वह ऋषियों मुनियों तथा नागरिकों को सताने और मारने लगा ; लोगों को सताने के बाद वह सतीसर में छुप जाता था परन्तु हर कष्ट तथा कष्टदायक का अन्त अवश्य होता है। जलोद्भव के आतंक से हर ओर त्राहि त्राहि मचने लगी ।

नीलनाग ; जिस ने संग्रह के पुत्र जलोद्भव का पालन-पोषण किया था उस के इस व्यवहार से रुष्ट हुआ अतः उसने अपने परम पिता कश्यप ऋषि जी से जलराक्षस से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थणा की। कश्यप ऋषि ने अपने तप से विष्णु भगवान का आवाहन किया तथा इस विपदा का निवारण करने की विनती की । भगवान विष्णु उस स्थान पर गये जहां दानव था परन्तु भगवान को देख कर वह राक्षस पानी

के भीतर छुप गया क्योंकि उसे मालूम था कि पानी के भीतर वह पूरी तरह सुरक्षित था वह सतीसर के भीतरी भाग मे बैठ गया । भगवान विष्णु तथा उन के साथ आये हुए देवताओं ने सतीसर के पानी को निकालकर जलराक्षस को बाहर निकालने की योजना बनाई जिस के लिए सतीसर के अन्तिम छोर के पर्वत को भगवान विष्णु ने अपने चक्र से काट दिया और सतीसर का सारा पानी निकाल दिया गया । पानी बहुत ही वेग के साथ बहते हुए अपना मार्ग बनाते हुए जंगलों तथा बस्तियों को ढ़ाहते हुए आगे बढ़ता रहा । इतिहास का सर्वेक्षण करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि हो न हो यह अवश्य ही वही समय रहा होगा जब उतरी भारत में सिन्धु सभ्यता के लोग रहते थे और मोहनजोदाड़ो और हड़प्पा नगरों के अकस्मात लुप्त होने का एक मात्र कारण सतीसर ही रहा होगा क्योंकि कश्मीर की भूपृष्ट भाग का सर्वेक्षण, अध्ययन तथा विश्लेषण करने पर यह तथ्य उजागर होता है कि यह भूमि ह.जारों साल पहले पानी के भीतर रही है तथा किसी

शक्ति के कारण ही पर्वत का कटाव करके इस देव भूमि की उत्पति सम्भव हो सकी है । अत: पानी के बह जाने के कारण जलोद्भव अपने को अधिक समय तक छुपा न सका इस लिए उस ने अपनी माया से चारों ओर घनघोर घटा फैला कर अन्धकार कर दिया परन्तु तभी ब्रह्मा जी तथा शिव जी सूर्य और चन्द्रमा को अपने हाथों में लिए प्रकट हुए जिस के कारण वह जल राक्षस अपने आप को छुपा न सका । भगवान विष्णु चक्र से उस पर वार करने ही वाले थे कि पार्वती मैना का रुप धारण करके चोंच में एक बहुत बड़ा पत्थर लेकर वहां उड़ कर आई उसने वह पत्थर राक्षस के ऊपर फैंक दिया जिस के कारण जलोद्भव का अन्त हुआ । वह पत्थर हारी पर्वत नाम से आजकल भी श्रीनगर में विद्यमान है तथा मां शारिका का मन्दिर उसी पर्वत के शिखर पर विद्यमान है। कश्मीरी भाषा में मैना को हारी कहते है तथा मां शारिका पार्वती का ही रुप है। इसी कारण मां शारिका का यह मन्दिर इस प्रदेश के सर्व श्रेष्ट धार्मिक स्थलों में एक माना

जाता है ।

त्रिदेव ने कश्यप ऋषि को इस भूभाग को मनुष्यों के रहने योग्य बना कर बसाने का दायत्व प्रधान किया । कश्यप ऋषि के योगदान के कारण ही इस देश का नाम 'कश्यपमार' रखा गया जो समय के साथ साथ बदल कर 'कश्मीर' बन गया । सतीसर से पानी निकलने के बाद जब यह धरती लोगों के बसने योग्य बनी तो कश्मीर में नागों और पिशाचों के अतिरिक्त और कई जातियाँ कबीले आकर बस गए जिन में खस, डार, भोट, दमार, निशाद और तन्त्रंग इत्यादि विशेष जातियां थी नाग तथा पिशाच जातियाँ यहां पहले से ही विद्यमान थी जिस का उल्लेख पुराणों में दिया गया है। यही कारण है कि कश्मीर के उतर में अधिकतर स्थान नागों के नाम से अभी तक जाने जाते है। जैसे नील नाग, अनन्तनाग, कोकरनाग, शेषनाग , कोंसरनाग इत्यादि । ये सभी स्थान नागों के राजाओं के नाम पर बने हैं। नीलमत पुराण के अनुसार पिशाच यहां के लोगों को सताते थे जिस के

कारण उन्हें सर्दियों में गर्म इलाकों जम्मू तथा पंजाब के क्षेत्रों में जाना पड़ता था और गर्मियों में वापिस अपने स्थानों में लौट आते थे । एक बार चन्द्रदेव नामक एक वृद्ध ब्राह्मण बीमार हो जाने के कारण आगे जा न सका। हिमपात तथा पिशाचों के भय के कारण उस ने नागों के देवता नील नाग के यहां शरण ली । नील नाग ने चन्द्रदेव को न केवल अपने पास रहने का अवसर दिया अपितु उसे पिशाचों से अपना संरक्षण करने की सारी विधियां समझाई । सर्दियां समाप्त होने पर जब लोगों ने चन्द्रदेव ब्राह्मण को जीवित देखा तो वे चकित रह गए। चन्द्रदेव ने उन्हें वे सभी विधियां समझाई जिसके कारण पिशाच उसका कुछ बिगाड़ न सके। उन्हीं नीतियों तथा विधियों को अर्थात रीति रिवाजों को अपना कर यहां के निवासियों ने पिशाचों से मुक्ति पाई। अधिकांश पण्ड़ित वर्ग उन रीति रिवाजों को अभी तक निभाते जा रहे हैं जिन में ब्रांदफश, पीले चावल बनाना,यक्षदेव की पूजा, घरदेवता पूजन, शिशर संक्राति पर घर के चारों ओर चूना डालना इत्यादि

हज़ारों रीतियां जो समय के साथ साथ परिवर्तित होती रही जिनका उल्लेख नीलमत ुराण में मिलता है। आर्य इस देश में बहुत समय बाद ईसा पूर्व 800 वर्ष में आये थे आर्यो के आने के बाद ही यहां बहुत परिवर्तन आये; नागों के बाद यह धरती किन राजाओं के आधीन रही इस का लिखित वर्णन कहीं नहीं है। शिलालेखों; दंतकथाओं तथा अन्य स्रातों के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि कश्मीर का प्राचीनतम नगर 'सन्धिमत नगर 'था जो ईसा पूर्व 2082 से 2041 वर्ष तक सुन्दरसेन नामक राजा के राज्य में था । परन्तु भूकम्प के कारण इस नगरी का विध्वंस हो गया। यह वही स्थान था जहां आज कल वुलर झील स्थित है । प्राकृतिक आपदाओं के कारण उस नगर का कोई चिन्ह भी बच न पाया । उस समय के पश्चात कुछ छोटे छोटे राजाओं ने इस भूखण्ड में छोटे राज्य बनाकर शासन किया इन्हें 'कुर्तराज' के नाम से जाना जाता है जिनका उल्लेख कई इतिहासिक स्थानों; खण्डहरों तथा पुस्तकों में मिलता हैं । गौनन्द प्रथम ने

उन सभी छोटे छोटे राजाओं को समाप्त करके एक सम्पूर्ण राज्य बना कर शासन किया । यहीं कारण है कि राजतिरंगणी में कल्हन गौनन्द प्रथम को ही कश्मीर का प्रथम राजा मानते हैं । गौनन्द मगध के राजा जरासन्ध का सम्बन्धी था तथा श्री कृष्ण का समकालीन था गोनन्द प्रथम जरासन्ध की सहायता करते हुऐ श्री कृष्ण द्वारा युद्ध में मारे गये । उनके मरने के बाद कश्मीर जरासन्ध के पुत्र दामोदर के आधीन रहा। पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए वह भी श्री कृष्ण के सैनिकों द्वारा युद्ध में मारे गये । दामोदर की मृत्यु के पश्चात उसकी पत्नी यशोवती जो उन दिनों गर्भवती थी;का राज्याभिषेक स्वयं श्री कृष्ण ने यहां आकर किया था। यशोवती की मृत्यु के बाद उसके अवयस्क पुत्र गौनन्द द्वितीय ने कश्मीर पर शासन किया । उसके राज्यकाल के समय में ही कुरूक्षेत्र में महाभारत युद्ध प्रारम्भ हुआ। अवयस्क होने के कारण महाभारत युद्ध में भाग लेने के लिए उसे निमंत्रण ही नहीं दिया गया। परन्तु इस के पश्चात के इतिहास का

विवरण कुछ स्पष्ट रुप में कहीं भी वर्णित नहीं है। गौनन्द द्वितीय के दौर से महाराजा अशोक के काल तक 52 राजाओं ने कश्मीर पर राज किया कल्हण भी राजतरंगणी में उन राजाओं के विषय में अधिक जानकारी न दे पाये । जिन्होंने इस देश पर गोनन्द दुतीय के बाद शासन किया । उन राजाओं में लव, कुश, जैसे कई राजाओं का भी संकेत मिलता है जिन के नाम से यहां के कई गांव, नगर, जलाशय तथा मन्दिर अभी भी उन राजाओं का सम्बन्ध होने का दावा करते हैं। कश्मीर का एक भाग कैकीय प्रदेश से भी जाना जाता था अनुमान लगाया जाता है कि ब्रिजबिहारा तथा मार्तण्ड क्षेत्र उसी प्रदेश में थे क्योंकि इसी इलाके में सूर्य वंश के राजाओं द्वारा बनाये गये अनेक मन्दिर और तीर्थ स्थान आधुनिक काल में भी देखने को मिलते है । देवसर गांव में माता त्रिपूरसुन्दरी के मन्दिर से थोडी दूरी पर सीता कुण्ड़ है जहां श्री राम का नाम लेने पर पानी में हलचल होती है और बुलबुले निकलते है परन्तु उस की ओर भी किसी ने ध्यान ही

नहीं दिया । लोकभवन के समीप काबामर्ग में विष्णुपाद का पत्थर है जिस को इस्लामधर्म के अनुयायी भी उतना ही महत्व देते है जितना हिन्दूधर्म वाले मानते हैं। मार्तण्ड मन्दिर, कन्नगेश्वर क्रंगुस ,बूमजुआ की गुफाओं, हुटमुरा, सीर, सिलीगाम, कार्कुटनाग, गौतमनाग, अनन्तनाग इत्यादि सैंकडों मन्दिरों में भगवान विष्णु श्री राम, श्री कृष्ण की ही अमूल्य तथा अनगिनत मूर्तियां विद्यमान हैं जो इस तथ्य को उजागर करती है कि श्री राम, श्रीकृष्ण तथा पाण्ड़वों का इस धरती से गहरा सम्बन्ध रहा होगा । हुटमुरा जिसका प्राचीन नाम हस्तभोरा था हाथियों को बांध कर रखने का स्थान था । दूसरी शताब्दी में यह स्थान लिद्दर तट पर बसने वाली सभ्यताओं में उत्तम तथा अग्रिम थी । यहां मिली प्राचीन अति सुन्दर कलाकृतियां इस तथ्य को उजागर करता है। इसी प्रकार सीर तथा सिलीगाम के मन्दिर सुर्यवंश से सम्बन्धित होने का संकेत देते है।

सूर्य देवता



सूर्य भगवान

सूर्य नवग्रहों का राजा है । कश्यपऋषि की प्रथम पत्नी आदिति का पुत्र होने के कारण सूर्य देव को आदित्य भी कहा जाता है। आदित्य का एक और नाम सविता भी है जिसका अर्थ है सृष्टि के रचियता । ऋग्वेद में लिखा है " सविता , स्वर्वस्य , प्रसिवता " अर्थात आदित्य मण्ड़ल के प्रथम देव है । मार्कण्डेय पुराण में सूर्य को ब्रह्मस्वरूप की उपाधि दी गई है जिससे संसार का जन्म होता है । सूर्य सर्वभूत स्वरूप सनातन परमात्मा है । यही भगवान भास्कर , ब्रह्मा , विष्णु और रूद्र बनकर संसार का सृजन करते है , यही पालन करते है और संहार भी यह स्वयं करते है ।

उदये ब्रह्मणे रूपम् , मध्यान्हे् तु महेश्वरः
अस्तमाने स्वयं विष्णुस्त्रिमूर्तिश्च दिवाकरः।।

मत्यस्य पुराण में सूर्य , गणेश , दुर्गा , शिव और विष्णु को पंचदेव कहा गया हैं। इनकी पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिए। ब्रह्मा जी अंड का भेदन कर पैदा हुए तब उनके मुख से सर्वप्रथम शब्द ॐ निकला

था । ॐ ही ओंकार परब्रह्म है । यही भगवान सूर्य का शरीर है । ब्रह्माजी के चारों मुखों से चारों वेद आविर्भूत हुए । ओंकार के तेज ने इन्हें आवृत कर लिया। यही वैदिक तेजोमय आदित्य है जो आत्मस्वरूप सूर्यदेव कहे जाते है । ऋग्वेद इनका मंडल है , सामवेद किरण है तथा यजुर्वेद इनकी मूर्ति है । अतः सूर्यदेव तो ब्रह्म की ज्योति है । सूर्य के बारह स्वरूप हैं : इन्द्र , धाता , पर्जन्य , पूषा , त्वष्टा , अर्यमा , भग , विवस्वान , अंशु, विष्णु , वरूण तथा मित्र । इन सबसे सम्पूर्ण जगत व्याप्त है । चैत्र मास में विष्णु , वैशाख में अर्यमा , ज्येष्ठ में विवस्वान् , आषाढ़ में अंशुमान , श्रावन में पर्जन्य , भादों में वरूण , आश्विनी में इन्द्र , कार्तिक में धाता , मार्ग में मित्र , पौष में पूषा , माघ में भग और फाल्गुण में त्वष्टा नाम के सूर्य तपते हैं । महाभारत युद्ध समाप्त होने के पश्चात अर्जुन के असीम दुख को देखते हुए श्री कृष्ण ने उनके अशान्त मन में शान्ति के लिए अर्जुन

को भगवान सूर्य की पूजा अर्चना करने के विषय में कहते है ।

आदित्यो मन्त्र संयुक्तः आदित्यो भुवनेश्वरः
आदित्यान्नाः परो देवो ह्यादित्य परमेश्वरः ।
आदित्यमर्चयेद्ब्रह्मा शिव आदित्यमर्चयेत्
यदादित्यमयं तेजो ममतेजस्तदर्जुन ।।

सूर्य ही मन्त्र संयुक्त है , सूर्य ही भुवनेश्वर है। सूर्य से ऊपर और कोई शक्ति नहीं है । श्रेष्ठ ब्रह्माजी और भगवान शिव जी ने भगवान सूर्य की उपासना की थी । अर्जुन, सूर्य का तेज मेरा ही तेज है अर्थात सूर्य भगवान साक्षात नारायण का ही रूप है । ब्रह्मपुराण के अनुसार भगवान सूर्य नारायण को निर्गुण एवं सनातन देवता बतलाया गया है परन्तु फिर भी वे बारह स्वरूपों में प्रकट हुए इस संदेह के निवारण हेतु ब्रह्माजी जी कहते है कि कश्यप ऋषि की पत्नी आदिति के गर्भ से समस्त देवताओं का जन्म हुआ जो सारे कालचक्र चलाते हैं । जबकि अन्य पत्नियों से दैत्य , दानव , जंगम भूत तथा सम्पूर्ण जगत व्याप्त हो गया । कश्यपजी के पुत्रों में देवता प्रधान थे उन्हें यज्ञ

का भागी बनाया गया । दैत्य , दानव तथा राक्षस मिलकर उन्हें कष्ट पहुंचाने लगे । माता आदिति अपने पुत्रों पर हो रहे अत्याचार से बहुत दुखी हुई अत: उस ने निराकार परब्रह्म तेजाकार पिंडस्वरूप सूर्य की आराधना के लिए महान नियम का पालन करती हुई कठोर तपस्या करने लगी । जिसके फलस्वरूप भगवान सूर्य नारायण ने दक्ष पुत्री आदिति को अपने तेजोमय स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन दिया परन्तु उनके असाधारण तेज को देख नहीं पाई अत: आदिति ने उनसे प्रार्थना कि वह उनपर ऐसी कृपा करे कि वह उसे स्पष्ट देख सके । तब भगवान भास्कर ने अपने सामने खड़ी हुई देवी को स्पष्ट दर्शन देकर उनसे इच्छा अनुसार वर माँगने का अधिकार दिया । ब्रह्मपुराण में इस का वर्णन इस प्रकार दिया गया है । " आदिति बोली - देव , अधिक बलवान दैत्यों और दानवों नेमेरे पुत्रों के हाथ से त्रिलोकी का राज्य और यक्षभाग छीन लिया है ।

गोपते ! उन्हीं के लिए आप मेरे उपर कृपा करें । अपने अंश से मेरे पुत्रों का भाई होकर आप उनके शत्रुओं का नाश करें ।

भगवान सूर्य नारायण ने कहा - देवि ! मैं अपने हज़ारवें अंश से तुम्हारे गर्भ का बालक होकर प्रकट होऊँगा और तुम्हारे पुत्रों के शत्रुओं का नाश करूँगा।'' यह कहकर भगवान भास्कर अन्तर्हित हो गये और देवि आदिति भी अपना समस्त मनोरथ सिद्ध हो जाने के कारण तपस्या से निवृत हो गयी और वह महान तेजस्वी बालक " मार्तण्ड़'' कहलाया । इसे तेरहवाँ सूर्य भी कहा जाता है जिसका जन्म काश्मीर के महान तीर्थ मार्तण्ड़ मटट्न में हुआ जहाँ मलमास अर्थात अधिकमास में लाखों लोग अपना इहलोक , परलोक तथा पितरों का मोक्ष हेतु पूजा अर्चना तथा पिंडदान करने आते हैं । धर्मशास्त्रों में स्पष्ट वर्णन किया गया है । " मार्तण्ड़ नाम तत् क्षेत्रम् पितृणं मुक्ति कारणम् । '' मार्तण्ड़ की महिमा तथा महत्व के

विषय में अगले खण्ड़ों में सविस्तार दिया गया हैं ।

प्रत्यक्षदेव होने के कारण आदिकाल से ही विश्व के सभी देशों , जातियों , धर्मों , क्षेत्रों तथा धार्मिक ग्रंथों में सूर्य भगवान को विशेष स्थान दिया गया है । यही कारण है कि संसार के प्राचीनतम सभ्य देशों में सूर्य देव के मन्दिरों के प्रमाण मिलते हैं । जिनमें कार्णाक सूर्य मन्दिर मिस्र , अबू सिम्बल मन्दिर , मीज़ा वारड़े सूर्य मन्दिर , अबू गूरब सूर्य मन्दिर , न्यूसेरा सूर्य मन्दिर मीसोअमेरीकन सूर्य मन्दिर , पेरू अफ्रीका तथा सूर्य मन्दिर मुल्तान , ईरान और अफगानिस्तान बहुत प्रसिद्ध है। परन्तु इनमें से अधिकांश खण्ड़हरों में परिवर्तित हो चुके हैं परन्तु अबू सिम्बल मन्दिर को अपने स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर ले जाकर पुन: पहले जैसा मन्दिर तैयार करके मिस्र सरकार ने इस प्राचीन धरोहर को बाँध के नीचे डूबने से बचा कर सूर्य भगवान के प्रति आस्था रखने वाले देशों का सम्मान किया जिन्होंने इसका विरोध किया था । इसके अतिरिक्त संसार के

सभी लोग भिन्न भिन्न रूपों में अपने अपने ढ़ंग से प्रत्यक्ष सूर्य देव को नमन करते हैं जिसके बिना जीवन असम्भव हैं।

कई देशों में सूर्य को प्रकाश की देवी के रूप में माना गया हैं । उनके वाहनों के विषय में भी भिन्न भिन्न देशों में अलग अलग मान्यताएं हैं कहीं उन्हें नाव में तथा कहीं उन्हें एक , दो या चार घोड़ों के रथ पर सवार दिखाया हैं परन्तु अधिकांश देशों में सूर्य भगवान को सात घोड़ों के रथ पर विराजमान दिखाया गया हैं । आधुनिक काल में भी विज्ञान सूर्य प्रकाश को सात रंगों के मिश्रण दिखाते है और वे सात रंग सूर्य नारायण के सात घोड़ों के रंग के अनुसार हैं । रथ की रूप रेखा साल , मास , सप्ताह , घड़ी ,पल तथा ऋतुओं के रूपक हैं। रथ में एक ही पहिया होना सूर्य की परिक्रमा का वह मार्ग घेरा दर्शाता है जो नौ करोड़ इक्यावन लाख योजन मार्ग जिस पर घूमते हुए ग्रहों पर ऋतु व दिन , रात बनते रहते हैं ।

आदिकाल से ही भारतवर्ष ही क्या संसार के कोने - कोने में लोग जीवनदाता सूर्य के प्रति श्रद्धावान रहे है सर्वत्र लोगों ने अपने आराध्य की विभिन्न रूपों में कल्पना करके उपासना की है और जबतक सृष्टि में जीवन हैं सूर्य की अर्चना होती रहेगी। हमारे देश में सूर्य पूजा की परम्परा आदिकाल से ही चली आ रही है । वैदिक काल में सूर्य को नारायण भी कहा जाता था । खुदाई के पश्चात मिले प्राचीनकालीन सूर्य अंकित विभिन्न कालों तथा राजाओं द्वारा अंकित सिक्के प्राप्त हुए हैं। आधुनिक काल में हमारे देश भारत में बहुत सी सूर्य मूर्तियां तथा मन्दिर विद्यमान हैं जो सूर्य उपासना के अलग सम्प्रदाय होने के संकेत देते हैं।

भारत के प्रसिद्ध सूर्य मन्दिरः-

दक्षिणार्क मन्दिर गया , बिहार ।

सूर्यणार कोयिल , तामिलनाडू ।

सूर्यनारायण मन्दिर , अरासाविल्ली ।

सूर्य पहाड़ मन्दिर असम ।

ब्रह्माण्य देव मन्दिर ऊनाव ।

सूर्य मन्दिर मुढ़ेरा , गुजरात ।
कोणार्क मन्दिर उड़ीसा ।
गर्ग कुण्ड़ मन्दिर चोलपुर ।
भुवनेश्वरके समीप जैनगुफा खण्डगिरी
मार्तण्ड़ सूर्य मन्दिर,मार्तण्ड़ कश्मीर ।

इनके अतिरिक्त पश्चिमी भारत के भाँजा , खण्ड़गिरि की जैनी गुफा तथा बौद्धगया नामक स्थानों से प्राप्त मानव रूप में सूर्य की प्रतिमाओं से प्रतीत होता है कि सूर्योपासना न केवल ब्रह्मणों अपितु बौद्ध एवं जैन सम्प्रदायों में भी प्रचलित थी । कानपूर के समीप लाल भगत से प्राप्त दूसरी शताब्दी की सूर्य प्रतिमा में अनेक परिवर्तन मिलते है । मथुरा में प्राप्त कुषाण कालीन सूर्य प्रतिमा को चार अश्वों के रथ पर आसीन सूर्यके दोनों स्कन्धों से गरूड़ की भांति पंख लगे हैं। इनके अतिरिक्त ऐलोरा गुफा की सूर्यमूर्ति , थरापुरा में पाँचवी शताब्दी का सूर्य मन्दिर , छटी शताब्दी में मिहिरकुल के 15वे राजा द्वारा स्थापित सूर्य मन्दिर , ललितादित्य द्वारा मार्तण्ड़ प्रसाद , पालवंशीय शासनकाल की सूर्य मूर्तियां , भारत में प्राचीन काल से

ही सूर्य उपासना के प्रचलन को दर्शाती हैं । मध्यकाल में चौबीस परगना बंगाल के काशीपुर नामक स्थान से पाई सूर्य मूर्ति भारतीय वेशभूषा में सप्त अश्व के रथ पर विराजित दिखाया गया हैं । इस रथ का एक ही चक्र पहिया हैं तथा अरूण सारथी के रूप में विराजमान है। अन्य मिली मूर्तियों में सूर्य के साथ उनके प्रभामण्ड़ल समेत दिखाया गया हैं ।

बुन्देल खण्ड़ में मथई नामक स्थान में प्राप्त श्याम वर्ण सूर्य प्रतिमा की छः भुजाएं दिखलायी गई हैं , जिनके हाथों में कमल ,त्रिशूल , माला , पुस्तक और वरद की मुद्रा में हैं। इसके अतिरिक्त राजशाही संग्रहालय में सुरक्षित मार्तण्ड़ भैरव की प्रतिमा के तीन मुख हैं जो रौद्र , शान्त और वीरभाव दर्शाते हैं उनके हाथों में कमल , त्रिशूल , शक्ति , डमरू, खड़ग तथा खडग् धारण लिये दिखाया गया है इन दोनों मूर्तियों से प्रतीत होता हैं कि मार्तण्ड़ महात्म्य में दिऐ श्लोक में जिस प्रकार की रूपरेखा का वर्णन महा मार्तण्ड़नाथ

का है । वह इन मूर्तियों से मिलती है।

"भास्वत्पुञजकरं प्रसन्न वदनं पीताम्बरालंकृतम्
पदमेचाभय पुस्तके जपवदी हस्तैर्दधानं विभुम।
सर्वताग्निसमानकान्तिममलं नेत्रत्रयोभासितम्
देविमि परिवारितं च वरदे मार्तण्ड़नाथस्यनमः।।

इनके अतिरिक्त जम्मू-कश्मीर राज्य में मन्दिरों की नगरी जम्मू में रघुनाथ मन्दिर के परिसर में एक प्राचीन सूर्य मन्दिर विद्यमान है। कश्मीर से विस्थापन के पश्चात मार्तण्ड़ तीर्थ सभा ने पलौड़ा जम्मू में मार्तण्ड़ सूर्य भवन की स्थापना की । हाल ही में इसी सूर्य भवन के परिसर में भव्य सूर्य मन्दिर बनवाकर 9 मई 2009 को महायज्ञ रचा कर बड़े धूमधाम से भगवान सूर्य की मूर्ति स्थापित करके मार्तण्ड़ तीर्थ सभा ने जम्मू के इतिहास में एक नया अंक जोड़ दिया।

✦✦✦✦

शरण्यो दीनानां पतितजन भेष प्रशमको
नमस्तं मार्तण्डम विमलमितिख्यातं क्षितितले

सूर्य क्षेत्रससवच

प्राचीन काल में सूर्य क्षेत्र कश्मीर का सबसे सुन्दर क्षेत्र रहा है । यह क्षेत्र बहुत विस्तृत तथा रमणीक स्थलों से भरा था यह क्षेत्र असंख्य ऋषियों मुनियों सन्तों वेदान्तकों तथा कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का क्षेत्र रहा हैं । कश्यप ऋषि जी की इस क्षेत्र पर अति कृपा रही । नीलमत पुराण में इस क्षेत्र को ऋषि क्षेत्र की संज्ञा दी गई है तथा इस बात को स्पष्ट किया है कि इस क्षेत्र में अठाईस ह.जार ऋषि रहते थे । मार्तण्ड़ महामात्य पुराण इस क्षेत्र को धर्म का अखण्ड़ क्षेत्र तथा ऋषियों की तपोभूमि का क्षेत्र माना है कश्मीर की उत्पति के पश्चात सूर्य क्षेत्र में स्थित मार्तण्ड़ तीर्थराज को ही भगवान शंकर भोले नाथ का आर्शीवाद प्राप्त हुआ जब वह पार्वती को अमर कथा सुनाने अमर नाथ की गुफा की ओर चले थे । ऋषियों ने एक बार सूत जी से पूछा पृथ्वी पर ऐसा कौन सा स्थान है जहां मानसिक शान्ति के साथ साथ आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है ।

इस प्रश्न का उतर सूत जी ने इस प्रकार दिया । कश्मीर मध्य एक नगरी वितस्ता के तट पर नागों के राजा अनन्तनाग से दो कोस की दूरी पर मार्तण्ड. तीर्थ राज स्थित है जो देवासुर संग्राम में मारे गए योद्धाओं की अपमृत आत्माओं की मुक्ति के लिए देवताओं तथा ऋषियों की घोर तपस्या का परिणाम सें बना है; यही स्थान है जहां मानसिक शान्ति के साथ साथ आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है । सूर्य क्षेत्र को मार्तण्ड. क्षेत्र नाम से भी धार्मिक ग्रन्थों में स्पष्ट रुप में वर्णन किया गया है। यह क्षेत्र वितस्ता तट से गणेश बल तक फैला हुआ था । मार्तण्ड़ तीर्थ राज की आराधना समस्त देवी देवताओं की आराधना के समान है इस तीर्थ पर कोई भी धार्मिक कर्म तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक इस तीर्थ राज के सभी अंगों तथा सम्बन्धियों का आवाहन न किया जाए । इसीलिए मार्तण्ड़ गुरुकुल तथा विजेश्वर के विश्व प्रख्यात विद्यालय में कश्मीर के समस्त तीर्थों के विषय में जानकारी देते समय शिष्यों को उन तीर्थों पर धर्मानुसार पूजा पाठ करने की विधि सर्वप्रथम

सिखायी जाती थी । देवताओं का आवाहन पूजा अर्चना संकल्प दान श्राद्ध उसी विधि के अनुसार करने का प्रावधान बनाया गया था परन्तु समय बीतने के साथ साथ उन विधियों का लघुरुप बनाते बनाते अधिकांश पण्ड़ित वर्ग वह सभी विधियां भूल चुके हैं । सन्ध्या करते समय उस तीर्थ से संबन्धित देवताओं का स्मरण तथा आवाहन करने सें मनोवांचित फल प्राप्त होते है ऐसा धर्मशास्त्रों में लिखा गया है । इसी प्रकार मार्तण्ड. तीर्थ पर कोई भी धर्म कार्य इस मन्त्र का उच्चारण करने के पश्चात करने की विधि थी।

"भवानी भासुते भीमाये ; भर्ग-शिखा भगवते, गंगानन्द भैरवाये,
विमल कमल गौतमनागराजाये चक्रसुते चाकाभगवती
भास्कराय विध्मही सहस्त्ररश्मि दीमही तनो सूयो प्रचोदयात्
आदि दीवाय विध्मही महामार्तण्ड.ाय दीमही तनो सूर्यो प्रचोदयात्'' ।।

अत: इस तीर्थ राज में आस्था रखने वालों को इसी विधि के अनुसार प्रात: और सायं सन्ध्या पूजा अर्चना करके मार्तण्ड़ राज को प्रसन्न करना होगा तभी इस तीर्थ की छवि पुन: प्राचीन काल जैसी उभर सकती

है जो मनुष्यों की अज्ञानता तथा समय के फेर के कारण धूमिल हो चुकी है । इस में संदेह नहीं कि इस्लाम धर्म के आगमन के बाद यहां के धार्मिक स्थलों का ह्रास हुआ धार्मिक ग्रन्थ लुप्त किये गए यहां के शिक्षा केन्द्र नष्ट किये गए जो हज़ारों वर्षों से ज्ञान का भंड़ार एकत्र करके सनातन धर्म की सेवा कर रहे थे । परन्तु इतना सब कुछ होने के पश्चात भी यह तीर्थ आज भी सारे भारत के लोगों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है इस का श्रेय यहां के निवासियों पर है जिन्होंने इस की आन बान और शान के लिए सब कुछ दांव पर लगाया नहीं तो यह तीर्थ किसी मस्जिद का रुप धारण कर चुका होता जैसे कि कश्मीर के सैंकडों मन्दिरों तथा तीर्थो का हुआ । सिकन्दर असदखान , नादिर शाह , यूसुफ खान, मदद खान, पठानों तथा तारतार जैसे कई शासक भी इस तीर्थ से दूर ही रहे यद्यापि उन में से कईयों ने प्रयत्न भी किया था । मार्तण्ड मन्दिर को गिराने के समय बहुत विरोध हुआ था उस विद्रोह को दबाने के लिए शासकों को अपनी नीति बदलनी पड़ी । अत: मन्दिरों को तोड़ने के बदले ब्रह्मणों को मारने तथा

सताने का दौर प्रारम्भ हुआ । परन्तु धर्मनिरपेक्ष बादशाहों के कारण सूर्य क्षेत्र का सूर्य सदा चमकता रहा । सम्राट अकबर , जहांगीर ,शाहजहां जैसे मुगल बादशाहों ने विशेष ध्यान इस क्षेत्र की ओर दिया। सम्राट अकबर मार्तण्ड़ तीर्थ पर श्रद्धा के फूल अर्पण करने आए थे उन्होंने यहां गायों का दान किया राजा टोडरमल भी उन के साथ थे जिस का उल्लेख आईन-ए-अकबरी में मिलता है तथा इस तीथ पर एक पत्थर पर खुदे कुछ अक्षरों से स्पष्ट होता था जो विमल कुण्ड़ की मूर्तियों के साथ रखी गई थी । इसके अतिरिक्त मार्तण्ड़ तीर्थ के एक प्राचीन गीत में इस का संकेत मिलता है ।

भर्गशिखा भगवती मार्तण्ड़ क्षेत्र की इष्टदेवी है। यह देवी महर्षि कश्यप जी की धर्मपत्नी अदिति के तेरहवे विगलित अण्ड़े से निकली महाज्वाला का रूप है। भगवान विष्णु द्वारा चक्रसे क्षीणसत्व अण्ड़कार कटते ही उस में से एक महाज्वाला निकली जो मार्तण्ड़ क्षेत्र पर विद्यमान पर्वत की चोटी से टकराई इसी

ज्वाला का नाम भर्गशिक्षा पड़ा।'भर्ग 'सूर्य देवता का नाम है। अत: भर्गशिखा उस अण्ड़े से निकली चात ज्योतियों में से एक मानी जाती है। मार्तण्ड़ क्षेत्र पर माता भर्गशिखा भगवती की अपार कृपा दृष्टि रही है।

दंतकथाओंके आधार पर भर्गशिखा भगवती मार्तण्ड़ नाग राज की मां तथा अदिति का ही दूसरा रुप माना गया है । लोकनाग राज इन्हीं का सब से बड़ा पुत्र तथा मार्तण्ड़ राज छोटा पुत्र था । लोक नाग राज बहुत ही शक्तिशाली तथा समृद्ध था । उसका महल 'लोकपुण्य' नामक स्थान पर स्थित था जिस का खण्ड़हर लोकभवन गांव के मन्दिर के समीप 'बादशाह पिण्ड' नाम से जाना जाता है ।मुगल शासक वहां ग्रीष्म काल में अवकाश के दिनों में आते थे उन्होंने उसी स्थान पर एक विश्राम गृह बनाया जहां कभी लोकनागराज का महल था। लोक नागराज का यश वैभव सारे क्षेत्र में फैला हुआ था जिस का वर्णन सुन कर उसकी मां गद्गद् हो जाती थी । अदिति जब वृद्ध हुई अपने पति कश्यप ऋषि से आज्ञा ले कर अपने

बड़े पुत्र लोक नागराज के महल में रहने की इच्छा से आई । परन्तु लोक नागराज ने उस की इच्छा का वह सम्मान नहीं किया जैसा कि एक मां अपने पुत्र से आशा रखती है। लोक नागराज ने मां के रहने की व्यवस्था अपने भवन से नीचे कर दी जिस के कारण मां रुष्ट हुई ।अत: अदिति वहां से वापिस चल पड़ी । अपनी मां के अनादर के फलस्वरुप लोकनागराज का वैभव यश घटने लगा । यद्यापि मां अपने पुत्र को कभी श्राप नहीं दे सकती परन्तु फिर भी उसकी अन्त:करण से निकली आह सब कुछ नष्ट कर सकती है ठीक उसी प्रकार आदित्या के चले जाने के पश्चात लोक नाग की महिमा भी घटने लगी । भवन के समीप साफ तथा सुन्दर जलाशय गदले पानी से भर गया तथा उस में घास शिल उगी जिस के कारण वहां कोई नहा भी नहीं सकता । कई शताब्दियां बीत गयी परन्तु वह दाग कभी मिट न सका । लोकभवन का वह जल कुण्ड़ उस घास से भरा रहता है । वहां से निकलने के बाद अदिति अपने और एक पुत्र अनन्तनाग राज के पास

चली आयी अनन्तनाग राज ने मां का बड़ा आदर सत्कार किया और एक सुपुत्र की भान्ति उसे अपने से ऊंचा स्थान दिया । परन्तु मां की ममता कुछ विचित्र होती है मंझले पुत्रों की अपेक्षा सबसे बड़े या सबसे छोटे पुत्र के पास ही रहना पसन्द करती है । इस में संदेह नहीं कि मां अपने सभी बच्चों से समान प्रेम करती है परन्तु फिर भी बड़े को अधिकार तथा सबसे छोटे के प्रति प्रेम दर्शाती है । अदिति अनन्तनाग राज की श्रद्धा भावना पर अति प्रसन्न हुई। अनन्त नागराज को आर्शीवाद देकर तथा अपनी छाया तुतला भगवती के रुप में रख कर अपने सबसे छोटे पुत्र मार्तण्ड़ जो भवन नगर में रहता था की ओर चल पड़ी । जब मार्तण्ड़ को मां के आगमन का समाचार मिला तो वह अपने कुटम्ब समेत माँ का स्वागत करने भैरव घाट पँहुचा । जिसे तिकू बाग कहते थे और आजकल टिक बाग कहलाता है । वास्तव में यहां के सभी पण्ड़ित तिकू ही कहलाते थे जिस का प्रमाण हरिद्वार में अभी भी मिल सकता है । जिस मार्ग से वे चले उस को चाका नदी

कहते है क्योंकि चार के समूह को चाका कहा जाता हैं मार्तण्ड़ राज उस की पत्नी और उनके दो पुत्र कमल विमल चारों संगम पर मां के आने तक प्रतीक्षा करते रहे यह वहीं स्थान है जहां शेषनाग का पानी लिद्दर नदी के रुप में बहता हुआ चाका नदी से मिलता है । जनश्रुति के आधार पर चाका नदी चक्रेश्वरी की चार धाराओं सें ही बनी है जिनके स्रोत विमल कमल के अतिरिक्त और सात कुण्ड़ थे जो नागबल से बोनगाम यारबल के मध्य कहीं स्थित थे । जो लम्बे समय के अन्तराल में लुप्त हो गये । मार्तण्ड़ नाग ने मां का आदर सत्कार किया और उसे अपने से ऊंचा स्थान देकर उस का गौरव बढ़ा कर मां का आर्शीवाद प्राप्त किया और महा तीर्थ राज की उपाधि प्राप्त की ।

अदिति ही माता भर्गशिखा के रुप में मार्तण्ड़ तीर्थराज के ऊपर ऊंचे पर्वत के शिखर पर विराजमान हुई । कहा जाता है कि पठानों के काल तक इस इष्टदेवी के दर्शन भक्तों को साकार रुप में होते थे

परन्तु उस काल में इस पवित्र स्थान का अनादर किया गया जिस के कारण भर्गशिखा भगवती ने सिर झुकाकर पत्थर का रुप धारण किया । कहा जाता है पन्द्रहवी शताब्दी में फ्रिस पण्ड़ित को माता के साक्षात दर्शन प्राप्त हुए । दन्त कथाओं के अधार पर फ्रिस पण्ड़ित भगवती का परम् भक्त था वह प्रतिदिन मां के मन्दिर जाता था जब वह वृद्ध हुए तो इस पर्वत पर चढ़ने में उन्हें बहुत कष्ट होता था मां से उन का यह कष्ट सहन न हुआ अतः मां ने दर्शन देकर उन्हें एक पत्थर दिया और आज्ञा दी कि वह पत्थर किसी ऐसे स्थान पर रखे जहां वह आसानी से पहुँच सके । फ्रिस पण्ड़ित ने वह पत्थर पर्वत के दामन में रखा उसे कोठ बल के नाम से जाना जाता है । उस स्थान का महत्व भर्गशिखा यात्रा के समान ही माना जाता था और अधिकतर लोग जो भर्गशिखा पँहुच नहीं पाते वे कोठ बल में अपने श्रद्धा के फूल अर्पण करते थे । परन्तु समय बीतने के साथ साथ लोग उस स्थान को ही भूल गए।

कहा जाता है कि मार्तण्ड गुरुकुल के शिष्य प्रातः कोठबल से होते हुए ही विमल कुण्ड़ में स्नान करके तीथराज में पूजा अर्चना करते थे। 500 वर्ष बीत जाने के पश्चात 1967 ई0 में दक्षिण भारत के एक साधु मौनी बाबा को भर्गशिखा भगवती ने भवानी के रुप में दर्शन दे कर यहां की स्थिति से अवगत कराया । अतः वह साधु महाराज इस तीर्थ पर आये और यहां के अन्य धार्मिक स्थानों की जानकारी प्राप्त करके भर्गशिखा मन्दिर चले गये । पर्वत की चोटी पर बने इस मन्दिर को देख कर उन्हें ज्ञात हुआ कि मां भवानी ने उसे इसी मन्दिर की दशा सुधारने की आज्ञा दी थी जिसकी ओर यहां के लोगों तथा सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया था। अतः वह इस कार्य में जुट गए उन्होंने इस मन्दिर का पुनः निर्माण कराकर सुन्दर और आकर्षक रुप दिया ।

बिजली, सड़क तथा पानी पहुँचा कर माता के दरबार की शोभा बढ़ाई । यहां के निवासियों ने हर

तरह से उन की सहायता की तथा सहयोग दिया । लोग उन्हे मौनी बाबा कह कर पुकारते थे उन का दर्शन करने दूर दूर से लोग आते थे । मौनी बाबा ने 12 वर्ष का मौन व्रत रखा था । भर्गशिखा मन्दिर में उन्हों ने कई बार यज्ञ करवाये । पर्वत की चोटी पर बने इस मन्दिर में यज्ञ कराना अब सरल लगता था। अपना कार्य पूर्ण करने के पश्चात मौनी बाबा ने इस पंच तत्व के शरीर का त्याग किया । उन की समाधि भर्गशिखा मन्दिर के पर्वत के दामन में स्थित गंगानन्द घाट में है। भर्गशिखा भगवती की कृपा सदा सूर्य क्षेत्र पर बनी रही जब जब भी कश्मीर पर विपतियां आई इस क्षेत्र पर उन विपतियों का प्रभाव कम ही रहा । सिकन्दर बुतशिकन के समय से आधुनिक समय तक यहां के मूल निवासियों को असंख्य कष्ट झेलने पड़े परन्तु मां की कृपा से अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा इस क्षेत्र पर कम प्रभाव रहा । इस का अनुमान इस बात से लगाया जाता है कि इस क्षेत्र के अधिकतर पंडित मलमासी हैं जो यहां के मूल नागरिक माने जाते हैं । वे क्रूर शासक भी इस

क्षेत्र के पवित्र स्थानों को चाह कर भी मिटाने का साहस न कर सके जैसा कि वे कश्मीर के अन्य क्षेत्रों के पवित्र स्थानों तथा मन्दिरों को नष्ट करने में सफल हुए।

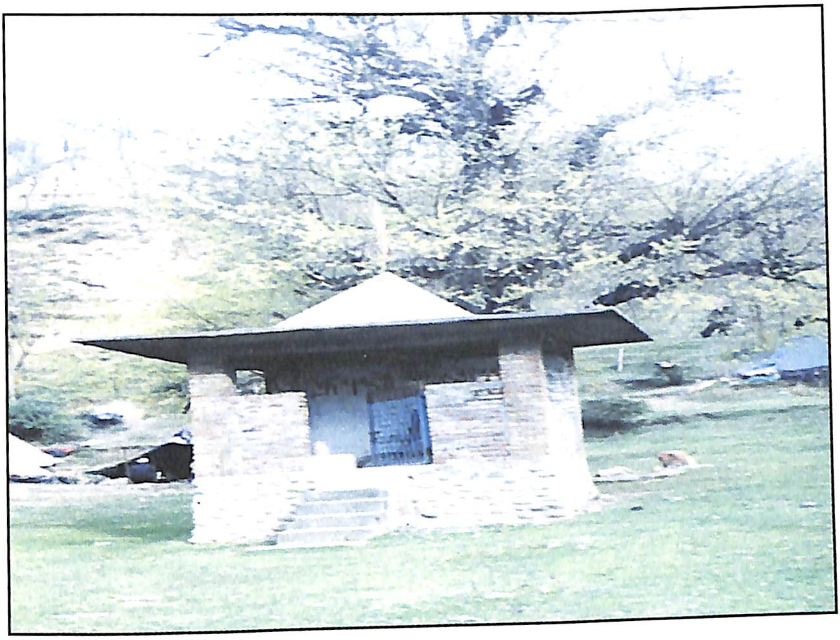
✦✦✦✦

यदा माभिर्विश्वं भवति सकलं चेतनमिति
विकासं प्राप्नोति सकलमपि यस्योदृगमनत:

भीमा भगवती मार्तण्ड़ तीर्थ मट्टन



गंगानन्द भैरव मार्तण्ड़ तीर्थ



भर्गशिखा स्तोत्र

अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निभया वहा ।
भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भास्करा विभा ।।

भीमेश्वरी च भीरूण्डा भगेशी भगसर्पिनी ।
भगलिंगस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी ।।

भर्गशिखे त्वं जगन्माता भर्गशिखे त्वं जगत्पिता
भर्गशिखे त्वं जगद्धात्री भर्गशिखे नमो नमः ।।

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरी ।
जयकृष्णे संस्तुते देवि सर्वदुर्गति नाशिनी ।।

सर्वबाधा महारोगा भूतबाधास्तथैव चः ।
जपमानेन नश्यन्ति जीवेच्च शरदा शतम् ।।

दारिद्रय व्यसनध्वंसी श्रीमती देवी भर्गशिखा ।
त्रैलोकी वासिनामीड्ये लोकानांवरदा भव ।।

अनाथस्य दीनस्य जगत्तारणी भर्गशिखा ।
शरणागत जीवानां सर्वदुख विनाशिनी ।।

सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ।
भर्गस्तोत्र हृदयं पुण्यं भर्गशिखा विभूषितम् ।।

भर्ग शिखा आराधना

नमः विष्णु भवनम् नमो स्वर्गद्वारम् ,
नमः शक्तिपीठे नमो भर्ग रूपम् ,
त्वमेव सिद्धि लक्ष्मी , त्वाम चक्रपाणि ,
अहम् त्वाम शरणम रक्षिमाम् भवानी ।
नमः .... ।।

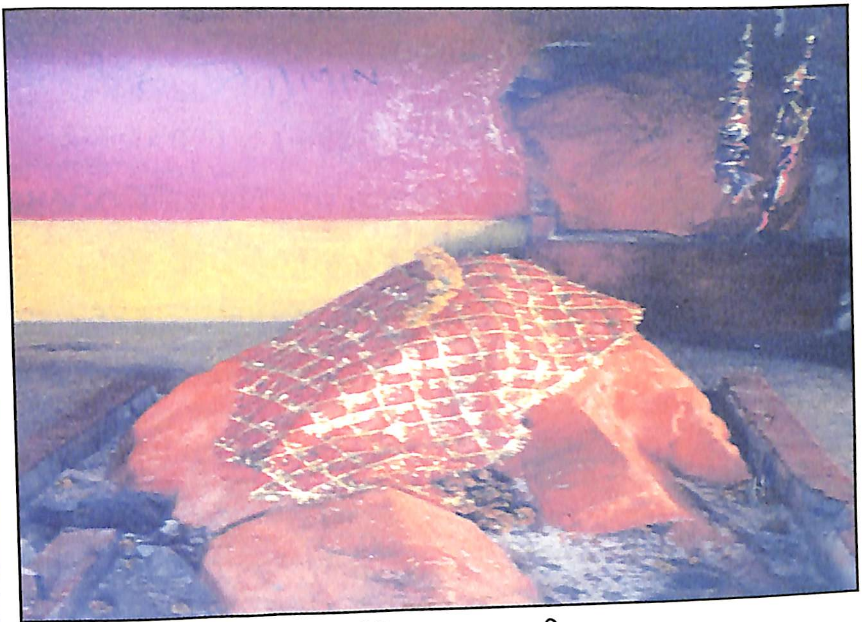
शिला रूपदेवी , बिल्व वृक्ष पताका ,
स्थित हिमशिखरे , प्रत्यक्ष रूपा ,
मार्तण्ड़नाथस्य त्वाम चक्षु ज्योति ,
शत् शत् प्रणाममम् नमः कोटि कोटि ,
मार्तण्ड़ शक्ति , त्वाम विश्व जननी ,
अहं त्वाम शरणं रक्षमाम् भवानी ।।

न मन्दिरम न तीर्थम न ज्ञानं न ध्यानं ,
अहम् निर्विकल्पी , दीनम् अनाथम् ,
नमो महा ज्वाला , नमो देवी भर्गे ,
हरौ सर्वबाधा , क्षमा अपराधम ,
मार्तण्ड़ नाथस्य त्वाम् राजरानी ,
नमः .... ।।

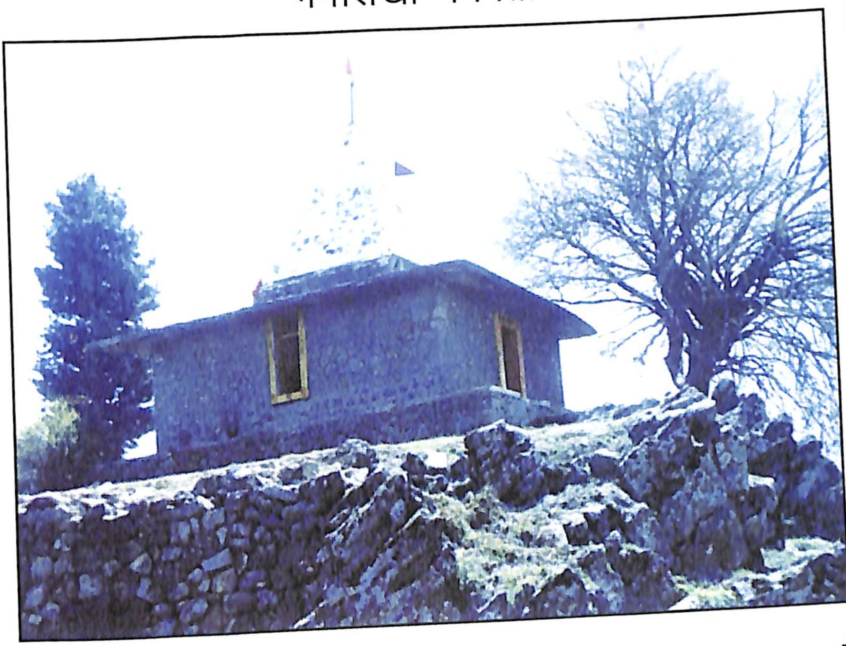
न कर्मो न धर्मो न पूजा न पाठं ,
सुता त्वाम माते हरौ संतापम् ,
स्वस्ति कल्याणं सर्वेषु विधेहि ,
आयुर - आरोग्यम् सर्वम् च देहि ,
क्षामये जयकृष्णस्य कर्मस्थहानि ,
अहम् त्वाम शरणम् रक्षमाम् भवानी ।।

(हरि कृष्ण सिद्धा द्वारा रचित)

भर्गशिखा भगवती पिण्डरूप



भर्गशिखा भगवती



संदर्भ :

1. -राजतरंगणी (कल्हन)अध्याय: 4; 6 ;7
2. राजतिरंगणी एम.ए.स्टेन अनुवादवाल्यूम-2 पृ. 249 250- 6;92 141(4) ; 324 ; 325; 282 ; 283 ; 290; 291 (7) 2; 3; 113(1)
3. द वेली आफ कश्मीर - लारेन्स
4. कश्मीर अवेकिज़ - बी. एल . शर्मा
5. नीलमत पुराण -श्लोक:- 1037;1051; 1052;1053; 1054 1056
6. मार्तण्ड़ महात्म्य
7. कश्मीर के र्तीथों पर आधारित पुस्तिकाएं विन्ज तथा इन्स द्वारा लिखित।
8. मय फ्रोज़िन टरबुलेंस इन कश्मीर- श्री जगमोहन।

+ + + +

मार्तण्ड़ तीर्थ

मार्तण्ड़ तीर्थ आधुनिक काल का मट्टन तीर्थ भारत के प्रमुख तीर्थों में गिना जाता है । कई धार्मिक ग्रंथों में इसे तेरहवा सूर्य प्रयाग की उपाधि दी गई है। सारे भारत वर्ष में कोनार्क के बाद यही एक मात्र सूर्य मन्दिर विद्यमान है जो प्राचीन काल से ही पूरे हिन्दू समाज का केन्द्र बिन्दु रहा है । वेदों, उपनिषदों, पुराणों तथा अन्य धार्मिक पुस्तकों मे इस तीर्थ का उल्लेख मिलता है मार्तण्ड़ सूर्य देव की जन्म भूमि मानी जाती है । मार्तण्ड़ क्षेत्र का इतिहास दस हज़ार वर्ष से भी पुराना है जब कश्मीर एक सतीसर था । जिस प्रकार भागीरथ ऋषि ने अपने पूर्वजों के उद्धार तथा मुक्ति के लिए गंगा जी को पृथ्वी पर लाया था ठीक उसी प्रकार कश्यप ऋषि जी ने देवासुर संग्राम में अपमृत हुए अपने सौतेले भाईयों का मोक्ष तथा उद्धार के लिए चाका देव नदी द्वारा इस तीर्थ की महिमा बढ़ा दी।'चक्रेश्वरे समारमे

यावत गौतम संगमे ' भगवान विष्णु के चक्र से काटने पर निकलने वाली धारा चक्रेश्वर से गौतम नाग संगम तक चाका नदी का रुप माना गया है कश्यप ऋषि जी का इस तीर्थ के साथ अधिक लगाव था क्योंकि उन के तेरहवें पुत्र का जन्म यहीं हुआ था । नीलमत पुराण, मार्तण्ड़ पुराण, मार्तण्ड़ महामात्य नामक ग्रंथों में मार्तण्ड़ तीर्थ का वर्णन दिया गया है । " मृत अण्ड़ा मार्तण्ड़: '' । सृष्टि की उत्पति चार प्रकार से होती है। उदभिजज, अण्ड़ज, स्वेदज तथा जलज । देवता और ऋषि अपनी इच्छा अनुसार किसी भी ढ़ंग से उत्पति कर सकते है । पाण्ड़व पिण्ड़ रुप से तथा कौरव अण्ड़ रुप से विकसित हुए थे । कश्यप ऋषि जी की 13 पत्नियां थी। जिन के नाम इस प्रकार हैं अदिति, दिति, सुरभि, दनु ,खशा दनायुष , प्रवरा, इरा, मुनि, कला, क्रोधवशा, कद्रो तथा विनीता ।

अस्मिन् वैवस्वते प्राप्ते राजम्मन्वन्तरे किल
मारीचाय ददौ दक्ष कश्यप त्रयोदश।।''

आदिति ने देवताओं को जन्म दिया ।
दिति से असुरों का जन्म हुआ; सुरभि के गर्भ से 11 रुद्र तथा 2 कन्याएं उत्पन्न हुई ; महादेव जी का वाहन वृषभ भी सुरभि पुत्र है। दनु से दानवों का जन्म हुआ; खशा के दो पुत्र यक्ष और राक्षस हैं; दनायुशा का पुत्र वत्र कहलाया और प्रभा के दस ज्ञान नामक पुत्र हुए;ऐरावण इरा का पुत्र तथा 16 पुण्यात्मा गन्र्धव 34 अप्सराएं मुनि की सन्ताने है; कला के गर्भ से कल्प और काल नाम के पुत्र जन्मे; कोधवशा की कोक्ष से दस कन्याएं हुई तथा कद्रो ने नागों को जन्म दिया; अरुण , गरुड , गायत्री तथा हव्यवाहगण विनता की सन्तान हैं। आदिति से बारह देवता हुए उन्हें बारह मासों का अधिपति मान कर 12 सूर्यो के नाम दिये गए । तेरहवी सन्तान का गर्भ क्षीणसत्व समझ कर उस अण्ड़े को आदिति ने पृथ्वी पर फैंक दिया क्योंकि वह अण्डाकार अन्य सें भिन्न था । वह अण्डकार सतीसर के पानी में गिरा और किनारे के पास रुका । कश्यप ॠषि जी ने सन्ध्या के समय सतीसर में से निकल रहे प्रकाश को

देखा। अदिति ने कश्यप ऋषि जी को इस का रहस्य बता दिया । कश्यप ऋषि ने अपने तप से भगवान विष्णु को प्रसन्न करके इस का जीवनदान मांगा भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से इस अण्ड़ाकार के दो भाग कर दिये । चक्र से कटते समय इस में महाज्वाला निकली जो मार्तण्ड़ क्षेत्र पर विद्यमान पर्वत की चोटी से टकराई । वही ज्वाला भर्गशिखा कहलाई त्रिदेव ने भर्गशिखा को शक्ति प्रधान करके इस क्षेत्र की इष्ट देवी बना दी । अन्य चार ज्योतियां निकली जो सात दिशाओं में उड़ कर धरती पर गिरी । और वे चार ज्योतियां चार देवियां बनी जो इस क्षेत्र की इष्ट देवी मानी जाती है । अण्ड़े के दो भाग विमल और कमल कुण्ड़ कहलाये । उस स्थान को जहां भगवान विष्णु ने चक्र चलाया उसे चक्रेश्वरी का नाम दिया गया तथा उस अण्ड़कार से निकली धाराओं को चाका का नाम दिया गया । कश्यप ऋषि ने ब्रह्मा जी से कहा " मेरी बारह सन्ताने सारा कालचक्र चलाती हैं। अत: इस तेरहवी सन्तान को भी

ऐसा ही काम दीजिए ।'' अदिति के इस तेरहवे पुत्र को विशेष महत्व देने के लिए त्रिदेव (ब्रह्मा विष्णु तथा महेश) ने जब बारह सूर्यो से इस विषय में पूछा, तब उन्हों ने कहा " नियति शक्ति ने समय माप कर हमारा कार्य निर्धारित किया है। चन्द्रमा सहित हम सब तदानुसार कालचक्र को चला रहे हैं। अब आप ही देखे कि किस प्रकार हमारे नियत समय में से कोई समय निकल सकता है उस का अधिकारी मार्तण्ड़ को बना दीजिए।''

तदा प्रभृति तद्ब्रह्मसिद्धसन्तदर्शनक्रमात् ।
सौरसंवत्सरस्यान्ते मासेन शशिजेन तु ।।

नाडीचतुष्टयान्ते च पतत्येकोधिमासकः ।
चान्द्राश्चैत्रादयो मासा युक्तामेषदिसंक्रमैः ।।

अब्रुवन्नधिमासेऽस्मिन्मार्त्तण्डमभिषिच्यताम् ।
चिरकालं यतोऽनेन भुक्ता सरसि यातनाम् ।।

एकादशातिरिच्यन्ते दिनानि प्रतिवत्सरम् ।
वर्षद्वये चाष्टमासे दिनषोडशकान्विते ।।
संक्रातिरहितो मासो मलमासस्ततोऽधिकः ।
एवं विचार्य ब्रह्माद्या देवेन्द्राः कश्यपो तदा ।।

ब्रह्मसिद्धान्त के आधार पर देवताओं ने देखा कि चान्द्रमास के क्रम से लगभग ढ़ाई वर्ष के बीतने पर एक अधि मास बन सकता है। अतः ब्रह्मादि देवताओं ने कश्यप ऋषि से कहा कि आप इसी अधिमास का स्वामी बनने के लिए मार्त्तण्ड़ का अभिषेक कीजिए। इतने समय तक जल में पड़े रहने से इसने बहुत कष्ट पाया है , आपके बारह पुत्र अपने-अपने ही मास के अधिकारी बने रहेंगे , किन्तु यह मार्तण्ड़ किसी भी मास में मलमास का स्वामी बनकर रहेगा , हम यह वरदान देते हैं कि जिस व्यक्ति का उद्धार कहीं न हो पाये गा इस तीर्थ पर श्रद्धा और भक्ति से पूजा अर्चना करने वाले को सद्‌गति प्राप्त होगी अकाल मृत्यु अथवा दुर्घटना इत्यादि अपमृत व्यक्तियों की आत्मा की मुक्ति, शांति और मोक्ष इस तीर्थ राज को प्राप्त है ।

चक्रस्वामिसमीपे च दृष्ट्वा देवीं हराङ.कगाम् ।
सर्वपापविर्निमुक्तो रुद्रलोकमवाप्नुयात ।।
कार्तवीर्यार्जुनस्वामिं दृष्ट्वा तं च दिवाकरम् ।
मार्तण्ड़ं कश्यपस्वामिं विश्वगश्वकृतं रविम् ।।

नाम तथा महिमा प्रधान करने के पश्चात देवताओं ने

सौरमास का गणित का खण्ड़न करके पुन: चान्द्रमास गणित का उपयोग करके तेरहवें मास का प्रावधान बनाया गया जो चन्द्रमा के घटने तथा बढ़ने का क्रम ध्यान में रख कर 32 पूर्णमासियों 16 दिन तथा 4 घडियों के उपरान्त सम्भव हो सका उसे अधिकमास या मलमास का नाम दिया गया ।

द्वात्रिंशभ्दिर्गतै: मासौर्दिनै: षोडशभि: तथा ।

घटिकानां चतुष्केन पतति अधिमासक: ।।

कहा जाता है इस मास में सभी देवताओं की कृपादृष्टि इस तीर्थ राज पर रहती है अत: इस मास में मार्तण्ड़ तीर्थ पर अपने पितरों का श्राद्ध करना या पूजा अर्चना भवसागर तरने का सुगम पथ है ।

"श्राद्धं दानं तथा जपं स्नानं होमं तथार्चनम् ।

सर्वमक्षयतां याति यत् कृतं तत्र पार्थिव ।।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्राचीन काल से ही इस तीर्थराज पर भारतवर्ष के हिन्दुओं की आस्था तथा श्रद्धा रही है । इसी कारण कई महान राजाओं ने इस क्षेत्र को अपनी कर्मस्थली मान कर इस का गौरव बढ़ाया । दसवी शताब्दी में राजा राम देव जी ने इसी

तीर्थ पर अपने प्राण त्याग दिए । ग्याहवी शताब्दी में 1089ई. में राजा हर्ष के पिता राजा कलश जब मृत्यु शय्या पर थे तो उन्होंने भी मार्तण्ड तीर्थ पर ही सूर्य देव की शरण में जाने की इच्छा व्यक्त की । अत: उन्हे वहां ले जाया गया और मृत्यु के समय भी उन्होंने हाथ के इशारे से मंत्री को सूर्य देव का दर्शन कराने का आदेश दिया अत: मंत्री ने एक बड़ा शीशा ला कर उनके सामने रखा जिसमें मन्दिर की मूर्ति साफ दिखाई दे रही थी उसके दर्शन करते हुए ही राजा कलश ने अपने प्राण त्याग दिए। उनका सारा धार्मिक क्रियाकर्म मार्तण्ड़ र्तीथ पर किया गया कल्हण द्वारा लिखी राजतरंगणी में अध्याय 7 में श्लोक 709से 722 तक इसका वर्णन दिया गया है। इन घटनाओं से इस तीर्थ की महिमा का महत्व स्पष्ट हो जाता है। दन्त कथाओं के आधार पर माना जाता है कि राजा जनक इस तीर्थ राज में प्राय: आते थे उन का आश्रम यहां से 5 कोस की दूरी अर्थात 15 कि. मी. दूर आधुनिक काल के एशमुकाम में था। कहा जाता है कि राजा जनक के

काल में उस स्थान पर अश्वों के अस्तबल हुआ करते थे जिस के कारण इस स्थान को अश्वपुरी कहा जाता था जो बदलकर ऐशमुकाम बन गया। कुछ लोग इस स्थान को जनक ऋषि माल कहते थे । परन्तु इस्लाम धर्म के आगमन के बाद उस स्थान को "जअनशाह सअब" की दरगाह का नाम दिया गया । इस स्थान के साथ पाण्डवों का नाम भी जुडा हुआ है किंविदंतयों के आधार पर माना जाता है कि पाण्डव अज्ञातवास के काल में यहां ही ब्राह्मण के घर में रहते थे । जिस का वर्णन महाभारत में हुआ है । यह स्थान एकचक्रा नगरी के नाम से जानी जाती थी । यह नगरी बहुत ही सुन्दर और रमणीक स्थलों से परिपूर्ण थी । बकासुर नाम के एक राक्षस ने इस नगरी में उपद्रव मचा रखा था। जिस के कारण लोग बहुत ही परेशान रहने लगे क्योंकि वह राक्षस किसी भी समय आकर बच्चों बूढ़ों महिलाओं को मार कर पर्वत के दामन में बनी गुफा में ले जाता था। नगर अध्यक्ष तथा लोगों ने इस समस्या का हल ढूंढ़ निकाला । वे सभी मिल कर राक्षस के पास

गये और उस से विनती की ; कि वह सामूहिक रूप से किसी की हत्या न करे इसके बजाय नगरवासी हर सप्ताह अपनी ओर से बैलगाड़ी भर खाने-पीने की चीज़े भेज दिया करे गें । उसमें मांस मदिरा दूध दही खाद्यान्न सभी कुछ होगा। बैलगाड़ी चला कर जो व्यक्ति जाएगा तथा वे बैल जो गाड़ी में जुते होंगें वे भी उसके आहार बने गें। राक्षस ने नगर वासियों का यह प्रस्ताव स्वीकार किया । अत: हर सप्ताह उस राक्षस की गुफा में एक युवक को खाने पीने की सामग्री भेजते जो उस राक्षस का सप्ताह भर का आहार होता अत: उसे बाहिर आने की आवश्यकता ही न पड़ती । इसके लिए हर घर से एक एक व्यक्ति की भारी रखी गई । एक दिन उस कुम्महार के पुत्र की भारी थी । जिस से भीम ने बहुत बड़ा भिक्षापात्र बनवाया था और उन के पड़ोस में ही रहता था। उस दिन प्रात: ही खाने पीने की सामग्री से भरी बैल गाड़ी कुम्महार के घर पहुन्चाई गई और लोग अश्रु भरे नयनों से कुम्महार के बेटे की विदाई की तैयारी करने लगे । परिवार के अन्य सदस्य

रोते बिलखते रहे परन्तु उस युवक को नियम के अनुसार जाना आवश्यकता थी अत: रोते रोते भी सभी उसे भेजने की तैयारी में लगे हुए थे । पाण्ड़वों की मां कुन्ती को जब इस बात का पता लगा तो वह आगे आई और अपना निर्णय लोगों को सुनाया जिस को सुन कर लोग अवाक् उसे देखते रहे । कुन्ती ने कुम्महार के पुत्र के बदले अपने बलशाली पुत्र भीम को राक्षस के पास भेजने का सुझाव दिया । परन्तु लोगों ने किसी अतिथि को बलि पर चढ़ाने वाले इस सुझाव का खण्ड़न किया । कुन्ती के बहुत आग्रह करने पर अन्त में भीम को राक्षस के पास अन्न सामग्री समेत भेज दिया गया । भीम खाद्य सामग्री ले कर गुफा के द्वार पर पहुंच गया और राक्षस को पुकारा । राक्षस हृष्ट पुष्ट व्यक्ति को देख कर बहुत खुश हुआ परन्तु जब उस ने भीम को वह खाद्य सामग्री खाते देखा तो वह बहुत क्रोधित हुआ । देखते ही देखते भीम ने वह सारी सामग्री समाप्त कर ली । राक्षस चिल्लाते हुए उस पर पत्थर हडिडयां फैंकता रहा भीम ने बड़ी सरलता से अपना बचाव किया

जिस के कारण राक्षस अधिक क्रोधित हुआ । चिल्लाते हुए वह भीम पर झपट पड़ा उस के चिल्लाने की आवाज़ सुन कर नगर के लोग भयभीत हुए । भीम पहले से ही इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था कई घन्टों तक वह राक्षस से मलयुद्ध करता रहा दिन का तीसरा पहर भी ढ़लने लगा । राक्षस ने छल बल कपट सारे दांव आज़माये परन्तु किसी प्रकार से भी भीम को हरा न सका अन्त में भीम ने राक्षस की एक टांग पर अपना पांव रखकर दूसरी टांग को हाथों से पकड़ कर ज़ोर से खींच कर राक्षस का काम तमाम किया। राक्षस की दर्द भरी चीख सुनकर नगर के लोग लकड़ी की मशाले हाथों में लिए गुफा के पास एकत्र होगए । भीम राक्षस की लाश लेकर गुफा के बाहिर आया । राक्षस को मरा हुआ देख कर लोग इतने खुश हुए कि उन्हों ने पूरे क्षेत्र में मशाले जला कर प्रकाश किया चारों ओर पाण्डवों की जय जयकार होने लगी । उस दिन की याद में हर वर्ष मशाले जला कर पूरे इलाके में प्रकाश किया जाता है यहां के निवासी इसे जूल कहते है ।

माना जाता है शिशुर खखिर उस घटना की याद में मनाया जाता है ।

क्योंकि भीम ने जब राक्षस को मारा उस समय सायंकाल था लोगों ने मरे हुए राक्षस को रस्सी से बांध कर नगर के बाहिर वृक्ष के साथ बांध लिया और अगले दिन प्रातः ही उस को घसीट कर पूरी नगरी में घुमाया गया। घसीटते घसीटते उस राक्षस के शरीर के तीन भाग तीन अलग अलग स्थानों पर गिर गये जहां सिर कटकर गिरा उस को सिरबल जहां पिण्ड़ उस स्थान को पिण्ड़ोबल तथा जहां एश गिरे उस स्थान को एशमुकाम का नाम दिया गया । राक्षस को ठीक उसी प्रकार घसीट कर लिया गया जिस प्रकार यहां के पण्ड़ित लोग शीत काल समाप्त होने पर शाम के समय टूटे बर्तन मिट्टी के मटके इत्यादि रस्सी से बांध कर घर के बाहिर लटका कर रखते है और अगले दिन प्रातः गलियों में घसीट कर चौराहे पर पटक कर एकत्र करके आग लगाते है और रात के समय मशाले जला

कर प्रकाश किया जाता हैं परन्तु अब मशालों के अभाव के कारण घास जलाकर उस प्रथा को निभाया जाता है। अत: यह क्रम उसी घटना से सम्बन्धित

होने का प्रमाण हो सकता है। इस पर्व को बसन्त ऋतु के आगमन के साथ जोड़ा गया है।

विमल कुण्ड़

भगवान विष्णु के चक्र से अण्ड़कार कटने के कारण उसमे से निकलने वाली चाका देव नदी चक्रेश्वरी कहलाई तथा अण्ड़कार के दो भाग विमल कुण्ड़ और कमल कुण्ड़ के नाम से प्रख्यात हुए । हिमालय की गोद में जन्मे मार्तण्ड़ नाग राज को इस का अधिपति बनाया गया । कुछ विद्धान विमल कुण्ड़ का स्रोत भूमिगत। झील मानते है जो राजा नार के समय

ससरावा नागों के देवता तथा मार्तण्ड़ क्षेत्र के ब्राह्मणों के क्रोध के कारण धरती में समा गई । लारेन्स द्वारा लिखी पुस्तक में इस का विवरण दिया गया है । यह झील भौम ऋषि के आश्रम के पूर्व दिशा में कहीं थी जो आधुनिक समय में बूम.जू गांव कहलाता है और मार्तण्ड़ राज के समीप है परन्तु प्रो. भुलर तथा एम. ए. स्टेन उस झील को ससरमनाग मानते हैं।ऐसा भी माना जाता है कि ज़ामतुरनाग अर्थात जमात्रानाग नामक झील जो कोहिनार चोटी के समीप ही है विमल कुण्ड़ का स्रोत हो सकता है। ये श्री अमर नाथ जी के मार्ग में और भर्ग-शिखा पर्वत के पूर्व दिशा में कहीं स्थित है। परन्तु मार्तण्ड़ के पण्ड़ित विमल कुण्ड़ का स्रोत शेषनाग मानते है जिस का आधार वे कुछ धर्मग्रंथ मानते है कुछ भी हो भगवान शंकर की कृपा सदा इस तीर्थ पर रही है क्योंकि श्री अमर नाथ जी के पुजारी इसी तीर्थ के पण्ड़ित माने जाते है और श्री अमर नाथ जी की यात्रा के पश्चात इस तीर्थ पर स्नान करना शुभ माना जाता है । इतना ही नहीं यात्रा प्रारम्भ करने का प्रथम

पड़ाव भी इस तीर्थ को माना जाता है । पवित्र छड़ी इस तीर्थ पर दो दिन विश्राम करती है। सर्वप्रथम राजा राणादित्या ने इस तीर्थ की ओर ध्यान दे कर विमल कुण्ड़ का उचित रुप तथा आकार दिया इस से पूर्व यह जलाशय बहुत विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था दूसरा कुण्ड. भी इसी हालत में परन्तु आकार में छोटा था । राणा दित्या ने इन कुण्डों पर पत्थर लगवा कर गोल आकार दिया दन्त कथाओं के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि राणा दित्या ने ही यहां विमल कुण्ड. के ठीक ऊपर मन्दिर बनवाया इतना ही नहीं यहां सें तीन कोस की दूरी पर एक सूर्य मन्दिर बनवाया उसी मन्दिर के आधार पर उस स्थान का नाम सिरी जो बाद में 'सीर' कहलाया । डा. कनिगंहम और कुछ अन्य विद्धानों ने मार्तण्ड. मन्दिर राणा दित्या द्वारा बनाये जाने की पुष्टि की है और ललिता दित्या ने उस मन्दिर की मरम्मत की थी । जे.ए.एस.बी. 1848 या लारेन्स पृ. 186 । उन का ऐसा मानना उचित ही है क्योंकि

मार्तण्ड़ तीर्थ का सूर्य मन्दिर भी मार्तण्ड़ मन्दिर कहलाता है । राणादित्या के बाद ललितादित्या ने इस तीर्थ की ओर ध्यान दिया । उन के राजकाल में ही इस तीर्थ के अन्य स्थानों पर मन्दिर बनाये गए तथा नयी मूर्तियों की स्थापना करके इस तीर्थ की शोभा बढ़ाई । इतना ही नहीं यहां से एक मील की दूरी पर एक भव्य मन्दिर का निर्माण कराया जो पूरे संसार में ' मार्तण्ड़ मन्दिर ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इस मन्दिर में शिक्षा अध्ययन का प्रबन्ध भी था वहां गुरुकुल की भांति शिष्यों के रहने खाने पीने तथा अध्ययन की पूरी व्यवस्था थी । मार्तण्ड़ तीर्थ के पास कई महल बनाये गए कुण्ड़ों का उचित आकार देने पर मछिलयां बढ़ने लगी उन्हें मछ़ कहते है अत: इस स्थान को मार्तण्ड़ के बदले मछ भवन का नाम पड़ा । आठवी शताब्दी के बाद दसवी शताब्दी में महारानी दिदा ने इस क्षेत्र की ओर ध्यान दिया। उस के राज्यकाल में इस तीर्थ को सजाया संवारा गया । नये महलों का निर्माण किया गया पुराने महलों के स्थान को प्राणि भवन कहा जाने लगा

कहा जाता है कि तीर्थ के ठीक ऊपर भर्ग शिखा पर्वत के दामन में समतल पठार पर महारानी दिदा का विश्रामगृह था । इसीलिए उस स्थान को दिदा टेंग कहते थे जो आजकल ददा टेंग के नाम से प्रसिद्ध है । रानी दिदा के पश्चात राजा रामदेव ने इस तीर्थ की ओर ध्यान दिया । उसने विमल कुण्ड़ तथा कमल कुण्ड़ का नया आकार और रुप दिया । चूना और पत्थरों का उपयोग करके चार कोणों के सुन्दर तलाबों का आकार दे कर उस समय के अनुसार उत्कृष्ट नमूना तैयार करवाया उन्हों ने एक और लकडी का सुन्दर मन्दिर ठीक उसी स्थान पर बनवाया जहां पर आजकल श्री राम जी का मन्दिर बनाया गया है । इस बात का अनुमान एक प्राचीन गीत सें लगाया जाता है जो यहां के बुज़र्ग लोगों ने अपने बुज़र्गों से सैंकड़ों साल पूर्व सुना था और न जाने कितनी शताब्दयों से गाते आ रहे है जिस की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है :-

सदा से चला आ रहा है अखण्ड. है

यही मार्तण्ड है यही मार्तण्ड है ।

राणा ने संवारा ललिता ने सजाया
सम्राटों ने आकर शीश नवाया
कश्यप जी का सर्वप्रिय भूखण्ड है
यही मार्तण्ड है यही मार्तण्ड है ।

बनाया मन्दिर रामदेव ने जो कुण्ड पर
किये प्राण त्याग उस ने आखिर वहीं पर
पितृ तारणी नाव कहे मार्तण्ड है
यही मार्तण्ड है यही मार्तण्ड है ।

शंहशाह भी देखे मुगुल राज देखा
जल से भरा सदा यह कुण्ड देखा

हिन्दू राजाओं के पतन के बाद बड़शाह .जेनुल आबुदीन ने इस तीर्थ की ओर ध्यान दिया । 'शाहकोल' नहर इस तीर्थ की पहाड़ी के ऊपर से निकाली गई । उनके शासनकाल में भीमा भगवती ,भैरव घाट, संगम तथा गौतम नाग के मन्दिरों की मुरम्मत की गई तथा नई मूर्तियों की स्थापना की गई । सतारहवी शताब्दी के अन्तिम दशक में सम्राट अकबर तथा उनके मंत्री राजा

टोडरमल तथा बिहारी चन्द्र ने मन्दिर का निर्माण किया। उनके दौर में इस क्षेत्र को अधिक महत्व मिला। जहांगीर ने इस तीर्थ के हर धार्मिक स्थल पर चिनार के बाग लगवा कर इस की सुन्दरता में बढावा किया उन सभी सात स्थानों पर जहां यात्री दर्शन करने जाते थे, या विश्राम करते थे उन संभी स्थानों पर चिनार के बाग लगाये गये ।

डोगरा राज में इस तीर्थ को अधिक बढावा मिला क्योंकि प्राचीनकाल से ही जम्मू तथा पंजाब सें अधिकतर यात्री इस तीर्थ पर आते थे शेष भारत सें तीर्थ यात्रियों की संख्या दुर्गम मार्गों तथा यातायात की कमी के कारण समीप के प्रांतों की अपेक्षा कम ही होती थी । फिर भी ह.जारों श्रद्धालू हर साल इस तीर्थ पर आते थे श्री अमर नाथ जी की यात्रा के महीनों में तो यहां अधिक भीड. लगी रहती थी । महाराजा गुलाब सिंह जी कई बार आए और उन्होंने इस क्षेत्र की प्रगति के लिए समय समय पर अपना योगदान दिया । उन के बाद महाराजा प्रताप सिंह जी ने यहां के प्राचीन सूर्य मन्दिर का

आधुनिक रुप दे कर संगमरमर की सूर्य देव की सुन्दर मूर्ति मंगवा कर उस नवर्णिमित मन्दिर में स्थापित कराई । विमल कुण्ड. के ऊपरी भाग में बना हुआ आधुनिक मन्दिर महाराजा प्रताप सिंह जी द्वारा बनवाया गया है । उस के कुछ समय पश्चात श्री जीवन बट हक्कू की परम भक्ति श्रद्धा तथा परिश्रम से श्री राम मन्दिर का निर्माण हुआ और श्री राम माता सीता तथा लक्ष्मण की अति सुन्दर मूर्तियों की स्थापना की । परन्तु लगभग सौ वर्ष के अन्तराल के बाद 2002-03 में उस मन्दिर का पुर्न निर्माण मार्तण्ड. पुरोहित सभा द्वारा किया गया । राजस्थान में बनवायी गई मार्तण्ड़ नागराज की भव्य मूर्ति का अनावरण 7 जून 2009 को राज्य के उप-मुख्यमंत्री श्री तारा चन्द जी के कर-कमलों से हुआ ।

बीसवी शताब्दी में महाराजा हरि सिंह की पत्नी महारानी कटोच श्रीमती तारा देवी जी ने विमल कुण्ड़ तथा कमल कुण्ड़ का नया रुप दिया यह कुण्ड़ पहले सात फुट गहरे थे परन्तु अब इस को पक्का और चौड़ा

मार्तण्ड़ यात्री भवन
मार्तण्ड़ तीर्थ सभा द्वारा निर्मित मट्टन



किया गया । पत्थरों को तराश कर सीमेंट लगाया गया जिस के लिए सारा पानी निकालना पड़ा इस लिए दस फुट गहरी नालियां खोदी गई और सभी मछलियों को बहुत सावधानी से तीसरे कुण्ड़ में ले जाया गया उस कुण्ड़ को गौरी कुण्ड़ कहा जाता है परन्तु कुछ लोग उसे काना नाग या कोन नाग के नाम से जानते है । इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि यह कुण्ड़ दलदल तथा गदले पानी से भरा रहता था । विमल कुण्ड. में पानी निकलने के दो मार्ग बने हुए थे जिन पर खिड.कियां लगायी गई । वहां दो बड.ी मछलियां मछ. ऐसे भी थे जिन में से एक की सोने की बाली लगी थी तथा दूसरे को सोने की नथ । इन मछिलियों को 1960 तक लोगों ने देखा हैं। विमल कुण्ड़ को पक्का तथा सुन्दर रुप देने के बाद चार दीवारी की गई और कमल कुण्ड़ के बीच में पत्थरों का एक सुन्दर मन्दिर बनाया गया यह पत्थर दिवर नामक स्थान से लाये गए इस कुण्ड के चारों कोणों में सीढियां बनाई गई पत्थरों तथा सीमेंट की चार दीवारी करके आने जाने का मार्ग

बनाया गया । कमल कुण्ड के बीच में पत्थरों का एक सुन्दर मन्दिर बनाया गया जिस के कारण इस तीर्थ राज की नई पहचान बन गई । पानी निकालने के लिए नालियां खोदते समय निचले हिस्से में कई मूर्तियां प्राप्त हुई । कहा जाता है कि एक बहुत बड़ा शिव लिंग भी मिला था जिस को निकाला न जा सका । सातवी शताब्दी के दो पत्थर गौरी कुण्ड़ की ओर जाने वाले पानी के छोटे से कुण्ड़ में लगाये गये । जो ललिता दित्या द्वारा बनाये गए मार्तण्ड़ मन्दिर में पाये गए खुदे हुए पत्थर जैसे ही है । कुछ साल बाद राविलपिण्ड़ी की दो महिलाओं मायादयी और सुखदयी ने इन कुण्ड़ों को और सुन्दर बनाने के लिए संगमरमर के पत्थर लगवाने का बीड़ा उठाया उन्होंने चन्दा एकत्रित करके यहां के निवासियों के सहयोग से विमल कुण्ड़ में संगमरमर के पत्थर लगवाये परन्तु कुछ लोगों के व्यवहार से क्षुब्ध होकर अपना निश्चय अधूरा छोड़ कर वापिस चली गई जब मार्तण्ड़ नहर बन रही थी वहां पर कार्य निरीक्षक श्री नन्द लाल मूसा ने चाका नदी

का सुलझा रुप देने का विचार किया क्योंकि चाका नदी एक बड़े दरिया की भांति फैली हुई थी इस का अधिकतर भाग दलदल काई शिल तथा अन्य पानी के पौधों से भरी हुई थी । अत: नहर का काम समाप्त होने के बाद चाका नदी का आधुनिक रुप दिया गया।

इतिहास की उन अमूल्य धरोहर या निधि को यहां के निवासी सम्भाल कर रख न सके जिन में वह प्राचीन मूर्तियां तथा पत्थर भी शामिल थे जिन पर खुदाई करके कुछ लिखा हुआ था । एक पत्थर पर सम्वत 1697 अंकित था जो सम्राट अकबर के दौर का साक्षी था इसी प्रकार श्री सत्यनारायण जी की मूर्ति काले पत्थर की तीन मूर्तियां विष्णु भगवान की मूर्ति तथा कई अन्य आकृतियों की मूर्तियां लुप्त हो गई हैं । अनुमान लगाया जाता है कि पूरे तीर्थ राज में अर्थात गंगानन्द ,भीमाभगवती, संगम ,बोनगाम के शिव मन्दिरों तथा भैरव घाट में सतर से अस्सी प्राचीन मूर्तियां विद्यमान थी जिन में से अधिकांश खो चुकी है । लारेन्स ने अपनी पुस्तक द वेली आफ काश्मीर में

उस समय के अनुसार तुलमुला क्षीर भवानी और मछ्‌ भवन को सर्वश्रेष्ट धार्मिक स्थल माना है । इस बात का उल्लेख उन्होंने पृ0 298 में किया है

संदर्भ सूची :-

मार्तण्ड़ महात्म्य

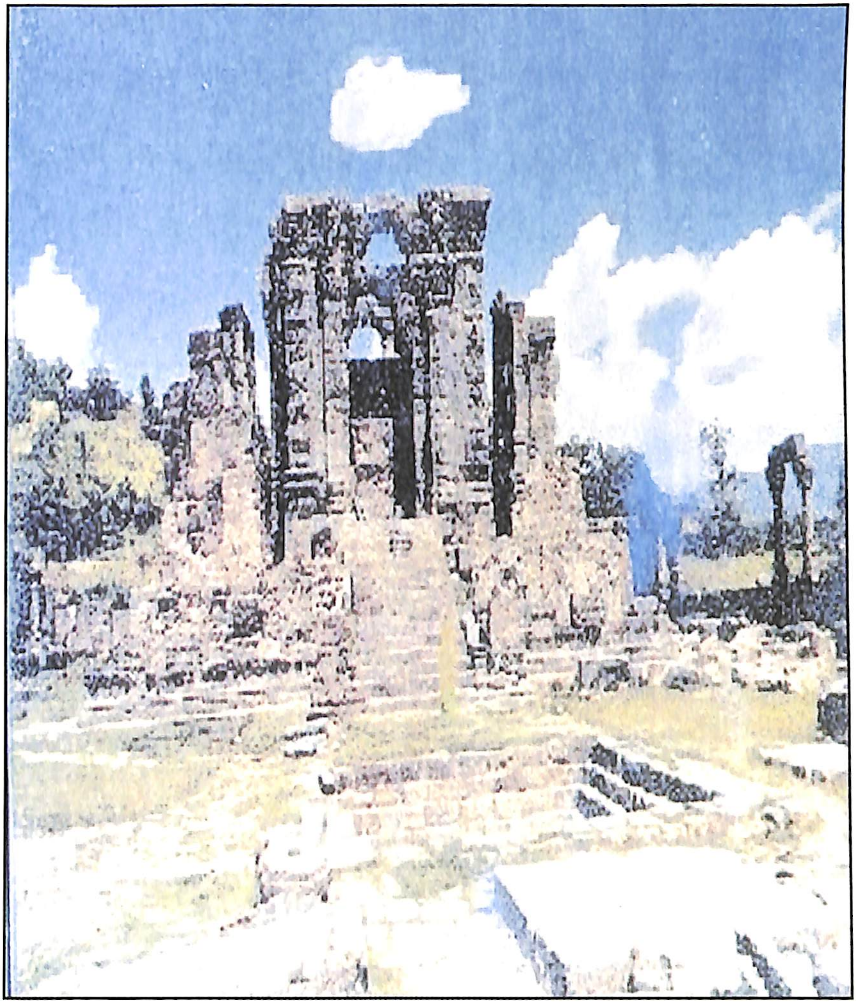
राजतरंगणी; अध्याय -6

- द. वेली आफ कश्मीर- लारेन्स पृ. 169;170;298
- आईन- अकबरी - तीर्थ ; पृ 358

  एम. ए. स्टेन ष्द्वारा अनुवाद राजतरंगणी पुस्तक नं0 1पृ. 40; 41;324;325;
- प्राचीन लेख
- नीलमत पुराण ।

✦ ✦ ✦ ✦

मार्तण्ड मंदिर



मार्तण्ड़ मन्दिर

मार्तण्ड़ तीर्थ राज से आग्नेय दिशा में एक मील की दूरी पर भर्गशिखा भगवती के पर्वत के बाये ओर संसार की सर्वश्रेष्ट कलाकृति का उत्कृष्ट नमूना स्थित है जिसको तीर्थ राज का ही नाम दिया गया है । मार्तण्ड़ मन्दिर भारत ही क्या पूरे विश्व के सुन्दर भवनों में शीर्ष बिन्दू है । यह मन्दिर ललितादित्या के शासनकाल में बनाये गये मन्दिरों स्तूपों और विहारों में सबसे बड़ा और उत्तम है । कई विद्वानों ने इस स्थान की प्राकृतिक छटा तथा भूगौलिक वातावरण देख कर इस मन्दिर को ताजमहल, पार्थीनान, सेंटपीटर मिस्र तथा यूनान के सुन्दर भवनों से सर्वोपरि माना है। पश्चिम के कुछ विद्वान यंगहसबंड, स्टेन, लारेन्स, कनिंगहम जैसे कई और इस को सर्वश्रेष्ट भवनों में एक मानते है । प्रकृति की गोद में प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण स्थान का चयन पूरे सोच विचार के बाद किया गया है । मार्तण्ड़ क्षेत्र का पूरा सर्वेक्षण करने के बाद ही उन्होंने इस

पहाड़ी का चयन किया होगा । इस मन्दिर की बनावट तथा बड़े बड़े पत्थरों को देख कर कोई भी आश्चर्य चकित हुए बिना नहीं रह सकता कि उस दौर में जब किसी प्रकार की आधुनिक सुविधा उपलब्ध नहीं थी इतने बड़े बड़े पत्थर इतनी ऊंचाई पर कैसे पहुंचा पाये होंगे यदि इस बात पर बारीकी से गौर किया जाए तो यह अनुमान लगाना अति सरल हो जाता है कि वे असाधारण कारीगर असाधारण सूझबूझ के पारखी थे । उन्होंने ऐसे ढ़लान की तलाश की होगी जो पूरी मिट्टी की हो और जहां खोदना सरल हो इसीलिए उन्होंने इस पहाड़ी का चयन किया जो समतल भूमि सें सतर अस्सी फुट ऊंची थी । बिना आधुनिक औज़ारों तथा मशीनों के ऐसा मन्दिर बनाना तथा इतने बड़े पत्थर इतनी ऊंचाई पर पहुंचाना केवल एक कला है अत: मेरा अनुमान है कि स्थान का चयन करने के बाद नक्शे के अनुसार लम्बाई 90गज़ तथा चौड़ाई 56 गज़ चारदीवारी के निशान लगा कर मध्य में पहाड़ी के ढलान पर

देवालय के छत का आकार बनाया होगा । उसके बाद इस मन्दिर को बनाने के लिए उन्होंने पांच भागों में बंटा होगा प्रथम भाग में उन्होंने निश्चित लम्बाई चौड़ाई तथा ऊंचाई के अनुरुप पहाड़ी के निचले भाग में 56 गज़ सीधे रेखा में इतनी गहराई तक खुदाई की होगी कि दीवार की निश्चित ऊंचाई देने पर पहाड़ी की ढ़लान पर मध्य में बनाये जाने वाले देवालय की छत के आकार के दिए गए निशान के सीध में रहे पहाड़ी को सीध में काट कर पश्चिम की ओर की दीवार बनाने के लिए मिटट्ी हटा कर निचले भाग को समतल कराकर नींव लगाई होगी एक ओर पहाड़ी की दीवार तथा दूसरी तरफ लकड़ी के फटटे लगाकर पहाड़ी के ढलान से पत्थरों को लुढ़क कर एक दूसरे उपर लगाया होगा ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार बागों तथा बाड़ियों में फट्टों का उपयोग किया जाता है परन्तु इस मन्दिर में एक तरफ पहाड़ी की ढ़लान और दूसरी तरफ फट्टे और खोदी गयी मिटटी को उपयोग में लाकर पत्थरों को हाथियो तथा मजदूरो द्वारा लुड़क कर आवश्यकता

के अनुसार एक दूसरे के ऊपर लगाते हुए तीन दिशाओं की दीवारों को बनाया होगा । मध्य भाग में पहुंच कर आगे की मिट्टी हटायी होगी और देवालय तथा मण्ड़प के आकार का टीला काट कर पिछली ओर से पहाड़ी की ढ़लान सें पत्थरों को लाते हुए छत बनाने के बाद मिटटी निकाली होगी और अन्त में पीछे की ओर की दीवार को पूरा किया होगा तथा चारों ओर की भूमि को समतल किया होगा। अतः मिट्टी पहाड़ी ढ़लान तथा उन कुशल कारीगरों की सूझबूझ के कारण ही यह असम्भव कार्य सम्भव हो पाया है ज़रुरी नहीं मेरा यह अनुमान सही हो परन्तु तथ्य सें अधिक दूर भी नहीं हो सकता क्योंकि इस प्रकार के प्राचीन मन्दिर या भवन पहाड़ी के दामन में ही बनाये गये है तथा पूरे ध्यान से देखने पर स्पष्ट होता है कि उस भवन के चारों ओर की भूमि ऊंची होती है तथा छत उस पहाड़ी के ढलान के सीध में अवश्य होगा । मार्तण्ड़ मन्दिर की बाहिरी लम्बाई 90 गज़ चौड़ाई 56 गज़ तथा

ऊंचाई 75 फुट रही होगी पत्थरों की लम्बाई 6 फुट 8फुट और 9फुट है मध्य भाग की लम्बाई 63 फुट और चौड़ाई 36 फुट है जहां देवालय बना हुआ है इस में 84 अंतराल तथा 84 खम्भे लगे हुए है मण्ड़प 18 फुट लम्बा तथा 18 फुट चौड़ा है । इस मन्दिर में 84 अर्ध प्रतिमाएं चारदीवारी में बनायी गई थीं तथा देवालय के चारों ओर खुदी हुई सैंकड़ों मूर्तियां इस की शोभा बढ़ाती है इतना ही नहीं यह मन्दिर प्रकृति की गोद में प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण है चारों ओर बर्फ से ढ़के पर्वत पीछे की ओर सदा बहार वन ओर तीन दिशाओं सें जहां तक नज़र जाती है हरे भरे खेत जिन के बीच में पानी के झरने नदियां और सर्प आकार की वितस्ता तथा लिद्दर दरिया मनमोहक दृश्य इस भव्य मन्दिर की सुन्दरता में चार चांद लगाते है यहां के निवासी इस मन्दिर को 'पाण्ड़वलघ्र' कहते है अर्थात पाण्ड़वों का मकान । इस मन्दिर की बनावट पत्थरों के स्तम्भ और खुदे हुए चित्र बड़े बड़े पत्थर उस समय के शिल्पियों की कलात्मक दक्षता और निपुणता दर्शाती है।

प्राचीन काल का यह मन्दिर वास्तुकला का अदभुत नमूना है यहीं कारण है कि लोग महाभारत के असाधारण योद्धाओं को इस मन्दिर का निर्माता समझते है । क्योंकि पाण्ड़वों के अज्ञातवास के समय में इस क्षेत्र में रहने के कई प्रमाण मिले है । इतना ही नहीं जम्मू किश्तवाड़ इलाकों में भी कई मन्दिर जलाशय कुंए उन के नाम के साथ जुड़े है और वहां के निवासी उन से जुड़ी हुई कहानियां और घटनाये सुनाते हैं । पाण्ड़व इस वन में कुछ समय तक रहे हैं उन का आश्रम इस स्थान के आस पास ही कहीं रहा होगा जिस के कारण उस समय के लोगों ने इस स्थान को पाण्ड़वलघर कहा होगा । परन्तु पटोलमी के अनुसार पाण्ड़व दूसरी शताब्दी तक इस क्षेत्र पर शासन करते रहे "सिरका उतम बिदासुपम पाण्डूवरम रिजयो" ला0 पृ0 165 । मन्दिर बनने के बाद भी इस स्थान का नाम उनके साथ ही जुड़ा रहा कुछ इतिहासकार राणादित्या या उसकी पत्नी अमृतप्रखा को इस मन्दिर का मूल निर्माता मानते है यहां तक कि राजतिरंगनी में

347 में दो अलग अलग श्लोकों की व्याख्या संदेह में डाल सकती है परन्तु आगे के श्लोक में कल्हण ललितादित्या को इस मन्दिर का मूल निर्माता मानते है । मट्टन का मन्दिर राणादित्या ने बनाया था उस मन्दिर को भी मार्तण्ड़ ही कहते है । ललितादित्या द्वारा बनाये इस मन्दिर के बीच में एक जलाशय है इस के पानी का स्रोत कहां था इस का पता नहीं चल सका है। धरती में कई मठ गाढ़े गए हैं और कुछ बाहिर भी रखे हुए मिले है । उन मठों का आकार इतना बड़ा है कि एक एक में सात आठ मन चावल समा सकता है । कहा जाता है कि इन मठों के कारण ही प्राचीन 'महलों की नगरी' भवन, मार्तण्ड़ तीर्थ का नाम मट्टन पड़ा। जनश्रुति के आधार पर कहा जाता है कि बीसवी शताब्दी तक भी इस मन्दिर में कई अमूल्य मूर्तियां विद्यमान थी परन्तु शताब्दी के मध्य काल के समय से उन्हे देखा नहीं गया । यदि स्वतंत्र तथा गणतंत्र भारतवर्ष के आधुनिक दौर में जबकि अधिकांश लोग धर्म की अपेक्षा मानवता के पक्षधर है यदि समाज में

किसी एक समुदाय पर इतना अत्याचार किया जाए कि मातृभूमि को छोड़ना पड़े तो सुल्तान बुतशिकन जैसे दर्जनों क्रूर बादशाहों के दौर में इन स्थानों पर बने हुए मन्दिरों भवनों तथा सनातन धर्म की प्राचीन कलाकृतियों की क्या हालत की होगी इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है । स्टेन तथा लारेन्स अपनी पुस्तकों में स्पष्ट शब्दों में लिखते है कि कश्मीर के अधिकतर मकान, मकबरे, मस्जिदें तथा मज़ार हिन्दुओं के प्राचीन धार्मिक स्थलों पर बने हुए हैं । परन्तु मार्तण्ड़ मन्दिर की यह दशा कब और किस ने की इस में मतभेद है कुछ विद्वानों का मानना है कि सिकन्दर बुतश्किन ने इस मन्दिर को गिराया परन्तु कुछ इतिहासकार मोहम्मद खान या शाह हमदानी द्वारा इसके गिराने की पुष्टि करते है । लारेन्स लिखते है कि सिकन्दर ने मार्तण्ड़ मन्दिर को गिराने तथा तोड़ने का प्रयास किया परन्तु वह सफल नहीं हुए । पृ. 191 । हमदानी ने इस के तोड़ने के लिए पूरे एक साल तक लकड़ी एकत्र की तथा उस लकड़ी को अन्दर रख कर

जला कर इस मन्दिर को गिरा दिया । परन्तु दोनों मत अनुमान पर आधारित है अत: सचाई कुछ और ही हो सकती है यदि इन तीनों के दौर में इस को गिराया गया होता तो इस मन्दिर का कहीं नामोनिशान नहीं होता क्योंकि उन के दौर में जितने भी मन्दिर गिराये गए उन पर मस्जिदे बनायी गयी । जन श्रुति के आधार पर दूसरा कारण यह है कि सिकन्दर मार्तण्ड़ क्षेत्र तक पहुन्च नहीं पाये अर्थात बिजबिहारा का मन्दिर गिराने के बाद जब वहां मस्जिद बनाने लगे तो वह यह देख कर हैरान हुए कि दिन में की गई चिनाई रात में गिर जाती थी।"बिस्मलाय मंत्रेन यूजिपित ब्रिजेश्वरा "। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी जब वह मस्जिद पूरी न कर सके तो उन्हे हार कर एक हिन्दु शंकर पण्ड़ित की सहायता लेनी पड़ी । उस घटना को' शेंकरिन मकिच् 'अर्थात शंकर की कुल्हाड़ी नाम से जाना जाता है । जिस का प्रभाव सिकन्दर पर इतना पड़ा कि उस ने मन्दिरों के बदले ब्रह्मणों को समाप्त करने पर बल दिया। एक और दन्त कथा के

आधार पर । माना जाता है कि विजेश्वर मन्दिर गिराने के पश्चात जब वह वितस्ता के किनारे पर बने दूसरे मन्दिर को तोड़ने पहुंचे तो उन्हों ने मन्दिर के सामने पत्थर पर एक श्लोक लिखा हुआ देखा सिकन्दर को उस श्लोक का मतलब जानने की इच्छा हुई। बहुत प्रयत्न करने के बाद इस शर्त पर एक गुजर एक पण्ड़ित को लाने पर राज़ी हुआ कि उस को मारा न जाए पण्ड़ित जी ने जब उस श्लोक का मतलब सुनाया सिकन्दर बुतश्किन ने मन्दिर तोड़ने का विचार त्याग दिया । उस में लिखा गया था कि सिकन्दर नाम का राजा यहां तक आये गा ज़रुर परन्तु इस स्थान के आगे जा नहीं पाये गा।कहा जाता है 1416 में सिकन्दर की मृत्यु इस घटना के कुछ दिन बाद ही हो गयी । इस बात की पुष्टि इस सचाई से भी स्पष्ट होती है कि अन्नतनाग ज़िले के सभी प्राचीन तीर्थ अपने प्रचीन स्थानों पर ही विद्यमान है । मार्तण्ड़ मन्दिर को आग से गिराया गया है इस बात का खण्ड़न दो कारणों से किया जा सकता है यदि हज़ारों मन लकड़ी जलाने से इस

मन्दिर को गिराया गया होता तो यहां पर रखे गये दर्जनों मठ सम्पूर्ण और साफ नहीं मिलते। कुछ ज़मीन में गाढ़े हुए और कुछ बाहिर रखे हुए इस बात को नकारते है । दूसरा कारण यह है कि यदि मान लिया जाए कि आग से इस को गिराने की चेष्टा की गई परन्तु इस ठोस भवन में ऐसा कुछ था ही नहीं जिसको आग पिघला सकती यदि उसी से गिरी भी फिर भी ये भारी पत्थर वही पास में गिर जाते न कि सैंकड़ों मीटर दूर गिर जाते । यहां गांव के बीच में खेतों में तथा नहर के दूसरी ओर भी कई पत्थर आज भी पड़े हुए मिलते है जिन्हें उस स्थान से हटाया न जा सका तो क्या यह सम्भव हो सकता कि आग या भूकम्प के कारण इतने भारी पत्थर उड़ कर इतनी दूर गिर संकते कुछ पत्थर टूटे हुए मिले है ज़िन के टुक्ड़े भिन्न भिन्न स्थानों पर प्राप्त हुए । अत: यह निष्कर्ष निकालना सरल है कि इस मन्दिर को बारुद से गिराया गया है परन्तु सिकन्दर या हमदानी के दौर में बारुद का उपयोग नहीं होता था अत: यह साफ है कि उस दौर में

इस मन्दिर को नहीं गिराया गया है । पंद्राहवी शताब्दी के आरम्भ से ही यहां के मूल निवासियों के लिए अन्धकार युग प्रारम्भ हुआ जिस का अन्त अभी तक भी नहीं हुआ बीच बीच में कुछ धर्मनिरपेक्ष शासकों के दौर में राहत अवश्य मिली परन्तु पूर्ण रुप से कभी भी शांति प्राप्त न हुई । पंद्राहवी शताब्दी में यहां के निवासियों को धर्म परिवर्तन भागने या मरने पर मजबूर किया गया। कहा जाता है कि सिकन्दर ने पांच सौ किलो यज्ञोपवीत उन ब्राह्मणों के जलाये जिन्हें बेरहमी से मारा गया । अधिकतर लोगों ने धर्मपरिवर्तन करना ही उचित समझा जिस के कारण कश्मीर में इस्लाम धर्म को मानने वालों की संख्या अधिक हुई तथा हिन्दू अल्प संख्यक बन गए । कहा जाता है पंद्राहवी शताब्दी में कश्मीर में हिन्दुओं के कुल ग्यारह परिवार रह गये। बाद में भागे हुए हिन्दुओं को ज़ेनुलआबुदीन ने पुन: यहां बसाया । परन्तु चको;पठानो; असद खान ;नादिर शाह ;मदद खान ;अता मोहम्मद खान जैसे पठानों ने कश्मीर में बचे हुए

मन्दिरों तथा हिन्दुओं का सफ़ाया करने में कोई कसर न छोड़ी यद्यापि ऐसे क्रूर राजाओं का दौर बहुत ही कम समय का रहा परन्तु इन की क्रूरता की कहानियां बहुत लम्बी है। मोहम्मद शाह के दौर में हिन्दुओं को पगड़ी पहनने की इजाज़त नहीं थी असद खान के दौर में हिन्दुओं का सिर काटना फूल काटने से अधिक सरल हो गया था अपितु पठानों के दौर में शासकों ने क्रूरता की सभी सीमाएं पार कर ली । इसी कारण इतिहासकार पठानों के दौर को सबसें अधिक क्रूरता का दौर मानते हैं । अतः पठानों को ही मार्तण्ड़ मन्दिर गिराने का दोषी मानना अनुचित नहीं है जैसा कि दन्त कथाओं में कहा जाता है । इस में संदेह नहीं कि बीच बीच में क्रूर शासकों के बाद अच्छे राजाओं तथा महाराजों के दौर भी आते रहे जो यहां के अल्पसंख्यक बने मूल निवासियों के ज़ख्मों पर हीलिंग टच नामक मलहम लगाकर उन के कष्टों को दूर करने का प्रयास करते । इस में कोई संदेह नहीं कि चौदाहवी शताब्दी के बाद कश्मीर में कोई ऐसी पीड़ी न गुज़री जिस ने

अन्धकार युग की क्रूरता के दर्शन अपने जीवनकाल में न किए हो । यहां तक कि स्वतंत्रता के पश्चात भी कई बार यहां के निवासियों को अनेक कष्ट झेलने पड़े परन्तु केन्द्र ने कभी भी उन कष्टों का निवारण करने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए। उन छोटी छोटी चिंगारियों ने अग्नि का रूप धारण कर लाखों लोगों को घर से बेघर कर दिया।

✦✦✦✦

हरत्याधिरात्रि त्रिदशपति तुल्यं च विभवम्
नमस्त मार्तण्ड़म कमलमिति संज्ञामुपगतम्

भौम जू (बुम.जू)

मार्तण्ड़ तीर्थ के उत्तर की ओर 0.8 कि. मी. दूर " बुमजू' नाम का गांव है जो भौम ऋषि के नाम पर बना है । भौम ऋषि इसी स्थान पर रहते थे अत: इस स्थान को भौम जू का नाम पड़ा जो बिगड़ कर बुमजू बन गया । यह भाग बहुत विद्वानों ऋषियों तथा प्रकांड़ ब्राह्मणों का गढ़ था । यहां के प्राचीन मन्दिर तथा गुफाये इस बात के साक्षी है । इन मन्दिरों में से लिद्दर के किनारे वाले भव्य मन्दिरों को पठानों के दौर में दरगाह बना कर इस स्थान की प्राचीन निधि को समाप्त करके उसे नई पहचान दी गई । उस स्थान को आजकल बाबा रामदीन ऋषि तथा रुकूदीन ऋषि की दरगाह के नाम से जाना जाता है । समतल भूमि से 60 फुट ऊंचे पहाड़ पर स्थित गुफा कालदेव मन्दिर कहलाता है जिस का मुख्य द्वार 50 फुट खुला है और अद्भुत कलाकृति दर्शाती है अन्दर की सीड़ियां तथा

ऊंचा और चौड़ा पिण्ड जिस पर मन्दिर का आकार दिया गया था तथा प्राचीन मूर्तियां विद्यमान थी इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि यह मन्दिर अपने समय में बहुत ही आकर्षक और सुन्दर रहा होगा और किसी महान ऋषि की तपोभूमि रही होगी । कन्निगहम तथा लारेन्स इन मन्दिरों को पहली और दूसरी शताब्दी का बना हुआ मानते है । ड़ा0 स्टेन इसे भीम केशव मन्दिर जैसा मानते है जो राजा भीमसाही ने दसवी शताब्दी में बनाया था जिस का राज्य काबुल तक फैला हुआ था इस बात का वर्णन कल्हन ने राजतिरंगनी में किया है । ड़ा0 हुगल लिखते है कि बुमजू की गुफाओं का इतिहास बहुत ही रोमांचक महत्वपूर्ण तथा प्रत्यक्ष है । उन्हें इस बात का ज्ञान अपनी यात्रा के समय हुआ जब वह इस क्षेत्र में उन्नीसवी शताब्दी में आए । उस ने इस स्थान के प्राचीन इतिहास का वर्णन अपनी पुस्तक में इस प्रकार किया है । राजा विभीषण के निधन के बाद राजा नार काली सम्वत 2108 अर्थात सन् 993 ईसा

पूर्व में सिंहासन पर बैठे । उसके राज्य में एक ब्राह्मण ने नागों के देवता ससरावा की पुत्री चन्द्रसाहा से विवाह किया । वे एक झील के समीप रहते थे जो राजा नार द्वारा बसायी गई नगरी के समीप ही थी । एक दिन चन्द्रसाहा झील के तट पर घूम रही थी कि राजा नार वहां पहुंच गये । चन्द्रसाहा का असाधारण सौन्दर्य देख कर राजा नार उस पर मोहित हुआ । उसने चन्द्रसाही का यह सोच कर हाथ पकड़ा कि वह उस का वैभव देखकर उसको अपनाये गी परन्तु उसका यह अनुमान गलत था । उसे यह जान कर निराशा हुई कि वह विवाहित थी । अत: उस ने चन्द्रसाहा को बलपूर्वक पति से दूर लेने का निश्चय किया परन्तु वह इस चाल में भी सफल न हो सका । जब ब्राह्मणों को इस की सूचना मिली वे बहुत क्रोधित हुए । इस अपमान का बदला लेने के लिए क्रोधित ब्राह्मणों तथा ससरावा ने अपने तपोबल से वायु देवता का तूफान के रुप में आवाहन किया कहा जाता है कि उस तूफान के वेग से धरती में

एक द्वार खुला जो राजा नार को दरबारयों समेत निगल गया । परन्तु राजतरंगणी में कल्हण श्लोक 259 अध्याय-1 में नारपुरा तथा राजा नार का अन्त ससरावा द्वारा तपोबल से प्रकट की गई मेघअग्नि से बताया गया है। उस भयंकर दृश्य को कल्हण ने इस प्रकार लिखा है। "जली हुई लाशें;रक्त और शरीर के अन्य पदार्थ वितस्ता के पानी के साथ ऐसे बह रही थी जैसे मोर के पंख पानी पर बह रहे थे ।" ससरावा की बहन नागिन रामण्या ने भी इस कार्य में उन की सहायता की । भवन नगर के पर्वत के पत्थर उस झील तथा स्थान पर गिराये गये । यह कार्य पूरा करने के पश्चात जब ससरावा नाग ने नारपुर का यह दृश्य देखा तो उसे बहुत दुख हुआ। अत: उस ने वहां से दूर जाने का निश्चय किया; वह अपने परिवार को ले कर दूर पर्वतों के मध्य सफेद पानी की झील के पास आये और वहीं निवास किया । उसने अपने ब्राह्मण जमात्रा विशाखा को नाग बना कर थोड़ी दूरी पर निवास स्थान

बना कर दिया जिस को जमात्रानाग के नाम जाना जाता है।अनुमान लगाया जाता है कि वह स्थान जहां ससरावा नाग रहने लगा वह स्थान आजकल शेषनाग कहलाता है इसी कारण कश्मीर के अधिकांश ग्रामीण वृद्ध लोग शेषनाग को ससरमनाग कहते है। कहा जाता है बुमजू वही स्थान है जहां से उस झील का मार्ग था जहां पहले ससरावानाग रहता था। यहां की गुफाएं उसी काल की हैं । डा0 ग्रोवस ने भी अपने लेख में ऐसे ही विचार प्रकट किये है । परन्तु लारेन्स इन गुफाओं को आर्यों द्वारा बनाये उत्कृष्ट नमूने मानता है । यहां की दूसरी गुफा तो इतनी लम्बी है कि अभी तक कोई भी इस का अन्तिम छोर खोज न सका । इस गुफा का द्वार साढ़े तीन फुट तथा ऊंचाई लगभग सात फुट है परन्तु ज्यों ज्यों भीतर जाते है तो आगे की चौड़ाई और ऊंचाई भीतर जाने के मार्ग से अधिक है एक स्थान पर एक बड़े कमरे जितना स्थान है और कई अलग अलग छोटे मार्ग । जितना भी अन्दर चले जाए अन्धेरा ही

अन्धेरा और सीधा मार्ग कहीं अन्त नहीं होता । कुछ विद्वान इस को किसी प्राचीन दरिया का मार्ग मानते है जिस का स्रोत अचानक बन्द हो जाने के कारण गुफा का रुप धारण कर लिया । परन्तु इस बात का खण्ड़न इन कारणों को ध्यान में रख कर किया जा सकता है । यदि यह किसी दरिया का मार्ग रहा होता तो इस की बनावट ऐसी नहीं होती । क्योकि अन्दर जाने का मार्ग तंग है परन्तु आगे जाने पर कई स्थानों पर बड़े कमरों जितनी जगह और नीचे समतल फर्श का होना उन के विचार को गलत मानने पर विवश करते है यदि यह गुफा कभी दरिया का मार्ग रहा होता तो इस गुफा के पत्थर लचकदार और गोल होते तथा फर्श समतल नहीं होता परन्तु यहां ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं होता । ऐसा प्रतीत होता है कि यह गुफा प्राचीन राजाओं का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का गुप्त मार्ग रहा हो जिस के बाहिर जाने के अन्य द्वार धरती पर आने वाले भीतरी या बाहिरी परिवर्तनों के कारण बन्द हो गये हों

। क्योंकि इस गुफा के बहुत अन्दर जाने पर दम घुटने लगता है और कहीं भी इस का अन्त नहीं मिलता । जनश्रुति के आधार पर यहां के कुछ लोगों का कहना है कि एक साधू इस गुफा का अन्तिम छोर ढूंढ़ने भीतर चला गया उसके साथ उस का कुत्ता भी था परन्तु वह लौट कर वापिस न आ सका । कुछ दिन बाद कुत्ता बाहिर आ गया उस की गर्दन में एक पत्र था जिस पर लिखा था कि खाद्य सामग्री समाप्त हो जाने के कारण आगे जाना कठिन है । अत: यह गुफा कितनी लम्बी है यह कब किसने और क्यों बनाई गई एक रहस्य बनी हुई है । परन्तु अनुमान लगाया जाता है कि अवश्य ही यह कोई गुप्तमार्ग रहा है । क्योंकि अन्य स्थानों पर पाई गई गुफाओं तथा उन सें सम्बन्धित लोक कथाओं से यह निश्कर्ष निकालना अनुचित नहीं है । भद्रवाह में वासुकी नाग के स्थान पर लोक भवन में बादशाह पिण्ड़ की गुफा श्रीनगर पुलवामा तथा अन्य स्थानों पर मिली गुफाओं से पता चलता है कि प्राचीन समय में राजाओं

ने धरती के भीतर से मार्ग बनाये थे जो पहाड़ों तथा जंगलों के दुर्गम मार्गों की अपेक्षा अति सरल थे यह गुफा भी उन्हीं मार्गों में से एक हो सकती है ।

✦✦✦✦

श्री परमानन्द जी

१७१४-१८६१



श्री परमानन्द जी

"परमानन्द जी की कविताएं मानवीय संवेदनाओं; लयबद्धता; गतिशीलता तथा भावुकता से परिपूर्ण हैं। उन्होंने अपना एक विशष्ट काव्य शिल्प विकसित किया ;जिस के कारण उनकी इस कला निपुणता की बराबरी कोई न कर सका।''

मास्टर ज़िन्द कौल

मार्तण्ड़ क्षेत्र महान ऋषियों संतों वेदांतकों तथा प्रकांड़ ब्राह्मणों की जन्म भूमि रही है।। यहां जन्में विद्वानों ने कश्मीर ही क्या पूरे भारत में प्रसिद्धि प्राप्त की है।प्राचीन काल से ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों से यहां पठ्न पाठ्न के लिए विद्वान आते रहे हैं। प्राचीन भवनों तथा एतिहासिक स्थानों की वास्तुकला और यहां की भाषा में विभिन्न भाषाओं का समावेश होना इस तथ्य को स्पष्ट करता है। मार्तण्ड़ तीर्थ इस क्षेत्र का एक

प्रसिद्ध भाग है जो हज़ारों वर्षों से सनातन धर्म की ज्योति प्रज्जलवित करते हुए धर्म ;ज्ञान तथा एकता का प्रकाश फैला रहा है। मार्तण्ड़ इस नगरी का पौराणिक नाम रहा है। किसी देश में शायद ही कोई स्थान ऐसा होगा जिसके नाम इतनी बार बदल चुके हो। पुराणों में इस तीर्थराज को मार्तण्ड़ –;आईन–अकबरी में भवन– ; स्टेन ;लारेन्स ;हुगल जैसे कई विद्वानों की पुस्तकों में मछ़ भवन ;– भारतीय विद्वानों द्वारा लिखी धार्मिक पुस्तकों में मत्स्य भवन तथा आधुनिक काल में मटट्न नाम से प्रसिद्ध है। यह पवित्र स्थान कई उच्च कोटि के विद्वानों की धर्मभूमि तथा कर्मभूमि रही है। उन विद्वानों में श्री परमानन्द जी का स्थान सर्वोपरि है। उन का जन्म 1794 ई0 में सीर कानिलीगुण्ड़ नामक गांव में हुआ था अपने पिता जी श्री कृष्ण पंड़ित से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उर्दू ;फारसी और संस्कृत का अध्ययन किया । पिता की मृत्यु के बाद उन्हीं का पेशा पटवारी का कार्य अपनाया परन्तु प्रभु की साधना और भक्ति का मार्ग अपनाने के कारण

पटवारी का कार्य त्याग कर मार्तण्ड़ तीर्थ पर आने का विचार किया। उन के द्वारा लिखे गए फारसी गीतों तथा कश्मीरी लीलाओं;गीतों और भजनों ने लोगों के दिलों में उनके प्रति इतना आदर और सम्मान जागृत किया था कि मार्तण्ड़ के गनाई परिवार के एक प्रसिद्ध व्यक्ति सालेह गनाई ने 17 कनाल भूमि उन के नाम कर दी। परमानन्द जी को मार्तण्ड़ का सदस्य बनाना गनाई परिवार के योगदान का प्रतिफल है। फारसी कविताओं में उन्होंने 'गरीब' की उपाधि रखी थी ;परन्तु वे कविताएं उपलब्ध नहीं हैं। परमानन्द जी की कविताएं आत्मज्ञान और वैखरी का बड़ा स्रोत हैं। उनकी रचनाएं ऊंचे स्तर की होने के साथ साथ जनमानस के हृदयपटल पर गहरा छाप देती है। 'राधा स्वयंवर; सुदामा चरित्र ; अमरनाथ यात्रा ;कर्म भूमिका; कल ति छ़ाये उन की ऐसी रचनाएँ हैं जो भोग अभ्यास के अनुभव का महकता चमन है। सन् 1879 ई0 में परमानन्द जी अपना पंचभौतिक शरीर छोड़ कर ब्रह्मलीन हुए।

कश्मीर के इस सुप्रसिद्ध कृष्ण भक्ति के कवि ने अपनी विद्वता से सभी वर्ग के लोगों में एक उच्च स्थान प्राप्त किया था। उन के निधन के पश्चात गनाई साहब उन का श्राद्ध बड़ी श्रद्धा और शान से करवाते थे। कश्मीर के इस कवि की रचनाओं को समझने वाले लोगों की संख्या बहुत कम थी यदि उनकी ये अद्धितीय रचनाएं और किसी भाषा में होती तो इन की गणना विश्व के महानतम साहित्य के साथ की जाती । उनकी क़विताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद मास्टर ज़िन्द कौल ने व्याख्या समेत तीन भागों में किया है। 'ज्ञान प्रकाश' नामक पुस्तक में अधिकांश रचनाएं परमानन्द जी की है। 1960 ई0 में कश्मीर के प्रधान मंत्री बख्शी गुलाम मोहम्मद ने मटट्न में आयोजित जश्न-कश्मीर के एक कार्यक्रम में परमानन्द जी का एक गीत सुना।

"चन्दकुय रावि तस यस नि दियि दयं
द्रअलदस संचेत रोज़िय नि वय ।
रोनमुत अनि कअति बेयि यियिकति छाव
दियि नय दाति यस सु मंगने द्राव ।।"

जिस व्यक्ति पर प्रभु की कृपादृष्टि न हो उसकी जेब में धन टिक नहीं सकता। ऐसे कर्महीन का जुड़ा हुआ धन भी काफूर होकर खाने के लाले पड़ जाते है; यदि पकाने के लिए चावल मिल भी जाए परन्तु पकाते समय या जल जाएगे या कच्चे ही रह जाऐं गे। अत: उसी भक्त वत्सल की शरण लो औरों के सामने झोली फैलाने से क्या लाभ।

यह गीत श्री सोम नाथ मुसा द्वारा गाया गया । इस गीत से बखशी साहब इतने प्रभावित हुऐ कि उन्होंने उस गीत को पुन: सुनने की इच्छा व्यक्त की और उस गीत के रचनाकार श्री परमानन्द जी के नाम पर परमानन्द आश्रम नामक सराय बनवा कर अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री परमानन्द जी के अतिरिक्त इस मार्तण्ड़ तीर्थ पर कई और विद्वान हुए जिन की योग्यता तथा ज्ञान द्वारा की गई समाज सेवा अवर्णनीय हैं। इन कर्म योगियों में श्री कृपा राम दत्त, श्री गाश लाल ;श्री

नारायण जी खार ; श्री सुदामा कौल;श्री राम चन्द शास्त्री;श्री सअबदीन गनाई प्रसिद्ध हैं। वर्तमानकाल में श्री माखन लाल फोतेदार जो कई वर्षों तक भारत सरकार में मंत्री पद सुशोभित कर चुके है; श्री खुरशीद अहमद गनाई जो कश्मीर राज्यसरकार में एक चमकते सितारे की भांति चमक रहे है; ड़ा० श्री नाथ तिक्कू जो तिब्बिया कालेज दिल्ली में प्रधानाचार्य रह चुके है तथा श्री राम जी तिक्कू जैसे विद्वान मार्तण्ड़ के ही मूल निवासी हैं। इसके अतिरिक्त तंत्रविद्या ज्योतिषविद्या के कई प्रकाण्ड़ पंड़ित भी इस क्षेत्र में जन्में है, जिनमें श्री शिव राम; श्री सिरी नाथ शेर तथा प्रेम नाथ किच्चलू बहुत प्रसिद्ध थे।

श्री नारायण जी खार ने बहुत से धार्मिक ग्रन्थों का अनुवाद कश्मीरी भाषा में किया । जिन में से श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए गीता उपदेश का अनुवाद बहुत ही प्रसिद्ध है। उन्होंने सम्वत 2006 अर्थात सन् 1949 ई० में पुरोहित सभा मार्तण्ड़ की स्थापना की ;जो इस तीर्थ ; यहां के निवासियो;इस तीर्थ

पर आने आने वाले यात्रियों तथा श्री अमर नाथ जी की यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में किया गया। क्योंकि उन दिनों यात्रा का सारा प्रबन्ध करने की ज़िम्मेदारी मार्तण्ड़ के पुरोहितों की ही थी। अतः इन सभी दायित्वों को सही ढ़ंग से निभाने के लिए एक सभा की आवश्यकता थी जो नारायण जी खार जैसे विद्वानों ने पूरी की। उन्होंने इस सभा का गठन किया और इस का संविधान बना कर कुछ ऐसे नियम बनाये जो अभी तक लागू है। जिस के कारण इस तीर्थ की देखरेख तथा यहां के पुरोहितों की किसी प्रकार की समस्या का हल सभा के सदस्यों द्वारा किया जाता है।
सुदामा कौल एक प्रसिद्ध वैद्य थे दूर दूर के गांवों से लोग उन के पास आते थें। उन्होने भी कई संस्कृत में लिखे हुए धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद कश्मीरी भाषा में किया जिन में से भगवान शिव जी का महिम्नापार का कश्मीरी में अनुवाद प्रशंसनीय है। श्री राम चन्द शास्त्री सुप्रसिद्ध कथावाचक थे। उन्होंने लीलाओं और भजनों का योगदान दे कर समाज की सेवा की है। उन की

लीलाओं में पौराणिक संदर्भ मिलते है। विद्वानों ; बुद्धिजीवियों ;संतों तथा धार्मिक महिमा के कारण प्राचीन काल से ही इस तीर्थ की ख्याति दूर दूर तक फैली हुई थी । पूरे भारतवर्ष में कश्मीर के इस तीर्थ की पहचान है। परन्तु कश्मीर पर आधारित नीलमत पुराण के अनुवादकों ने अनुवाद करते समय इस तीर्थ के साथ अन्याय किया है। सदैव नाम परिवर्तन इस का एक कारण हो सकता है। चक्रेश्वरी ; चाका नदी या चक्रा नदी वही देवनदी है जो भगवान विष्णु के चक्र से अण्ड़कार कटने के बाद बहने लगी। प्राचीन काल से ही हज़ारों लोग इस पवित्र नदी के तट पर श्राद्ध करने प्रति वर्ष आते रहे हैं। कई प्राचीन ग्रंथों में इस का उल्लेख मिलता है। नीलमत पुराण में श्लोक 1051 के आगे के श्लोक मार्तण्ड़ तीर्थ के आसपास के पवित्र स्थानों के विषय में ही है । भीमा देवी मार्तण्ड़ बागन्दर का मन्दिर ; भद्रेश्वरी कनिन्गेंश्वर मन्दिर की नदी ; गोतमेशीं गौतमनाग की नदी मानी जा सकती हैं। इसी

प्रकार श्लोक 1054:-

"चक्रस्वामिसमीपे च दृष्टवा देवी हराङ्ग.गाम्
सर्वपापविनिर्मुक्तो रुद्रलोकमवचाप्नुयात ।।"

इस श्लोक की व्याख्या इस प्रकार भी की जा सकती है।मार्तण्ड़ तीर्थ के समीप ही शिवा देवी को अंकिन्गाम में देखकर मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो कर रुद्रलोक प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार श्लोक 1055;1061 भी मार्तण्ड़ क्षेत्र के विषय में ही है।

कार्तवीर्यार्जुनस्वामिं दृष्ट्वा तं च दिवाकरम् ।
मार्तण्ड़ं कश्यपस्वामिं विश्वकृतं .रविम् ।।

परन्तु अनुवादकों ने इस क्षेत्र को बहुत ही कम महत्व दिया है। अत: मार्तण्ड़ क्षेत्र के विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों को नीलमंत पुराण का अवलोकन करके मार्तण्ड़ के आस पास के सभी तीर्थों की प्राचीन स्थिति और महत्व को उजागर करना होगा क्योंकि कश्मीर का हर एक स्थान कोई न कोई धाम रहा है तथा हर स्थान की कोई न कोई महिमा रही है।

संदर्भ :-

राजतरंगणी-कल्हन

नीलमत पुराण

- मार्तण्ड़ महामात्य
- ज्ञानप्रकाश -मर्कन्टाईल प्रैस श्रीनगर।
- द वैली आफ कश्मीर -लारेन्स
- अनीलमत पुराण अनुवाद ड़ा0 वेद घई वाल्यूम-2
- राजतरंगणी अनुवाद एम. ऐ. स्टेन।
- सहज़- कोसम - मस्त बब ट्रस्ट ।
- मार्तण्ड़ आधारितलेख(पंजाबकेसरी)
- परमानन्द - रतन लाल तलाशी।

✦✦✦✦

मलमास भानुमास

सैंकड़ों वर्षो से मलमास- भानुमास की परम्परा कश्मीर में चली आ रही है। इन वर्षों में समय समय पर अनेक विद्वान;शास्त्रज्ञ;ज्योतिषी तथा धर्माचार्य कश्मीर में उत्पन्न हुऐ हैं। परन्तु किसी भी विद्वान ने इन मासों के विरूद्ध कभी कुछ नही कहा है। कश्मीर के सारे धार्मिक कृतियों में उपयोगी और अति प्राचीन समय से प्रचलित नैवेद्यमंत्र भी इस सच्चाई पर प्रकाश ड़ालता है कि मलमास और भानुमास के अधिकारी और देवता अलग अलग है। अत: दोनों मासों को एक करके केवल अधिकमास की संज्ञा देना ही पर्याप्त नहीं है।प्रत्येक मास के स्वामी का उल्लेख इस प्रकार दिया गया है।

मार्गशीर्ष रूकिमणी सहिताय कृष्णाय।
श्री सहिताय केशवाय ।। 1 ।।
पौष प्रीयि सहिताय अनन्ताय ।

वागीश्वरी सहिताय नारायणाय।। 2 ।।
माघे प्रीति सहिताय अच्युताय ।

कान्ता सहिताय माधवाय ।। 3 ।।
फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे ।
क्रिया सहिताय गोविन्दाय ।। 4 ।।
चैत्रे सिद्धि सहिताय वैकुण्ठाय ।

शक्ति सहिताय विष्णवे ।। 5 ।।
वैशाखे श्री सहिताय जनार्दनाय ।

विभूति सहिताय मधुसूदनाय ।। 6 ।।
ज्येष्ठे महिमा सहिताय उपेन्द्राय ।

इच्छा सहिताय त्रिविक्रमाय ।। 7 ।।
आषाढ़े लक्ष्मी सहिताय यज्ञपुरूषाय ।

प्रीति सहिताय वामनाय ।। 8 ।।
श्रावणे कान्ति सहिताय वासुदेवाय ।

रति सहिताय श्री धराय ।। 9 ।।
भाद्रपदे प्राप्ति सहिताय हरये ।

माया सहिताय हृषीकेशाय ।। 10 ।।
अश्यिुजे प्राकाभ्या, सहिताय योगीश्वराय ।

धी सहिताय पद्मनाभाय ।। 11 ।।
कार्तिक लधिमा सहिताय पुण्ड़रीकाक्षय ।

महिमा सहिताय दामोदराय ।। 12 ।।
मलिम्लुचे शक्ति सहिताय योगीश्वराय ।

सत्यभामा सहिताय नरकाय ।(मलमास में)
भानौ छाया सहिताय सूर्याय ।
निष्कला सहिताय महामार्तण्ड़नाथाय ।
(भानूमास में)

लकुट यार (लोकारी) चाका देवनदी



संगम मार्तण्ड़ तीर्थ पर पिण्डदान एवं श्राद्ध



उपरोक्त श्लोक कश्मीर के आदिकाल से ही प्रचलित हैं। इस बात की पुष्टि वेद , पुराण , धर्मशास्त्र , ज्योति शास्त्र तथा ब्राह्मण करते हैं। दक्ष मन्वन्तर का यह इतिहास कश्मीर बनने के समय का ही है। महर्षि कश्यप के तेरहवे पुत्र मार्तण्ड़ देव के जन्म के उपरान्त श्री त्रिदेव ब्रह्मा ,विष्णु तथा महेश ने बारह सूर्यो से विचार विमर्श करके ब्रह्मसिद्धान्त् के आधार पर गणित द्वारा देखा कि सौर संवत्सर में चान्द्रमास के क्रम से 2 वर्ष , 8 मास , 16 दिन , 4घड़ी बीतने पर एक अधिमास बनता है अत: ब्रह्मादि देवताओं ने कश्यप ऋषि से कहा कि वह इसी अधिमास के लिए मार्तण्ड़ का अभिषेक करे । आपके 12 पुत्र अपने - अपने ही मास के अधिकारी बने रहेगें , किन्तु मार्तण्ड़ किसी भी मास में मलमास का स्वामी बनकर रहेगा , हम यह वरदान इसको देते हैं। "मार्तण्ड़ माहात्म्य" में इस तथ्य का उल्लेख इस प्रकार कियां गया है।

स्व. श्यामसुन्दर जतू ने अपनी पुस्तिका "मलमास निर्णय " तथा "सतीसर संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तिका

'' में ठोस प्रमाणों द्वारा मलमास के अस्तित्व को सिद्ध कर दिया है। रणवीर रत्नाकर में मलमास अथवा अधिमास सविस्तार वर्णन किया गया है और प्रमाण के रूप में मदनरत्न ,काठगृह्य , गार्ग्य स्मृति , विष्णुधर्मोत्तर आदि अनेक शास्त्र दिखलाए गए है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्रों के भी प्रमाण दिए गए है, ।" तदुक्तं ज्योतिष शास्त्रे रविना लङ्घितो मासश्चान्द्राख्यातो मलिम्लुचः ।'' मृत्तितत्व में भानुमास लक्षणः-

"यत्र एकराशिगते सूर्ये भवेद्दर्शद्वयं पुनः
सम्प्रतो भानुमासाख्यः सर्वकर्मसु गर्हितम् ।''

जब सूर्य के एक राशि में होने पर दो अमावस्याएं आ जाऐ तो वह मास भानुमास कहलाता है।

"द्वात्रिंशादिभर्गतैः मासौर्दिनैः षोड़शभिः तथा
घटिकानांचतुष्केन पतति अधिकमासकः ।।''

जब पुर्व घटित मलमास की समाप्ति पर दो वर्ष आठ मास सोलह दिन और चार घड़ियां बीत जाऐ तो मलमास कहलाता है। मलमास के अस्तित्व के विषय में शास्त्रों में कई और प्रमाण वर्णित है।

1. "संक्रान्तिरहितो मासो मलमासस्ततोअधिक:"
मार्तण्ड़ माहात्म्य।

2. मलिम्लुचोनामासि त्रयोदंशमास:मद्वौषधिगण

3. यत् षोड़शत्रृतून्तद्धोमाद्धोतव्यम् ।
यजेत ततस्तन्मलिम्लुचान्तम्।
मार्तण्ड़ ब्राह्मण

4. तथा यत् षोड़शत्रृतून्यजेत
द्वात्रिंशत्पौर्णमासी रिष्टव: गार्हपत्यं प्रीणाति
तेन त्रयोदशमासा: संपद्यन्ते तेन पितर:
प्रीणन्ति तस्मात्त्रयोदश मासा: संवत्सर:
संवत्सरस्यापत्यै स एवं मलिम्लुच: ।
(काठकीय श्रुति:)

परम् तपस्वी ज्ञानेश्वर रल्लकाचार्य-जी ने मलमास के अस्तित्व पर उपरोक्त प्रकाश ड़ाला है।
पुराणों में भी मलमास का महात्म्य स्पष्ट मिलता है।

जैसे :-

तेषां मलिम्लुचे मासि सूर्यक्षेत्रे विशेषत: ।। 1 ।।
तत्र मलिम्लुचे मासि सूर्यक्षेत्रे पितृन्यजेत् ।। 2 ।।
श्राद्धं पिण्ड़दानं च तत्रेव तु मलिम्लुचे ।। 3 ।।
येषां श्राद्धे विरोधोऽस्ति पतितानां विशेषत: ।।4 ।।
मलिम्लुचाथिपतिनां मासो मलमासस्ततोऽधिक: ।।5 ।।

अत: ये दोनों मास शास्त्र सममत है

परन्तु शुभकार्यों के लिए वर्जित है। मूहर्तो की गणना में दिग्गज ज्योतिषयों विशेष कर कश्मीरी ज्योतिषयों ने स्पष्ट किया है। "मलमास भानुमासौ उभौ तौ हानिकारकौ।" इन मासों में पितरों की तृप्ति के लिए मार्तण्ड़क्षेत्र या अन्य तीर्थ स्थलों पर पिण्ड़दान अतिफलदायक और उद्धारकारक होता हैं। बड़े बड़े महात्मा शतातपती मलमास को गर्हित मानते हैं।

सभी कश्मीरी पण्ड़ित सारस्वत ब्राह्मण हैं। हम सभी ऋषियों की सन्ताने हैं। मध्यकाल में कुछ क्रूर शासकों के शासनकाल में कश्मीरी ब्राह्मणों को देशत्याग करना पड़ा। परन्तु वापिस आने के बाद यह हिन्दू समाज कई वर्गों में बंट गया। मलमासी और भानुमासी मध्यकाल के पलायन का ही नतीजा है। इस विषय में विद्वानों का मतभेद है। कई विद्वान कश्यप ऋषि के वंशजों को मलमासी मानते हैं। परन्तु कुछ विद्वान इस का खण्ड़न करते हैं उन के अनुसार वे ग्यारह कश्मीरी पण्ड़ित परिवार जो मध्यकाल में क्रूर शासकों के शासनकाल में भी कश्मीर में ही रहे उन की

संताने मलमासी कहलाने लगे तथा पलायनकर्ता कश्मीरी पण्ड़ित जिन्हें यहां पुन: बुला कर बसाया गया भानुमासी कहलाये। अत: हिमालय के आसपास आर्यावृत के किसी भी क्षेत्र में जन्में कश्मीरी पण्ड़ित मलमासी है और जिन्होंने विन्ध्याचल से पूर्वाचल के क्षेत्रों में कहीं भी जन्म लिया भानुमासी कहलाते हैं। सैंकड़ों वर्षों तक कश्मीर के सभी पंचागों में मलमास ;भानुमास का विचार ध्यान में रखकर शुभ कार्यों के मूहर्त निकाले जाते थे। परन्तु कुछ दशक पूर्व से दोनों मासों को मिला कर 'अधिक मास' लिखकर आदरणीय स्व0 प्रेम नाथ शास्त्री जी ने अपने पंचांग में मलमास का नाम ही मिटा दिया। परन्तु ब्राह्मण महामण्ड़ल की श्रीपंचांग मलमास के अस्तित्व को संजोएं बैठे हैं। यदि मलमास तथा भानुमास को एक करके कश्मीरी पण्ड़ितों को एक सूत्र में बान्धने के विचार से उठाया गया कदम होता तो यह विचार सराहणीय माना जाता परन्तु अपनी परम्पराओं से हटकर दूसरी परम्पराओं को अपनाना, अपने धार्मिक कार्यों में आमूलचूल परिवर्तन करना ,

लौगाक्षिमुनि की पद्धति को त्याग कर बाहरी पद्धति का अनुसरण करना एक विचारणीय प्रश्न है जिस पर चिंतन-मनन करने की आश्यकता है। इस में कोई संदेह नहीं कि विस्थापित होने के बाद भी यदि कश्मीरी पण्ड़ित वर्गों में बटने लगे इससे हमारी जाति का पतन अवश्य होगा। अतः संकुचित दृष्टिकोण त्याग कर एक सूत्र में बंध कर रहने में ही सबकी भलाई हैं यही समय की मांग तथा आवश्यकता है। परमार्थ शास्त्र में अधिमास को सबसे श्रेष्ठ मास के रूप में प्रकाशित किया गया है।

यह मास श्रीमद् गोलोक नाथ के द्वारा सर्वोपरि स्थापित हुआ है। यहाँ तक कि इस मास में विधि अनुसार पूजा अर्चना करना मोक्ष का सरल उपाय है।

वश्हन्नारदीय पुराण के इकतीसवें अध्याय में किस प्रकार वैकुण्ठपति नारायण ने श्री कृष्ण द्वारा मलमास को पुरूषोत्तम मास की उपाधि दे कर वरदान देते हुए कहा ।

अहमेतैर्यथालोके प्रथितः पुरूषोत्तमः ।
तथायमपि लोकेशु प्रथितः पुरूषोत्तमः ।।

अस्मै समर्पिताः सर्वे ये गुणा मयि संस्थिताः ।
मत्सादश्ष्यमुदागम्य मासानामधिपो भवेत् ।।
जगत् पूज्यो जगद्वन्द्यो मासोऽयं तु भविष्यति ।
सर्वे मासाः सकामाश्च निष्कामोऽयं मयाकण्तः ।।
अकातः सर्वकामो वा योऽधिमासं प्रपुत्येत् ।
कर्मानि भस्मात् कण्त्वा मामैवैण्यत्यसंणयम ।।
कदाचिन्मम भक्तानामपराधोऽधिगण्यते ।
पुरूषोत्तम भक्तजानांनापराधः कदाचन ।।
य एतस्मिन्महामूढ़ा जपदानादि वर्जिताः ।
सत्कर्म स्नान रहिता देव तीर्थ द्विज द्विणः ।।
जायन्ते दुर्भगा दुष्टाः परभोग्ययापजीविनः ।
न कदाचिद् सुखं तेणां स्वपनेऽपि शणश्रश्रृंगवत् ।।
येनाहमर्चितो भक्त्या मासेऽस्मिन् पुरूषोत्तमे ।
धन पुत्र सुखं भुक्त्वा पण्चादेगोलोक-वासभाक् ।।

," हे रमापति ! जिस प्रकार से मैं सारे जगत में " पुरूषोत्तम" के रूप में प्रसिद्ध हूँ , उसी प्रकार ये मलमास भी जगत में पुरूषोत्तम मास के रू॰ में विख्यात होगा । मैं अपने सभी गुणों को इस मास में अर्पित करता हूँ मेरे समान यह अधिमास सभी महीनों का अधिपति होगा । अब से यह मास जगत्पूज्य व जगत् - वन्द्य हो गया । अन्य सभी मास सकाम हैं, जबकि यह मास निष्काम है। जो निष्काम या सर्वकामी होकर अर्थात किसी भी भाव से

इस मास की पूजा करते है वे अपने सभी कर्मो को भस्मासात् करके मुझे प्राप्त करते हैं। मेरे भक्त से कदाचित् अपराध हो सकता है परन्तु इस पुरूषोत्तम मास के भक्त का कभी भी अपराध नहीं होता । इस मास में भक्तिपूर्वक मेरा अर्चन करने वाले धन पुत्रादि का सुख प्राप्त करते हुए अन्त में गोलोक के वासी बन जाते हैं।

श्री पुरूषोत्तम मास के माहात्म्य के प्रसंग में अनेक पौराणिक प्रसंग कहे गये है। द्रौपदी के प्रसंग में कहा जाता है कि पूर्व जन्म वह मेध ऋषि की कन्या थी तथा दुर्वासा जी से पुरूषोत्तम मास का महात्म्य सुनकर भी इसकी ओर ध्यान न दिया और पुरूषोत्तम मास की अवहेलना की । इसके परिणाम स्वरूप ही उसको दो जन्मों तक कष्ट झेलने पड़े । वनवास के समय जब श्री कृष्ण ने उन्हे पुरूषोत्तम मास के सम्बन्ध में उपदेश दिया और उस उपदेशानुसार जब उन्होंने उसका पालन किया वे वनवासके दु:खों से पार हुई।

"एवं सर्वेणु तीर्थणुभ्रमन्त: पाण्डुनन्दना: ।
पुरूषोत्तममासाद्य व्रतं चेरूर्वि- धानत: ।।

तदन्ते राज्यतुलमवापूर्गत कन्टकम्
पूर्णे चतुर्दणे वर्शे श्रीकृष्ण कण्पया मुने ।।''

वाल्मीकि मुनि ने दृढ़धन्वा के प्रश्नानुसार जो व्रतप्रकरण कहा वह उन्होंने श्रीनारद ऋषि से बदरिकाश्रम में सुना था कि धर्मशास्त्र में जिस प्रकार ब्राह्मण के अह्निक की विधि निरूपित हुई है उसी प्रकार सात्त्वत शास्त्रों में ब्राह्म मूहुर्त से ही पुरूषोत्तम सेवक का कर्त्तव्य बताया गया है।

भारते जनुरासाद्य पुरूषोत्तम् ।
न सेवन्ते न श्रश्णवन्ति गश्हासक्ता नराधमा ।।
लसत् पीतपटंरम्यं सराधं पुरूषोत्तम।
ध्यायं नयेन्मासं पूज्यन् पुरूषोत्तम्।।

अत: मलमास भनुमासं में धार्मिक कार्य करना अति उत्तम है। यज्ञ से स्वर्ग की प्राप्ति होती है परन्तु अधिमास में पुरूषोत्तम व्रत का पालन करने वाले भक्त के शरीर में ही सभी तीर्थ और सभी देवता निवास करते है।

क्रतुं कश्त्वाप्नुयात् स्वर्ग गोलोकं पुरूषोत्तमे: ।
पशथिव्यां यानि तीर्थाण क्षेत्राणि सर्वदेवता ।।

संदर्भ :-

मार्तण्ड महामात्य ।

मार्तण्ड ब्राह्मण ।

- मद्वौषधिगण ।
- काठकीय श्रुति ।
- प्रकाश - विजयेश्वर कार्यालय ।
- मार्तण्ड पंचांग ।
- विजेश्वर पंचांग ।
- द वेली आफ कश्मीर - लारेन्स ।
- मलमास - त् भान्मास- सतीसर फोंडेशन ।

श्री अमर नाथ बाबा

कश्मीर तीर्थों का घर है । यहां पग पग पर परमात्मा के भिन्न भिन्न स्वरुपों के दर्शन होते है आवश्यकता है केवल श्रद्धा तथा भावनाभावित सान्निध्य की । जिस से मनुष्य प्रत्यक्ष भगवान के संसर्ग में आता है और भगवत्कृपा से वह उस वास्तविक स्वरुप को देख सकता है । आद्यशक्ति जगदम्बा ने इस क्षेत्र में अपना स्थायी निवास बनाया उन के अनेक रुपों के पवित्र स्थान हर दो तीन कोस की दूरी पर देखने को मिलते है जिन्हें यहां के लोग देवीबल कहते है और अपने क्षेत्र की इष्ट देवी मानते है । ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर ने भी इस भूमि को अपना स्थायी निवास बनाया । इसी कारण ऋषियों मुनियों ने कश्मीर की भूमि को भवसागर तारणी नाव की संज्ञा दी है ।

कश्मीर में 45 शिवधाम, 60 विष्णुधाम, 3 ब्रह्माधाम, 22 शक्तिधाम, 700 नागणाम और हज़ारों देवधाम हैं । भगवान शिव ही ब्रह्मरुप होने के कारण

'निष्कल' कहे गये है रुपवान होने के कारण उन्हे 'सकल' भी कहा गया है । इसलिए वह सकल और निष्कल दोनों है । अत: शिवलिंग शिव के निराकार स्वरुप का प्रतीक है तथा शिव का साकार विग्रह उन के साकार स्वरुप का प्रतीक होता है । सकल और अकल (समस्त अंग आकार सहित साकार और अंग आकार से सर्वथा रहित निराकार) रुप होने से ही वे 'ब्रह्म' शब्द से कहे जाने वाले परमात्मा है यही कारण है कि सब लोग लिंगऔर मूर्ति दोनों में ही सदा भगवान शिव की पूजा करते है शिव से भिन्न जो दूसरे देवता हैं वे साक्षात ब्रह्म नहीं है इसलिए कहीं भी उनके लिए निराकार लिंग उपलब्द नहीं होता । भगवान शिव केवल पौराणिक देवता नहीं है बल्कि पंचदेवों में प्रधान अनादि सिद्ध परमेश्वर है और निगम आगम आदि सभी शास्त्रों में महिमा मण्ड़ित महादेव है वेदों ने इस परमतत्व को अव्यक्त अजन्मा सब का कारण विश्वप्रपंच का स्रष्टा पालक और संहारक कहकर उन का गुणगान किया है श्रुतियों ने सदाशिव स्वयंभू शांत प्रपंचतीत

परात्पर परमतत्व ईश्वरों के भी परम ईश्वर कहकर स्तुति की है। शिव का अर्थ ही 'कल्याण स्वरुप ' और 'कल्यान प्रदाता' है। परम ब्रह्मा के इस कल्याण रुप की उपासना उच्च कोटि के सिद्धों आत्म कल्याण कामी साधकों और सर्वसाधारण आस्तिकजनों सभी के लिए परम मंगलमय परम् कल्यानकारी सर्व सिद्धिदायक और सर्वश्रेयस्कर है। शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि देव दनुज ऋषि महर्षि योगिन्द्र मुनीन्द्र सिद्ध गन्धर्व ही नहीं अपितु बह्मा विष्णु तक इन महादेव की उपासना करतें है भगवान श्री राम और श्री कृष्ण के तो महादेव परम आराध्य है । कोई भी वस्तु भगवान शिव के स्वरुप से अलग नहीं है । भगवान भोले शंकर ने सब लोगों पर अनुग्रह करने के लिए ही देवताओं, असुरों और मनुष्यों के हित को ध्यान में रखकर तीनों लोकों को लिंग रुप से व्याप्त कर रखा है । जहां जहां जब जब भक्तों ने भक्ति पूर्वक भगवान शम्भू का स्मरण किया वहीं वहीं तब तब किसी रुप में प्रकट हो कर कार्य करके वे स्थित हो गए । भारत देश महादेव है ।

हिमालय इस की जटाएं हैं । इन हिमालय रुपी जटाओं से पतित पावनी गंगा जी निकलती है । भगवान शिव महादेव भारत के जन देवता है । यों तो भारत की भूमि में सभी दिशाओं में शिवलिंग स्थापित हैं परन्तु शिवपुराण रुद्रसंहिता में ज्योतिलिंग के रुप में बारह प्रधान लिंगों का वर्णन किया गया है वे जाग्रत सिद्ध पीठ हैं । जिन का उल्लेख कई धार्मिक ग्रन्थों में इस प्रकार किया गया हैं ।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम ।।
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम ।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमीतटे ।।
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने ।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं तु शिवालये ।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत् ।।

पहला ज्योर्तिलिंग : सोमेश्वर श्री सोमनाथ जी का पवित्र मन्दिर सौराष्ट्र के काठियावाड़ क्षेत्र में स्थित है । वहां भगवान शिव जी उस भूतल को पवित्र करते हुए प्रभास

क्षेत्र में विद्यमान है । वहीं सम्पूर्ण देवताओं ने सोमकुण्ड़ की स्थापना की । सोमनाथ जी का दर्शन करने से क्षय औरअन्य असाध्य रोग नष्ट हो जाते है और सहज ही भोग और मोक्ष की प्राप्ति होती है । मनुष्य जिस फल के उद्देश्य से इस उत्तम तीर्थ का सेवन करता है उस फल को सर्वथा प्राप्त कर लेता है । इस में कोई संशय नहीं । श्री सोमनाथ के उपलिंग को अन्तकेश्वर के नाम से जाना जाता है । यह उपलिंग महा नदी और समुद्र के संगम पर स्थित है ।

दूसरा ज्योर्तिलिंग : मल्लिकार्जुन -'मल्लिका' का अर्थ है पार्वती और 'अर्जुन' शब्द शिवजी का वाचक है । अर्थात मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग में शिव और पार्वती दोनों की ज्योतियां प्रतिष्ठित है।

यह ज्योर्तिलिंग तामिलनाडू प्रांत के कृष्णा ज़िले में कृष्णा नदी के तट पर स्थित है इसे दक्षिण का कैलाश कहा जाता है । इस लिंग का दर्शन करने वाले समस्त पापों से मुक्त हो जाते है और सम्पूर्ण अभीष्ट प्राप्त कर लेते है । इस पवित्र तीर्थ को सब प्रकार का सुख देने वाला

बताया गया है ।

तीसरा ज्योर्तिलिंग : महाकालेश्वर ... भक्तों की रक्षा करने वाला महाकाल नामक ज्योर्तिलिंग उज्जैन में स्थित है । पुराणों में कथा है कि प्राचीन काल में चन्द्रसेन नामक राजा को शिव के पार्षदों में प्रधान तथा सर्वलोकवन्दित मणिभद्रजी से मित्रता हुई । एक समय राजा पर प्रसन्न होकर उन्होंने चन्द्रसेन को चिन्तामणि नामक महामणि प्रधान की । इस मणि को प्राप्त करने के लिए समस्त राजाओं ने चतुरंगी सेना ले कर चन्द्रसेन के राज्य पर आक्रमण करने के लिए उज्जयिनी के चारों द्वारों को घेर लिया । अपनी पुरी को सम्पूर्ण राजाओं द्वारा चारों ओर से घिरी हुई देख राजा चन्द्रसेन महाकालेश्वर की शरण में गये और मन को संदेहरहित करके दृढ़ निश्चय के साथ उपवासपूर्वक दिन रात अनन्यभाव से महाकाल की आराधना करने लगे। एक ग्वालिन तथा उसके पांच वर्ष के बालक ने मन्दिर में चन्द्रसेन द्वारा की हुई महाकाल की पूजा का आदर पूर्वक दर्शन किया । उस बालक ने घर आकर

कौतूहलवश एक पत्थर को शिवलिंग मान कर पूजा प्रारम्भ की । मां के बार बार बुलाने पर भी जब उसे भोजन करने की इच्छा न हुई। तो स्वयं वहां आकर उस की मां ने उसको घर ले जाने का असफल प्रयास किया । रोष में आकर ग्वालिन ने वह शिवलिंग तथा पूजा सामग्री दूर फैंक दी और बेटे को ड़ांटती हुई पुनः घर चली गयी । यह देख कर वह छोटा बालक महादेव पुकारते हुए मुर्छित होकर वहीं गिर पड़ा । जब उसे होश आया तो उसने देखा कि उसका वही शिविर महाकाल का सुन्दर मन्दिर बन गया शिवालय के मध्य में दयानिधान शंकर का रत्नमय लिंग प्रतिष्ठत था तथा उसके द्वारा चढ़ायी गई पूजा सामग्री उस लिंग पर सुसज्जित थी । इस प्रकार शिव का यह अदभुत माहात्म्य देखने से पुरवासियों को बड़ा हर्ष हुआ। युद्ध करने आये राजाओं ने जब इस लिंग के दर्शन किये तो उन के मन से वैर भाव समाप्त हुआ और सभी ने हथियार डाल दिये। अतः महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग सत्पुरुषों का आश्रय है। इस लिंग का दर्शन और पूजन

करने से मनुष्य की सारी कामनाएं पूर्ण ो जाती हैं ।

चौथा ज्योर्तिलिंग : ओंकारेश्वर .. ओंकारश्वर का स्थान मध्य प्रदेश के मालवा अंचल में नर्मदा नदी के तट पर है । उज्जैन से खंडवा जाने वाली लाइन पर मोरटक्का स्टेशन से 11 किलोमीटर की दूरी पर है यह ज्योर्तिलिंग पर्वतराज विन्ध्य की तपस्या तथा देवताओं और निर्मल अन्तःकरण वाले ऋषियों को परमेश्वर शिव के प्रसन्न होने पर दिये गये वर का परिणाम स्वरुप है। भगवान शिव की कृपा से ही ओंकार लिंग दो स्वरुपों में विभक्त हो गया । प्रणव में जो सदाशिव थे वे ओंकार नाम से विख्यात हुए और पार्थिव मूर्ति में जो शिव प्रतिष्ठत हुई उस की परमेश्वर संज्ञा हुई । परमेश्वर को ही अमलेश्वर भी कहते है । इस प्रकार ये दोनों शिवलिंग भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करने वाले हैं ।

पांचवा ज्योर्तिलिंग : श्री केदारेश्वर...श्री केदारनाथ हिमालय के केदार नामक शिखर पर स्थित है । शिखर से पूर्व की ओर अलकनन्दा के तट पर श्री बद्रीनाथ अवस्थित है और पश्चिम में मन्दाकिनी के किनारे श्री केदार नाथ विराजमान है। भगवान विष्णु के नर

नारायण नामक दो अवतार हुए । बदरिकाश्रमतीर्थ में तपस्या करते हुए वे दोनों पार्थिव शिवलिंग बना कर बहुत दिनों तक पूजा करते रहे । अन्त में परमेश्वर शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिए और उन के अनुरोध करने पर कल्याणकारी महेश्वर हिमालय के उस केदारतीर्थ में स्वयं ज्योर्तिलिंग के रुप में स्थित हो गये । उन दोनों से पूजित होकर सम्पूर्ण दुख और भय का नाश करने वाले शम्भु लोगों का उपकार करने और भक्तों को दर्शन देने के लिए स्वयं केदारेश्वर के नाम से प्रसिद्ध होकर वहां ही रहते है। यह स्थान हरिद्वार से 150 मील और ऋषिकेश से 132 मील दूर है । शिवजी का यह अवतार सम्पूर्ण अभीष्टों को प्रदान करने वाला है । कहा जाता है कोई भी भक्त श्री केदारनाथ से कभी निराश नहीं हुआ ।

छटा ज्योर्तिलिंग : भीमशंकर ..... श्री भीम शंकर का स्थान मुम्बई से पूर्व और पूना से उत्तर भीमा नदी के किनारे उस के उद्‌गम स्थान सह्यपर्वत पर है । यह स्थान सड़क मार्ग पर नासिक से लगभग 120 मील दूर

है । सह्यपर्वत के शिखर पर ज्योतिर्लिंग के प्राचीन मन्दिर को ' डाकिनी' कहते है । इससे अनुमान होता है कि कभी यहां पर डाकिनी और भूत निवास करते थे । शिवपुराण की एक कथा के आधार पर भीमशंकर ज्योतिर्लिंग असम के कामरुप ज़िले में गुवाहाटी के पास ब्रहमपुर पहाड़ी पर स्थित बताया जाता है । इस कथा के अनुसार कामरुप देश के अधिपति राजा सुदक्षिण शिवजी के भक्त थे । राक्षस कुम्भकरण के पुत्र भीमासुर उन्हें पीड़ित कर रहा था । तब शिवजी ने अपने भक्त को दुख देने वाले उस असुर का वध करके उस की रक्षा की । फिर राजा सुदक्षिण की प्रार्थना करने पर स्वयं शंकर जी डाकिनी में भीमशंकर नामक ज्योतिर्लिंग स्वरुप में स्थित हो गए । कुछ लोग नैनीताल ज़िले के उज्जनक नामक स्थान पर स्थित एक विशाल शिवजीके मन्दिर को भीमशंकर मानते है परन्तु शास्त्रों के ज्ञाता और प्रमुख विद्वान ज्योतिर्लिंग भीमशंकरका मुख्य स्थान महाराष्ट्र में ही मानते है ।

सातवां ज्योतिर्लिंग : बाबा विश्वनाथ ....भगवान शिवजी

ने ब्रह्माण्ड़ के भीतर कर्मपाश से बन्धे हुए प्राणियों के उद्दार तथा मुक्ति के लिए पचंक्रोशी को इस जगत में छोड़ दिया । यह पचंक्रोशी काशी लोक में कल्यानदायनी कर्मबन्धन का नाश करने वाली ज्ञानदात्री तथा मोक्ष को प्रकाशित करने वाली मानी गयी है । यहां स्वयं महादेव ने 'अविमुक्त'लिंग की स्थापना की है कर्मों का कर्षण करने से ही पुरी को काशी कहते है । काशी में अविमुक्तेश्वर लिंग सदा विराजमान रहता है वह महापातकी पुरुषों को भी मोक्षप्रदान करने वाला है । विश्वेश्वर का यह ज्योर्तिलिंग गंगा नदी के तट पर है ।

आठवां ज्योर्तिलिंग : त्रयम्बकेश्वर ..... यह ज्योर्तिलिंग महाराष्ट्र में नासिक ज़िले के पंचवटी से 18 मील दूर गोदावरी के उदगम स्थान ब्रह्मगिरि के निकट गोदावरी के तट पर ही यह स्थित है । गौतम ऋषि की प्रार्थना से प्रसन्न होकर शंकरजी प्रेमपूर्वक ज्योर्तिलिंग स्वरुप से वहां अचल होकर स्थित हो गए । शिवजी के अनुग्रह करने पर शिवप्रिया परमपावनी माता गंगा वहां गौतमी

(गोदावरी) नाम से प्रवाहित हुई । इस लिए इस स्थान पर गोदावरी का वही महत्व है जो हरिद्वार में गंगा का है ।

नौवा ज्योर्तिलिंग : श्री वैद्यनाथ ...... श्री वैद्यनाथ बिहार और बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्र में देवघर के निकट स्थित है । इस मन्दिर के पास से ही फलगू नदी बहती है पुराणों में इसे चिताभूमि कहा गया है । श्री वैद्यनाथ ज्यार्तिलिंग की स्थापना में बहुत सी विचित्र लीलाएं करने वाले भगवान शंकर रावण के लिए आविर्भूत हुए थे । कहीं कहीं पुराणों में ' परल्यां वैद्यनाथं च ' का उल्लेख भी मिलता है । इस के अनुसार परली में वैद्यनाथ जी स्थित है । दक्षिण हैदराबाद नगर के समीप परमानी नामक जंकशन है । वहां से परली स्टेशन तक ब्रांच लाइन गयी है उस स्थान से थोड़ी दूरी पर गांव के निकट श्री वैद्यनाथ जी नामक ज्योर्तिलिंग है। किन्तु नौवें ज्योर्तिलिंग के रुप में बिहार में स्थित बाबा बैजनाथ अर्थात श्री वैद्यनाथ ही जन सामान्य में प्रतिष्ठित है। श्रावण में पूरे मास में यहां

कांवर यात्रा होती है । श्रावण पूणिमा को बाबा वैद्यनाथ की पूजा और दर्शन करने से व्यक्ति की समस्त कामनाएं पूरी हो जाती है ।

दसवां ज्योर्तिलिंग : नागेश ..... नागेश्वर नामक ज्योर्तिलिंग का स्थान गुजरात में गोमती द्वारका से ईशान कोण में बारह तेरह मील की दूरी पर है दारुका वन इसी का नाम है। शिव जी ने इसी वन में दारुक नाम के एक धर्मघामी दुष्ट राक्षस का संहार किया था।यह राक्षस शिवजी के प्रिय भक्त वैश्यों के स्वामी सुप्रिय को बहुत कष्ट पहुन्चा रहा था । इस के पश्चात समस्त लोकों का उपकार करने वाले प्रभु शिव शम्भू माता अम्बिश के साथ ज्योर्तिलिंग स्वरुप से स्थित हो गए । महादेवजी वहां नागेश्वर तथा शिवा देवी नागेश्वरी नाम से विख्यात हुए । वे तीनों लोकों की सम्पूर्ण कामनाओं को सदा पूर्ण करने वाले है। इन के दर्शन मात्र से मनुष्य के पाप धुल जाते हैं और वह निर्मल हो जाते हैं ।

ग्यारहवां ज्योर्तिलिंग : रामेश्वर .... इस ज्योर्तिलिंग की स्थापना स्वयं श्री राम ने की थी। भगवान विष्णु के

राम अवतार में रावण से युद्ध करने तथा उस को पराभूत करने के लिए जब श्री राम सुग्रीव के साथ अठारह पद्यम वानरसेना ले कर समुद्र तट पर आये । वहां वे विचार करने लगे कि कैसे वे समुद्र पार करे गे। अतः अपने स्वामी भगवान शंकर का दर्शन करने के लिए पार्थिव पूजन किया । आवाहन आदि सोलह उपचारों को प्रस्तुत करके विधिपूर्वक बड़े प्रेम से शंकरजी की अर्चना की । प्रसन्न होकर शिवजी ने प्रकट होकर श्री राम को विजयी होने का आशीर्वाद दिया था श्री राम ने भगवान भोले शंकर को जगत का कल्याण करने के लिए वहां सदा निवास करने की प्रार्थना की । अतः शिवजी ज्योर्तिलिंग स्वरुप में सेतुबंध पर स्थित हो गए । रामेश्वर की महिमा की और किसी स्थान से तुलना नहीं की जा सकती । यह पूर्ण सिद्धपीठ है । जो भक्त श्रद्धापूर्वक श्री रामेश्वर लिंग को गंगाजल से स्नान कराते है उनके जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते है । रामेश्वर भारत के प्रधान चार धामों में एक धाम है । यह तामिलनाडू राज्य के

रामनाथम् (रामनद) ज़िले में स्थित है ।
बरहवां ज्योर्तिलिंग : श्री घुेश्मेश्वर ..... इसे घुसृणेश्वर या घृष्णेश्वर भी कहते है । श्री घुश्मेश्वर दक्षिण दिशा में देवगिरि पर्वत के समीप स्थित है । यह स्थान आन्ध्र प्रदेश में दौलताबाद स्टेशन से 12 मील दूर बेरुल गांव के पास है । इस स्थान को शिवालय भी कहते है । प्राचीन काल में इसी स्थान पर सुधर्मा और सुदेहा नामक ब्राह्मण पति पत्नी रहते थे । कोई सन्तान न होने के कारण सुदेहा ने हठ करके अपनी बहिन घुश्मा से अपने पति का दूसरा विवाह करा दिया । घुश्मा अपनी शिवभक्ता बहिन की आज्ञा से नित्य पार्थिव शिवलिंग बना कर पूजा करके निकटवर्ती तलाब में उन का विसर्जन कर देती थी । शंकरजी की कृपा से उस के कोक्ष से उन का एक सुन्दर पुत्र का जन्म हुआ परन्तु कुछ समय बाद सुदेहा के मन में ड़ाह पैदा हो गयी । एक रात सुदेहा ने सोते हुए घुश्मा के पुत्र को मार ड़ाला । परन्तु घुश्मा की भक्ति से संतुष्ट होकर शिवजी ने उसके मृत पुत्र को जीवित कर दिया । उसके

बाद घुश्मा की प्रार्थना करने पर शिवजी लोगों की रक्षा के लिए सदा के लिए ज्योर्तिलिंग के स्वरुप में स्थित हो गए और घुश्मेश के नाम से ही प्रख्यात हो गया तथा वह तलाब जिस में घुश्मा पार्थिव शिवलिंग विसर्जित करती थी शिवालय नाम से प्रसिद्ध हो गया । इस सरोवर के दर्शन मात्र से भक्त सम्पूण अभीष्टों को प्राप्त करता है । और सभी पापों से मुक्त होकर सम्पूण सिद्धियों का फल प्राप्त कर लेता है ।

अमरेश्वर :- श्री अमर नाथ बाबा - श्री अमर नाथ जी का प्राकृतिक हिम ज्योर्तिलिंग कश्मीर प्रान्त के उत्तर की ओर पहलगाम नगर से 39 कि. मी. दूर पर्वतों के मध्य एक प्राकृतिक गुफा में अपने आप बनने वाला हिम शिवलिंग है। कश्मीर के प्राचीन इतिहास राजतरंगणी में कल्हण ने कई बार अमरेश्वर तीर्थ का उल्लेख किया हैं।

(अध्याय -1 श्लोक -267) इतना ही नहीं अध्याय-2 श्लोक -138 में कल्हण कश्मीर के शासक मिहरकुल

के आर्यराजा द्वारा हिम शिव लिंग की पूजा करने के लिए गर्मियों में जाने का वृतांत लिखा है। जिस ने भगवान शिव की कृपा से 49 साल 9 महीने तक कश्मीर पर राज्य किया।इस से यह बात स्पष्ट होती है कि प्राचीन काल से ही लोग श्री अमर नाथ जी की यात्रा पर जाते थे। कल्हण ने अपनी इस पुस्तक में इस बात का भी उल्लेख किया है कि बहुत ऊंचाई पर चढ़ाई चढ़ने के बाद एक सरोवर में आर्यराजा ने नहाया इस सरोवर के समीप ही कभी आगस्त्य ऋषि का आश्रम था।

मध्यकाल में मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव तथा क्रूर शासकों के शासनकाल में यहां के मूल निवासियों को कई बार देश त्याग करना पड़ा । हिन्दुओं के अनेक धार्मिक स्थलों को नष्ट किया गया। यवनों के सैंकड़ों वर्षों के शासनकाल के दौरान कश्मीरी पण्ड़ितों को असंख्य कष्ट झेलने पड़े।इन युगों में - शाहमीरी युग, चक युग, पठान युग, तथा मुगल युग में कट्टर पंथी सुल्तान शासकों ने बहुत से तीर्थों को नष्ट किया

;परन्तु श्री अमर नाथ जी की कृपा से मार्तण्ड़ क्षेत्र के तीर्थों को नष्ट करने के अपवित्र उद्देश्य में वे सफल न हुए। दो तीन सौ साल के इस लम्बे समय के अन्तराल में लोग श्री अमर नाथ जी की यात्रा पर जा न सके । एक समय ऐसा भी आया कि वहां जाने के मार्ग से भी लोग अपरिचित थे अतः मार्तण्ड़ के पण्ड़ितों ने गणेशपोरा के पण्ड़ितों के सहयोग से बटकोट के मल्लिकों से श्री अमर नाथ जी की गुफा का मार्ग पता लगवाया क्योंकि वे हर साल गर्मियों में पशु चराने उन्ही जंगलों में जाते थे जहां से श्री अमर नाथ जी की गुफा का मार्ग है।मध्यकाल में देशत्याग के दौरान जम्बुदीप के मन्दिरों में शरणार्थी बने कश्मीरी पंण्ड़ित साधुओं तथा महन्तों के सम्पर्क में आये थे। इसीलिए श्री अमर नाथ जी की स्थिति पुनः जानने के लिए जम्मू के शिव मन्दिर के महन्त जी को भी साथ चलने का न्यौता दिया गया।इस प्रकार श्री अमर नाथ जी की यात्रा फिर से आरम्भ कर दी गई।मल्लिकों को मार्ग बनाने, घोड़ों इत्यादि का प्रबन्ध करने तथा गणेशपोरा के पण्ड़ितों को

पूजा सामग्री का प्रबन्ध करने की ज़िम्मेदारी दी गई ;इस कार्य के लिए उन्हें चढ़ावे का तीसरा भाग रख दिया गया।अन्य दो भाग मार्तण्ड के पण्ड़ितों जो श्री अमर नाथ जी के पुजारी हैं तथा जम्मू के शिव मन्दिर के साधुओं का रखा गया।इस प्रकार यह यात्रा हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बन गया ।समय बीतने के साथ साथ तथा यात्रियों की संख्या नें वृद्धि के कारण सारे प्रदेश के लोग इस यात्रा से जुड़ गए।

++++

श्री अमर नाथ जी की कथा

जय बाबा श्री अमर नाथ बर्फानी
भूखों को भोजन प्यासों को पानी।

कश्मीर प्रदेश में 45 शिवधाम है जो स्वयं भगवान शिव की कृपा के कारण ही लोगों के कल्याण हेतु बने हुए है । भगवान भोलेनाथ जी के पावन केंद्रों में श्री अमर नाथ जी की यात्रा चार धामों की यात्रा के समान मानी जाती है । क्योंकि केवल यही एक ऐसा सिद्धपीठ है जो प्राकृतिक होने के साथ साथ जाग्रित सिद्धपीठ भी है । यहां प्राकृतिक गुफा में बर्फ से अपने आप बनने वाले शिवलिंग अमरनाथ भगवान शिव की पवित्र उपाधि है । यह गुफा पर्वतों के मध्य लगभग 13000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। गुफा 60 फुट लम्बी 30 फुट चौड़ी तथा 15 फुट ऊंची भगवान शिव की लीला दर्शाती है। गुफा के बाहर दूर दूर तक बर्फ ही बर्फ दिखाई देता है । श्री अमर नाथ जी गुफा के भीतर बर्फ का शिव लिंग शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से पूर्णमासी तक चन्द्रमा के बढ़ने के साथ साथ बढ़ता रहता है और कृष्ण पक्ष में घटने लगता है। पूर्णमासी को इस प्राकृतिक लिंग का आकार पूर्ण होता है । कई बार इस लिंग की ऊंचाई 12 फुट से भी अधिक हो जाती है। शिव पीठ के अतिरिक्त

वहां श्री गणेश पीठ कार्तिकेय पीठ तथा पार्वती पीठ भी बनते हैं। गुफा के नीचे अमर गंगा का प्रवाह है । अमर गंगा का नियमित चरणामृत लेने से शरीर रोगमुक्त हो जाता है । श्री अमर नाथ जी दर्शन से पूर्व श्रद्धालु अमर गंगा में स्नान करके धन्य हो जाते हैं। गुफा में एक स्थान से सफेद भस्म निकलता है। कहा जाता है कि पार्वती को अमर कथा सुनाने से पूर्व बाबा भोले शंकरजी ने तीसरी आंख खोल कर यहां 12 कोस तक निर्जन निर्जीव स्थान बनाने के लिए सब कुछ भस्म कर लिया था । वही भस्म अमर नाथ बाबा का प्रसाद मान कर भक्तजन ले जाते हैं। गुफा के ऊपर श्री राम कुण्ड है जिसका जल गुफा के शिवलिंग पर टपकता रहता है । गुफा में कबूतर भी रहते हैं जिन का दर्शन करने से यात्रा सफल मानी जाती है। ये वही कबूतर है जिन्हों ने सौभाग्य से अमर कथा सुनी थी । परन्तु कुछ धर्मग्रन्थों में ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि एक बार शिवजी तपस्या में लीन थे कि उन के दो गण झगड़ने लगे तो शिवजी ने उन्हें श्राप दिया कि तुम कुरु कुरु करते हुए यहीं स्थिर हो जाओ। वे कबूतर रुप में वहीं स्थित हो गए। आज भी इन कबूतरों के दर्शन गुफा में किये जा सकते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि चारों ओर से 12 कोस की दूरी तक कहीं कोई जीव नज़र नहीं आता परन्तु गुफा में कबूतरों का होना

भगवान भोलेनाथ जी की माया तथा चमत्कार का सजीव स्वरुप है । तभी तो लाखों तीर्थ यात्री प्रतिवर्ष इस पवित्र लिंग के दर्शन करने आते हैं ।

एक प्राचीन दन्तकथा के अनुसार माता पार्वती ने शिवजी से एक बार अमर कथा सुनने की इच्छा व्यक्त की । भोलेनाथ ने उन की इस इच्छा को पूरी करने के लिए उन्हे हिमालय पर्वत पर ले आए । वे किसी एकांत स्थान पर वैठ कर उन्हे अमर कथा सुनाना चाहते थे। अत: मार्तण्ड़क्षेत्र से होते हुए पहलगाम में अपने वाहन नन्दीगण को छोड़ कर पैदल चल पड़े । वहां से एक कोस दूर चलने पर माता पार्वती थक कर बैठ गई उस स्थान को नुनवन कहते है । अत: कुछ देर वहां रुकने के बाद वे आगे चल पड़े 10 मील आगे जाने पर बर्फ से ढ़की हुई घाटी में पहुन्च कर शिवजी ने अपने माथे से चन्द्रमा को उतार कर लम्बोदरी नदी के तट पर रख दिया जिसके कारण इस स्थान को 'चन्द्रबाड़ी' का नाम दिया गया । वर्तमान समय में इस स्थान को चन्दनबाड़ी के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार आगे चलते चलते प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेते हुए वावजन नामक स्थान पर पहुन्चे यहां पर महादेवजी ने अपने गले से शेषनाग को धरती पर उतार दिया अत: यहीं स्थान शेषनाग कहलाया । इस के आगे जाते हुए भोलेनाथ जी ने एक एक करके अपने सभी

आभूषण मार्ग में छोड़ दिये । वे एक लम्बे चौड़े मैदान में आकर रुक गए यह स्थान चारों ओर से ऊंचे पर्वतों और वनों सें घिरा हुआ था।

जो साल भर बर्फ से ढ़के रहते हैं। यहां भगवान शंकर ने गंगाजी को धरती पर उतार लिया । अपनी जटाओं सें उतारते समय गंगा पांच धाराओं में बट गयी जिस के कारण वह पांच नदियों के रुप में बहने लगी अत: यह स्थान 'पंचतरणी' नाम से प्रसिद्ध हुआ। दो कोस आगे जाने पर शिवजी पार्वती के साथ अपने निश्चित स्थान पर पहुन्च गए। त्रिशूल से पर्वत को काटकर बैठने का स्थान बना कर आसन बिछाया । अमरकथा सुनाने से पूर्व वे इस सारे क्षेत्र को निर्जीव बनाना चाहते थे ताकि कोई भी जीव अमर कथा न सुने। अत: शिवजी ने तीसरा नेत्र खोल कर चारों ओर नज़र दौड़ाई । जिसके कारण 12 कोस तक सभी वन जल गये और सारा क्षेत्र निर्जन निर्जीव बन गया । इसके पश्चात महादेवजी आसन पर बैठ कर पार्वती को अमर कथा सुनाने लगे । माता पार्वती हुं हुं करते हुए हुंकारा देती रही परन्तु अमरकथा पूरी सुनाने के पश्चात शिवजी ने पार्वती को निद्रावस्था में पाया। परन्तु बार बार हुंकारे की आवाज़ से वे

चौंक गये । वास्तव में इस पर्वत की कंदराओं में कबूतर रहते थे । त्रिशूल से गुफा बनते समय शोर से वे भाग

गए परन्तु संयोग से गुफा की छत पर बने घोंसले में बैठी जोड़ी इस शोर से बेहोश हो गए और उन्हें तब होश आया जब महादेव जी पार्वती को अमरकथा सुनाने लगे। उन के हुंकारे को भोले नाथजी पार्वतीजी का हुंकारा समझ बैठे। शिवजी ने पार्वती को जगा कर अमरकथा के विषय में पूछा परन्तु उसने तो कुछ भी सुना नहीं था। अत: शिवजी उस ध्वनि की वास्तविकता जानने के लिए इधर उधर खोजने लगे परन्तु वहां कहीं कुछ भी दिखाई न दिया । अन्त में उन्होंने खड़े हो कर छत के छिद्र में कबूतरों को देखा ।भोले शंकर का रूद्र रूप देख कर कबूतर उड़ कर भाग गये । अमर कथा सुनकर वे अमर हो चुके थे। महादेव क्रोधित हुए उन्होंने त्रिशूल उठा कर उनके पीछे फेंक दिया। कबूतर भागते रहे और त्रिशूल उनका पीछा करता रहा। भागते भागते उन्होंने भगवान विष्णु का ध्यान किया। भगवान विष्णु ने प्रकट होकर शिवजी को समझाया कि अमर कथा सुनने के कारण वे अमर हो चुके है। अत: शिवजी का क्रोध शांत हुआ और उन की आज्ञा से ही उन कबूतरों को उस गुफा में ही रहने का आदेश मिला और जगतकल्याण के लिए शिवजी भी लिंग स्वरुप स्थित हो गए । अनेक यात्री इन कबूतरों के दर्शन भी करते है। लिंग का घटना और बढ़ना भोलेनाथ जी का क्रोध और शांत स्वभाव भी दर्शाता है।

यह प्राकृतिक हिम शिवलिंग महादेव का रुद्र तथा आशुतोष स्वरुप हैं।

इस गुफा में बर्फ का शिवलिंग बर्फ की कठोर पीठ पर बनता है जबकि गुफा के बाहर मीलों तक नर्म मुलायम कच्ची बर्फ मिलती है। श्रावण मास की पूर्णिमा को लिंग पूर्ण रुप में होता है। इसी दिन हज़ारों यात्री भगवान अमरनाथ के दर्शन करते है।

एक प्राचीन दन्त कथा के आधार पर कहा जाता है कि श्री अमर नाथ जी की पवित्र गुफा की जानकारी एक मुस्लमान गड़रिया बूटा मलिक ने अपने पड़ोस के गांव गणेशपोरा के एक पण्ड़ित को दी जो उन दिनों पहलगाम के पास गणेशबल नामक स्थान पर रहते थे। कहा जाता है कि हर साल गर्मियों में जब मैदानों में घास की कमी हो जाती थी तो वह गांव के पशु चराने के लिए जंगलों में ले जाता था। हर साल वह तीन महीनों तक इन्हीं जंगलों में रहता था। एक दिन जंगल में उस के कुछ पशु घास चरते आगे निकल गये उन को ढूंढते हुए वह इस गुफा तक पहुन्च गया। इस गुफा में उस ने एक साधु बाबा देखा जो अपनी साधना में लीन थे । अत: वह उसके सामने बैठ गया। कुछ देर के बाद साधु ने आंखें खोली उस गडिरये को देख कर मुस्कराए तथा अपनी धूनी में से कुछ कोयले

के टुक्ड़े उसे दिए और पुन: आंखें बन्द करके तपस्या में लीन हो गए। गड़िरये ने प्रसाद समझ कर कोयले के टुक्ड़े अपनी जेब में रख दिए और अपने ड़ेरे पर चला गया। वहां पहुन्चकर उसके आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा जब उस ने अपने घुम हुए पशुओं को देखा तथा उसकी जेब से कोयले के टुक्ड़ों के बदले सोने के टुक्ड़े मिले। धन्यवाद देने के लिए बूटा मलिक दूसरे दिन प्रात: ही वहां चला गया परन्तु वहां साधु के स्थान पर श्री अमर नाथ स्वामी का हिम लिंग विद्यमान था। बूटा मलिक द्वारा ही यह समाचार मछ भवन के विद्वान पण्ड़ितों तक पहुन्चा । अत: राजतरंगणी, ऋग्वेद तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित शिवजी के अमरेश्वर स्वरुप ज्योतिर्लिंग को देखने के लिए पंड़ितों तथा साधुओं का एक दल बूटा मलिक के साथ चल पड़ा । दुर्गम मार्गो को पार करते हुए जब वे वावजन के आगे गये तो यह देख कर हैरान हुए कि वहां कहीं भी कोई पेड़ पौधा दिखाई नहीं दिया। हर ओर भूतों पिशाचों तथा राक्षसों की दिल दहलाने वाली आवाज़ों से वे भयभीत हो कर वापिस जाने ही लगे थे कि उन्हें एक साधु बाबा मिले उस ने उन्हें एक छड़ी दी तथा साथ चलने को कहा। छड़ी लेते ही वह दिल दहलाने वाली आवाज़े बन्द हो गई। तथा वह साधु देखते ही देखते अन्र्तध्यान हो गये ।

चारों ओर मीलों तक बर्फ ही बर्फ के बीच में गुफा तथा उसके अन्दर बर्फ का शिवलिंग और कबूतरों के दर्शन करके वे अपने घरों को लौट गए। तभी से श्रद्धालुजन श्रद्धापूर्वक इस पवित्र शिव लिंग के दर्शन के लिए आने लगे। वह पवित्र छड़ी श्रीनगर के दशनामी अखाड़े के शिव मन्दिर में रखी जाती है तथा हर वर्ष यात्रा के आगे आगे महन्त जी वही पवित्र छड़ी लेकर यात्रियों की अगवानी करते है। यात्रा आरम्भ करते हुए यह पवित्र छड़ी हर तीर्थ स्थान पर लागों के दर्शन के लिए रखी जाती है। मार्तण्ड तीर्थ पर दो दिन के लिए इसे रखा जाता है । क्योंकि मार्तण्ड के पण्ड़ित ही श्री अमर नाथ जी के पुजारी माने जाते हैं। प्राचीन काल में यात्रियों के रहने ठहरने खाने पीने तथा यात्रा का सारा प्रबन्ध वही करते थे इसीलिए उन्हें पुरोहित की उपाधि दी गयी। श्री अमर नाथजी के चढ़ावे के तीन भागों में से एक भाग मार्तण्ड़ तीर्थ के नाम जाता था अन्य दो भाग साधुओं तथा मलिकों और गणेशबल के पण्ड़ितों के बीच में बांटा जाता था। परन्तु कुछ वर्ष पूर्व प्रदेश की राज्य सरकार के हस्ताक्षेप के कारण वह सारा चढ़ावा अब श्री अमर नाथ ट्रस्ट के नाम किया गया। आरम्भ में मलिक मार्ग की देख रेख करके यात्रियों की सहायता करते थे और गणेशबल के पण्ड़ित यात्रा सामग्री का प्रबन्ध करते थे,

तथा मार्तण्ड़ के पण्ड़ित पथ दर्शक बन कर यात्रियों की सुविधाओं तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए साथ साथ चलते हुए यात्रा करवाते थे।

महाराजा प्रताप सिंह के शासनकाल में पहलगाम से गुफा तक का नया मार्ग बनाया गया जो पिस्सूटाप से होते हुए शेषनाग तक है और पहले मार्गकी अपेक्षा बहुत ही आसान है। पहले चन्दनबाड़ी से दॉए ओर बर्फ के पुल को पार करने के बाद जंगलों के बीच में से मीलों बर्फ पर चलते हुए अति कठिन मार्गों से चलना पड़ता था। यहां तक कि घोड़ों पर यात्रा करने वालों को फिसलन होने के कारण कई मील पैदल चलना पड़ता था। परन्तु नया मार्ग पहाड़ों के दामन में बनाया गया। महाराजा प्रताप सिहं जी ने ही गणेश बल के पण्ड़ितों को एशमुकाम के समीप बसाया और उस स्थान का नाम गणेश पोरा रखा गया।

बीसवी शताब्दी में भारत सरकार तथा राज्य सरकार के मिले झुले प्रयासों के कारण अब यह यात्रा अति सरल हो गयी है। दूसरा मार्ग खोजने से तथा पहले मार्ग को चौड़ा और समय समय पर मुरम्मत करने के कारण अब हर वर्ष लाखों यात्री बाबा अमर नाथ जी के दर्शन करने आते हैं।

यात्रियों को निम्निलिखित जानकारी होना अति

आवश्यक हैं। अतः उन बातों का उल्लेख करना मैं उचित समझता हूं। श्री अमर नाथजी की यात्रा अति कठिन यात्रा होने के कारण कमज़ोर व्यक्तियों तथा बच्चों को पैदल सफर करना अनुचित होगा। उन्हें पालकी का प्रबन्ध यात्रा के प्रथम पड़ाव से ही करना ज़रुरी है। घोड़ों खच्चरों पिट्ठू इत्यादि का प्रबन्ध भी अपनी सुविधा अनुसार किया जा सकता हैं। श्री अमर नाथ जी की यात्रा के दो मार्ग है। एक पहलगाम से और दूसरा बालतल से । पहलगाम जाने के लिए श्रीनगर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती अपितु अनन्तनाग तथा मट्टन से होते हुए पहलगाम पहुन्चा जा सकता है। पहलगाम से गुफा 48 कि. मी. दूर है। बड़ा मार्ग होते हुए भी यह मार्ग छोटे मार्ग की तुलना में सुविधाजनक है और अधिकतर यात्री इसी मार्ग से यात्रा करते हैं।

छोटे मार्ग के लिए यात्रियों को श्रीनगर तथा सोनामर्ग से होते हुए यात्रा के आधार शिविर बालतल पहुन्चना पड़ता है। वहां से श्री अमर नाथजी की गुफा 12 कि. मी. दूर है उसमें समय कम लगता है परन्तु यात्रा बहुत कष्टप्रद है। बालतल से यात्रा एक दिन में पूरी हो जाती है। बालतल में एक छोटा सा बाज़ार है जहां यात्रा के लिए आवश्यक वस्तुएं मिल जाती हैं।

रात्रि विश्राम के लिए टेन्ट आदि की व्यवस्था सरकार की ओर से की जाती है। यहां से आगे की यात्रा पैदल घोड़े पर या पालकी में की जा सकती है। 6 कि.मी. की यात्रा के बाद बराड़ीमर्ग में यात्री पड़ाव डालते है। प्रकृति के सुन्दर दृश्य देख कर यात्री अपनी थकान भूल जाते है। बराड़ीमर्ग से 5 कि.मी. चलने पर निर्मल जल का एक झरना मिलता है। यहीं पर दोनों मार्ग अर्थात छोटे और बड़े मार्ग का संगम है। इसके बाद श्री अमरनाथ जी की गुफा की सीढ़ीनुमा चढ़ाई आरम्भ हो जाती है। नीचे से अमर गंगा नदी बहती है जो अमर नाथ गुफा के समीप से निकलती है। यहां यात्री स्नान करके पवित्र शिवलिंग का दर्शन करने जाते है।

श्री अमर नाथ जी की यात्रा जिन जिन पड़ावों से होते हुए की जाती है उन का वर्णन इस प्रकार है।

पहलगाम .....पहलगाम 7200 फीट की ऊंचाई पर लम्बोधरी नदी जिसे वर्तमानकाल में लिद्दर नदी के नाम से जाना जाता है के किनारे पर स्थित छोटा सा शहर है। वनों से घिरा हुआ यह स्थान बहुत ही मनमोहक और प्राकृतिक दृश्यो से परिपूर्ण हैं। यह स्थान संसार के सुन्दरतम शहरों में से एक माना जाता है। अधिक ठण्ड़ होने के कारण यहां बहुत कम लोग रहते हैं। परन्तु गर्मी के मोसम में यहां भीड़ लगी रहती

हैं भारत ही क्या पूरे संसार से पर्यटक लाखों की गिनती में यहां हर साल आते हैं। श्रीनगर से यह स्थान 96 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस स्थान को श्री अमर नाथ जी का पहला पड़ाव माना जाता है। क्योंकि यहां तक रेल गाड़ी के सिवा यातायात के सभी साधन उपलब्ध हैं परन्तु इस के आगे का सफ़र पैदल घोड़े या ड़ाण्ड़ी पर किया जा सकता है। अब यात्रा के दिनों में यदि मौसम साफ हो तो जीपों और कारों को भी चन्दनबाड़ी तक जाने की इजाज़त दी जाती है। जो पहलगाम से 16 कि.मी. दूर है।

चन्दनबाड़ी .... चन्दनबाड़ी इस यात्रा का दूसरा पड़ाव है यह स्थान पहलगाम से 16 कि.मी. की दूरी पर है। पूरा मार्ग प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण है । चन्दनबाड़ी 8500 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। भोजन आदि का सभी सामान यहां मिल जाता है। इसके आगे की यात्रा अति कठिन है जो लिद्दर नदी के किनारे किनारे चलती है। इस पड़ाव से आगे बढ़ने पर बर्फ का एक पुल दिखाई देता है जिस के नीचे से लिद्दर नदी का पानी बहता है। इस के आगे जाने पर अत्यंत ऊंची चढ़ाई वाली घाटी आती है जिसे पिस्सू घाटी के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि एक बार भोले नाथ जी के दर्शन के लिए देवता और राक्षस साथ साथ पिस्सू

घाटी चढ़ रहे थे। दोनों ही पहले पहुंचना चाहते थे मार्ग संकरा था। दोनों में युद्ध हो गया । देवताओं ने भोले शंकर को याद किया और उन की कृपा से उन्होंने राक्षसों को मार कर चूर्ण बना कर घाटी में बिखेर दिया। वहां अस्थियों का ढ़ेर लग गया । वहीं ढ़ेर पर्वत के रुप में यात्रियों द्धारा पार करने पर भक्तजनों का पाप ताप और शोक हरता है।

शेषनाग .... यह स्थान चन्दनबाड़ी से 13 कि.मी. दूर है। तथा इस यात्रा का तीसरा पड़ाव माना जाता है। इस स्थान को वावजन भी कहा जाता है क्योंकि यहां ठण्ड़ी हवाएं चलती है। सात शिखरों का पर्वत तथा 4 .5 कि.मी. नीचे शेषनाग झील यात्रियों को प्रफुल्लित कर देती हैं। यात्री यहां स्नान करके गंगा स्नान जैसा पुण्य प्राप्त करते है। परन्तु अधिक नीचे होने के कारण अधिकांश यात्री पर्वत के ऊपर से ही इस झील के दर्शन करके आत्मविभोर हो उठते है। यह स्थान समुद्रतल से 11730 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां एक ड़ाक बंगला भी है। परन्तु यात्रा के दिनों अधिक भीड़ होने के कारण हर यात्री को पहले ही पड़ाव से तम्बू की व्यवस्था करके रखना उचित रहता है।

शेषनाग से आगे चलते ही महागुणस पर्वत की कठिन

चढ़ाई आरम्भ हो जाती है। यह पर्वत 14800 फुट की ऊंचाई पर है। आसपास हिम नदियां नाले और झरने बहते हुए मिलते हैं। परन्तु कहीं कोई पेड़ पौधा नज़र नहीं आता है। महागुणस टाप पर पहुंच कर यात्रियों को सकून प्राप्त होता है। इसके आगे ढलान आरम्भ हो जाती है जो पोशपथरी नामक मैदान से होकर गुज़रती है। यहां थोडी सी घास उगी हुई दिखाई देती है इस घास में छोटे छोटे फूल भी खिलते है जिन की सुगन्ध से नींद आने लगती है। आगे जा कर पांच नदियों को पार करके पंचतरणी नामक पड़ाव आता है।

पंचतरणी .... पंचतरणी शेषनाग से 13 कि.मी. की दूरी पर भैरव पर्वत के दामन में स्थित एक मनमोहक स्थान है। जो समुद्रतल से 12000 फुट ऊंचा है। यह स्थान बर्फ से ढ़का रहता है। तथा यहां भी तेज़ सर्द हवाएं चलती रहती है जिस के कारण त्वचा फटने लगती है अत: इस से बचने के लिए यात्रियों को शरीर के खुले भागों पर वेसलीन लगाना चाहिए। कई लोगों को ऊंचाई पर आक्सीजन की कमी के कारण मिचली आने लगती है। उन्हें कुछ खट्‌टी चीज़े मुंह में रखनी चाहिए जिस से आराम मिलता हैं। भैरव पर्वत पर दूर से ही ॐ आकार की चटान देखी जा सकती है परन्तु समीप आने पर त्रिशूल के आकार में पीरवर्तित हो जाता

है। प्राचीन काल में श्री अमर नाथ जी का दर्शन करने के बाद यात्री भैरव का दर्शन करने इस पर्वत पर जाते थे । परन्तु कुछ साधु भोले नाथ शिव शंकर के चमत्कारी शिवलिंग देख कर इतने भावुक हो जाते थे कि मोक्ष पाने की लालसा से भैरव पर्वत से कूद कर अपना देह शिवजी के प्रांगण में त्याग देते थे अत: सरकार ने भैरव पर्वत का मार्ग ही बन्द कर दिया। अब किसी को वहां जाने की आज्ञा नहीं दी जाती है।

श्री अमर नाथ जी की गुफा पंचतरणी से 6 कि.मी. की दूरी पर है। वहां कोई ठहरने का स्थान नहीं है। अत: यात्रियों को पंचतरणी में ही रात्रि विश्राम करना पड़ता हैं। अगले दिन प्रात: ही खाने पीने की सामग्री साथ लेकर यात्री पवित्र गुफा के लिए चल पड़ते हैं तीन कि.मी. की चढ़ाई के बाद मार्ग से ही गुफा दिखाई देती है जिस के कारण यात्री बहुंत हल्का अनुभव करते हैं। अमरावती में स्नान करने के पश्चात यात्री दर्शन करने चले जाते हैं। स्वनिर्मित पवित्र लिंग के दर्शन तथा पूजन कर यात्री शीघ्र ही गुफा से बाहर आ जाते है। अधिक भीड़ होने के कारण ही शीघ्रता करनी पड़ती है। अत: पूरी यात्रा करने के बाद यात्री पंचतरणी लौट आते हैं। वापसी पर यात्री केवल दो दिनों में ही पहलगाम पहुंच जाते है क्योंकि महागुनस तक ही चढ़ाई है शेष मार्ग ढ़लाई है।

श्री अमर नाथजी की यात्रा श्रद्धा विश्वास और निष्ठापूर्वक करने से धर्म अर्थ काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। अमर नाथ की यात्रा पूरी होने के बाद मार्तण्ड़ तीर्थ पर स्नान करके मनोवांछित फल प्राप्त होते है। प्राचीनकाल में सारे यात्री वहां जा कर श्री अमर नाथ जी के पुजारी तथा अपने पुरोहित के पास यात्रा पर आने का विवरण नोट करवाते । वहां पर भारत के हर क्षेत्र का अलग अलग पुरोहित है तथा उनके पास हर क्षेत्र से आये हुए यात्रियों का सैंकड़ों वर्ष पुराना रिकाड़ सुरक्षित है। तथा हर क्षेत्र के यात्री उनके पास अपनी वंशावली देख सकते है।

प्राचीनकाल में यात्री मार्तण्ड़ से ही यात्रा आरम्भ करते थे और उनका पुरोहित यात्रा का सारा प्रबन्ध करता था। परन्तु आजकल पहलगाम में सरकार की ओर से सारा प्रबन्ध होता है । फिर भी बहुत से यात्री अपने पूर्वजों की तरहं ही इसी स्थान से यात्रा आरम्भ करते हैं।

श्री अमर नाथ जी की यात्रा करने वाले यात्रियों को कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना अति आवश्यक है। यात्रा में निकलने से पूर्व यात्रा फार्म भरना तथा ड़ाक्टर से शरीरिक जांच करवा कर प्रमाणपत्र प्राप्त करके यात्रा अधिकारी को सौंप दे। इसके बिना यात्रा असम्भव है। यह फार्म हर बड़े शहर में पर्यटन केन्द्रों

से प्राप्त किये जा सकते हैं। जम्मू में भी पंजीकरण की जा सकती हैं ।

यात्रियों को अपने खान पान भोजनादि तथा चिकित्सा का ध्यान रखना चाहिए। इस यात्रा में एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव के बीच में कहीं कोई स्थायी आवास नहीं है अतः वर्षा व सर्दी से बचने के लिए गर्म कपड़े बरसाती वाटर प्रूफ कपड़े अवश्य साथ ले जाने चाहिए। महिलाओं के लिए ट्रेक सूट या सिलवार कमीज़ पहनना ठीक है। बिस्कुट दूध पौड़र पानी की बोतल तथा खाने का सामान साथ ले । स्वयं सामान ले कर यात्रा करने में असुविधा हो सकती है इसलिए पहलगाम से ही लाइसेंस धारी प्रमाणित टोकन वाले घोड़े वालों को ही साथ ले तथा यात्रा अधिकारियों से सर्म्पक करने के बाद ही उन को साथ ले । सामान ढ़ोने वाले मज़दूर को या घोड़े को अपने साथ ही रखे । उनके आगे या पीछे रहने से असुविधा हो सकती है। उन का नाम पता और नम्बर पहले ही नोट करके रखे। सरकार द्वारा यात्रा के लिए बनाये गए नियमों का पालन करे। आवश्यकता पड़ने पर सरकार द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए

विभिन्न विभागों के यात्रा अधिकारियों से सम्पर्क करे । आप नि:शुल्क उन की सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं । परन्तु ध्यान रखे आप यात्रा के नियमों को न तोड़े और तंग मार्गों पर एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश न करे। नशापान न करे तथा चेतावनी वाले स्थानों पर विश्राम न करे । इन सभी बातों को ध्यान में रख कर यदि यात्रा की जाएं तो यह कठिन यात्रा निष्कंटक हो जाती हैं ।

इस यात्रा में हिन्दु मुस्लिम एकता स्पष्ट दिखाई देता है। हिन्दु और मुस्लमान मिलकर यात्रियों की देखभाल करते है और दिन रात हर पड़ाव पर उनकी कठिनाइयों को दूर करने के लिए तत्पर रहते है। उनके ही प्रयासों के कारण हर वर्ष यात्रियों में वृद्धि हो रही है।

कश्मीर की परंपरा मुख्य रूप से शैवों और शाक्तों की परंपरा है। महाभारत से कुछ वर्ष पहले श्री कृष्ण ने स्वयं कश्मीर आकर कश्मीर के स्वर्गीय राजा दामोदर की विधवा और गर्भवती पत्नी यशोवती का राज्याभिषेक करते हुए कहा था:-

कश्मीरा: पार्वती राजाज्ञेयो हरांशज:
नावज्ञेय: स दुष्टोऽपि विदुशा भूतिमिच्छता।

अर्थात कश्मीर भूमि साक्षात पार्वती है। इस भूमि को शिव का अंाश समझना चाहिए। यदि यहां का राजा दुष्ट भी हो तो भी ऐश्वर्य चाहने वाले बुद्धिमान को कभी भी उस का विरोध नहीं करना चाहिए। (राजतरंगणी; कल्हण; तरंग -1072) शिवजी की इस धरती पर शिवजी की कृपा और चमत्कार कई बार देखने को मिलते है सतारहवीं शताब्दी में अली मर्दान खान मुगुल दरबार की ओर से कश्मीर का प्रबन्धक नियुक्त हुए। शालामार बाग के आस पास रात के समय चहलकदमी कर रहे थे कि उन्हे एक विचित्र दृश्य देखने को मिला। जो उन्होंने एक फार्सी कविता के रुप में इस प्रकार लिखी:-

'हुमा असली महेश्वर बूद शबशाहे कि मन दीदम
गज़न्फर चर्म दर बरबूद शबशाहेकि मन दीदम।
ज़ि बस्मश जाम-ए-बर तनजुनारश मार बर गर्दन
रवानश गंग बर सर बूद शबशाहे कि मन दीदम।
सेहचश्मश बर जबीन दारद ज़ि मेहरो माह रोशन तर
सेह कारण दस्त बस्तह बूद शबशाहे कि मन दीदम ।

अर्थात मैंने रात को एक ऐसा व्यक्ति देखा जो साधु के भेस में था उस के माथे पर चन्द्रमा तथा जटाओं से पानी की धारा बह रही थी यज्ञोपवीत के बदले गले में साँप थे शायद वह भगवान महेश्वर थे । अली मर्दान ने

कविता में जो रुप वर्णन किया है वह भगवान शिवजी का ही है । इस कविता से इस बात का संकेत अवश्य मिलता है कि अली मर्दान खान रसखान और जायसी की भांति साधक थे और हिन्दू धर्म तथा देवमाला से भली भांति परिचित थे। साथ ही इस रहस्य की ओर भी संकेत देती है कि भगवान शिव किसी पर भी अनुग्रह कर सकते है उस में धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं होता । भगवान चाहे तो किसी की नैया बिना पूछे पार लगा सकते है और किसी भाग्यहीन के लाख हाथ पांव मारने पर भी कुछ हाथ नही लगता।

✦ ✦ ✦ ✦

संदर्भः-

1. राजतरंगणी ; कल्हणतरंगः- 1;2
श्लोक -138 ;267 ;1072 ।

2. शिवपुराण ।
अमरेश्वर महात्म्य ।

4. विन्ज तथा इनिस द्वारा लिखी
पुस्तिकाएं ।

5. एम. ऐ. स्टेन द्वारा अनुवाद की
हुई राजतरंगणी - वाल्यूम -2
पुस्तक 2 पृ. 68 पुस्तक-1
; पृ0-40 ;41

द वेली आफ कश्मीर -
लारेन्स ।

सहज़् कोसम - श्री मस्तबब
आश्रम जम्मू ।

संदर्भ सूची :-

राजतरंगणी कल्हण ।

द वेली आफ कश्मीर लारेन्स

नीलमत पुराण

मय फ्रोज़िन टरबुलेंस इन कश्मीरश्री जगमोहन ।

कश्मीर अवेकिज़- बी. एल.शर्मा ।

मार्तण्ड़ महामात्य ।

राजतरंगणी - एम. ऐ. स्टेन । 1; 2 ।

नीलमत पुराण- ड़ा0 वेद कुमारी ।1; 2

वायु पुराण ।

महाभारत ।

ज्ञान प्रकाश-मर्कन्टाइल प्रैस श्रीनगर ।

स्हज़ कोसम - मस्त बब ट्रस्ट जम्मू ।

मार्तण्ड़ ब्राह्मण ।

मार्तण्ड़ पंचांग ।

विजेश्वर पंचांग ।

आईन-ए-अकबरी ।

इण्ड़ियन आरकालोजी प्रो0 भुलरिज़ इनट्राड़क्शन ।

अमरेश्वर महामात्य ।

विन्ज और इनिस की पुस्तिकाएं ।

विक्रमा का देव चरित्र- प्रो0 भुलर ।

21 श्री रूपभवानी रहस्योपदेश-

ड़ा0 त्रिलोकी नाथ गंजू।

✐मिथक नन्दिकेश्वर - ड़ा0 अग्निशेखर।

✐प्रकाश-विजयेश्वर पंचांग कार्यालय जम्मू।

✐भवानीनाम सहस्त्र - स्तुति।

✐राजतरंगणी - अनुवाद रंजीत सीताराम पंड़ित।

✐विविध प्रसंग- निबंध संग्रह तथा लेख श्री एम0 एन0 काक द्वारा लिखित।

✐समाचार-पत्र :-

पंजाब केसरी ;अमर उजाला;स्टेट टाईमज़ इत्यादि।

✦ ✦ ✦ ✦





Written by :
Hari Krishen Sidha
H.No. 122, Vasuki Vihar,
Paloura, Jammu.
Mob. : 9469050583

Durga Printing Press,
Opp. Mast Bab Ashram, Patoli Chowk,
Jammu # 9419124691